## रस-रसायन योग

## लौह-मण्डूर

नोट—मूल द्रव्यों के दाम में घटती-बढ़ती होने के कारण दवाओं का दाम भी घटता-बढ़ता रहता है। अतः मूल्य के लिये चालू सूचीपत्र या पञ्चाङ्ग को ही ठीक समझें।

# इस पुस्तक की उपयोगिता

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में भस्म निर्माण की विधियाँ और रसों के नुस्खे इतने अधिक हैं कि इस विषय के पूरे जानकार के लिये भी कठिनाई पैदा हो जाती है। नये वैद्य के लिये तो बड़ी कठिन समस्या पैदा हो जाती है कि किन विधियों से भस्म बनाने से वह उत्तम होगी? कौन-कौन सा रस बना कर पास में रखना चाहिये? इन समस्याओं का समाधान इस पुस्तक द्वारा भली भांति हो गया है। यही इस पुस्तक की खास उपयोगिता है।

दवा बेचने वाले दूकानदार के लिये यह जानना बहुत ही कठिन है कि कौनसे आयुर्वेदीय रस की खपत ज्यादा है। इसलिये इस पुस्तक में अक्सर काम में आने वाले रसों के विषय में ही लिखा गया है। नये वैद्यराजों को भी चिकित्सा मे विशेष उपकार इन रसों का ज्ञान रहने से होगा।

प्राचीन ग्रन्थों में रोचक, भयानक और यथार्थ, तीन तरह के वाक्य हैं। महासमुद्र में मोती के स्थान का पता लगाने के समान कठिन काम यह भी है कि अमुक भस्म या रस के यथार्थ गुण क्या हैं? इस पुस्तक में रस-भस्मों के यथार्थ गुण लिखे गये हैं। सर्व साधारण को समझाने के लिये बहुत ही सरल भाषा मे नयी शैली से रस-भस्मों के फायदे बतलाये गये हैं।

भस्म या रस की सेवन विधि जानना बहुत जरूरी है। इसके बिना दवा सेवन से पूरा-पूरा फायदा नहीं होता। 'एक ही रस या भस्म अनुपान भेद से कई रोगों को नष्ट करती है। जैसे तेल की एक ही बूंद जल में चारों तरफ फैल जाती है, वैसे ही अनुपान के बल से दवा भी सम्पूर्ण शरीर में शीघ्र ही फैल जाती है। इसी तरह का अनुपान, मात्रा और गुण जानने के लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

सर्वसाधारण जनता में रस-भस्मों के प्रति कई तरह की गलतफहमियाँ फैली हुई हैं। जैसे—मकरध्वज नाड़ी छूटने पर ही दिया जाता है, कम उमर में रस-भस्में न खानी चाहियें—आदि। इन सब गलत धारणाओं को मिटाने में यह पुस्तक सहायक होगी।

दवा बेचने वाले पंसारी या दूकानदार जो रस-भस्म बेचते हैं, वे सब खरीददार को दवा की सेवन विधि नहीं बतला सकते। यह भी नहीं बतला सकते कि इससे यह फायदा होगा—ऐसी हालत में असली दवा से भी रोग नष्ट नहीं होता। जब रोग नष्ट नहीं होता, तब कहा जाता है कि आयुर्वेद की दवा फायदा नहीं करती। इस पुस्तक से दवा बेचने वाला दूकानदार लोगों का पूर्ण उपकार कर सकेगा—ऐसा हमारा विश्वास है।

रस-भस्मों के मूल्य में भी बड़ी भारी गड़बड़ी है। बम्बई प्रान्त के आयुर्वेदीय दवा बनाने वाले रस-भस्म इतने अधिक दाम में बेचते हैं कि धनी आदमी ही उन चीजों को खरीद सकता है। पंजाब और यू० पी० के बहुत से सज्जन इतनी सस्ती भस्म बेचते हैं कि वह साफ-साफ नकली साबित होजाती है। हमने मण्डूर से लेकर स्वर्ण भस्म तक का यथार्थ मूल्य रखा है। सुलभ मूल्य में लोगों को बढ़िया से बढ़िया भस्म या रस कैसे मिले, यह जानकारी इस पुस्तक द्वारा होगी। पुस्तक योग्याधिकारी द्वारा लिखी गई है। मैंने खुद परिश्रम के साथ लिखी पुस्तक के एक एक शब्द को देखा है। सर्वसाधारण जनता का और वैद्य-बन्धुओं का कुछ भी उपकार इसके द्वारा हुआ तो मैं अपने आपको बहुत ही धन्य समझूंगा।

वैद्यराज पं० रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्री।

# रस-भस्मों की श्रेष्ठता

रस :— "अल्प मात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः ।
क्षिप्रमारोग्यदायित्वादौषधिभ्योऽधिकोरसः ॥"

इस श्लोक में रस को तीन कारणों से श्रेष्ठ बतलाया गया है ।

१—कम खुराक—काढ़ा, चूर्ण, चटनी आदि कम मात्रा में देने से रोग में पूरा फायदा नहीं होता । काढ़ा आदि १ छटाँक से दो छटाँक तक देने से पूरा फायदा होता है, लेकिन रस की एक-दो रत्ती की खुराक से ही पूरा फायदा होता है ।

२—अरुचि का न होना—बहुतसी अन्य दवाओं में गुण होते हुये भी स्वाद अच्छा नहीं होता, जिसको रोगी पीना नहीं चाहता । जैसे-तैसे पिलाने पर उल्टी तक हो जाती है । लेकिन रस में यह दोष नहीं है, छोटीसी गोली के लेने में अमीर स्वभाव के रोगी को भी अरुचि नहीं होती ।

३—रोग का शीघ्र नष्ट होना—रस अपना चमत्कार १-२ घंटा में ही दिखला देता है । हमारा तो पक्का विश्वास है कि डाक्टरी के इस जमाने में यदि रस-चिकित्सा न होती तो वैद्यक उठ गया होता । इस चिकित्सा का ही प्रभाव है कि वैद्यसमाज डाक्टरों के छोड़े हुये लाइलाज रोगियों को भी अच्छा करता है । मन्दाग्नि में रोगी को पर्पटी के प्रभाव से रोजाना १०-१२ सेर दूध आसानी से पिला दिया जाता है । पर्पटी खाने वाले रोगी को २० सेर पक्का दूध रोजाना पीते देखने का तो हमारा अपना अनुभव है । इस प्रकार ऊपर लिखी तीन दलीलों से रस औषधि की श्रेष्ठता प्रगट होती है ।

आयुर्वेद शास्त्र में कहा गया है कि "उत्तमोरसवैद्यस्तु मध्यमो मूलकादिभिः" अर्थात् रस औषधियों द्वारा चिकित्सा करने वाला वैद्य उत्तम तथा काष्ठादिक दवा से चिकित्सा करने वाला वैद्य मध्यम माना जाता है ।

प्रत्येक वैद्य को मालूम है कि पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से बनाये गये रस और कूपीपक्व रसायन जिसके पास पर्याप्त मात्रा में रहते हैं, वह बिना संदेह के रोगों को नष्ट करने में समर्थ होता है । खुद वैद्य का आत्मविश्वास बहुत ही बढ़ जाता है ।

हमारे यहां सभी रस और रसायन षड्गुणबलिजारित हिंगुलोत्थ पारद से बनाये जाते हैं । कोई भी सज्जन हमारे यहां आकर इसे देख सकते हैं । साधारण

पारद से बनाये गये ग्र्यं·-से हिंगुलोत्थ पारद से बने रस उत्तम होते हैं, षड्गुणबलि-जारित पारद से बने हुये रस तो सर्वश्रेष्ठ होते ही हैं। सर्वश्रेष्ठ रीति से ही हमारे रस और रसायन बनते हैं। रस और रसायनों में भस्में बहुत पड़ती हैं, जिनके विषय में ऊपर लिखा जा चुका है। जिन काष्ठ. औषधियों के स्वरस या काढ़े की भावना रसों में दी जाती है वे सब परिपक्व, पुष्ट और दोषरहित ही व्यवहार में लाई जाती हैं। काष्ठ औषधियां भी सर्वोत्तम डाली जाती हैं। रस तैयार करने वाले कर्मचारी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखते हैं। हम यह तो नहीं कहते कि हिन्दुस्तान भर में हम ही सर्वोत्तम रस बनाते हैं, लेकिन यह दावा करने का हमको हक है कि हम सर्वाङ्गपूर्ण रस तैयार करते हैं—जैसा कि बहुत कम जगह होता है। हमारे रसों की हिन्दुस्तान भर से बेहद मांग का होना इसका प्रबल प्रमाण है।

**भस्म**—आयुर्वेद शास्त्र में भस्मों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रान्तों में तो काढ़ा आदि काष्ठ दवाओं की तरह भस्मों का व्यवहार मामूली रोगों में होता है। जुकाम, सर्दी लगने पर बनप्सा की तरह अभ्रक भस्म दी जाती है जिससे रोगी जल्दी अच्छा हो जाता है। हमारा अपना तुजुर्बा है कि बिना भस्म और रसों के देशी इलाज अधूरा ही रह जाता है। काष्ठादि दवा के साथ रस या भस्म का प्रयोग, बहुत ही चमत्कारी फल दिखाता है। पांडु, संग्रहणी, शोथ, खून की कमी आदि में लोह या मण्डूर भस्म देना बहुत ही जरूरी है। राजयक्ष्मा में सोना भस्म के सिवा दूसरी किस दवा में इतनी ताकत है जो फायदा दिखाये? मोती या प्रवाल के समान दिल को मजबूत करने वाली कौनसी दवा है? प्रमेह और धातुपुष्टि के लिये बंग भस्म से अच्छी कोई दवा नहीं है। इसी तरह सभी भस्में रामबाण की तरह अचूक फायदा दिखलाती हैं। रस और भस्म आयुर्वेद के इन्जेक्शन हैं। विधिपूर्वक बनाई गई भस्म और सर्वाङ्गपूर्ण रस उचित अनुपान के साथ रोग को पहिचान कर दिये जाएँ तो इन्जेक्शन से भी जल्दी असर करते हैं। रोगी से अधिक धन ऐंठने की इच्छा से भी चिकित्सक इन्जेक्शन देते हैं। आयुर्वेद का जन्म लोक-कल्याण के लिये हुआ है और इसी आधार पर जीवित है। रोगी को नीरोग करने में (रुपया ऐंठने में नहीं) श्रेष्ठ रस-भस्में इन्जेक्शनों का मुकाबला कर सकती हैं, इसमें रंचमात्र भी सन्देह नहीं है।

*मिथ्या प्रचार*—लोगों में यह झूठा भ्रम फैल गया है कि "कम उमर में भस्म न खानी चाहिये, भस्म खाने पर रोगी अच्छा तो हो जाता है, लेकिन जब फिर बीमार होता है तो भस्म ही खाने से अच्छा होता है, भस्में फूट निकलती हैं—इत्यादि।" ये बातें सोलह आने झूठी हैं। केला, सेब आदि फलों में लोहा आदि धातु पाये जाते हैं। रोज के खाद्य पदार्थों में भी बहुत ही धातुएँ मिली हुई हैं। इस तरह वर्तमान विज्ञान द्वारा यह बात झूठी साबित हो जाती है कि धातुएँ नुकसान करती हैं। डाक्टरी में सोना, चाँदी, लोहा, ताम्बा आदि धातुओं का दवा के रूप में प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है, हकीमी इलाज में भी धातु-भस्मों (कुश्तों) का प्रयोग बहुत होता है। प्राचीन संहिताओं में बालक के जन्मते ही सोना खिलाना लिखा गया है। अनुभव से व शास्त्र के प्रमाण से यह साफ है कि धातु-भस्में हर उमर में देने से लाभ करती हैं, जरा भी नुकसान नहीं करतीं। भस्मों के विषय में लोग शंका करते हैं, लेकिन यही चीजें जब डाक्टरी दवा के रूप में खाते हैं, तो कोई विरोध नहीं होता। यह बड़े दुःख की बात है कि लोग घरेलू चीजों का सम्मान नहीं करते। भस्मों के विषय में दरअसल में विचार करने लायक बात पर लोग ध्यान ही नहीं देते। हम यह विचारणीय बात आपको बतला रहे हैं, जिस पर हरएक शिक्षित भाई को विचार करना चाहिये।

*असंख्य भस्में*—अनपढ़, धूर्त और अनधिकारी द्वारा बनाई गई अशुद्ध, कच्ची और संदिग्ध भस्में खाने से नुकसान होता है, ऐसा आयुर्वेद में लिखा गया है। अशुद्ध और कच्ची भस्म बुढ़ापे में भी नुकसान करती हैं और कम उमर में भी। हिन्दुस्तान के सभी प्रान्तों में भस्म बनाने के काम को बपौती समझने वाले ऐसे कुछ अनपढ़ और धूर्त लोग हैं, जो वैद्य और पंसारियों को ठगते हैं। लोह और अभ्रक भस्म ४)-५) रुपये सेर में बेचते हैं। जो वैद्य इन पंसारियों से ऐसी भस्में, रोगियों के लिये लेते हैं, उनको तो महामूर्ख ही समझिये। क्योंकि ऐसी भस्मों की जगह तो गेरू आदि भी दी जा सकती हैं। दवा बेचने के लिये ऐसी भस्में खरीदना सब से बड़ा नीच कर्म है। असली भस्म के देने से रोगी के प्राण बच सकते हैं, उस जगह फेंकने लायक चीजें बेचना एक तरह से मनुष्य-हत्या के बराबर है। नवीनतावादी भी विज्ञान का नाम लेकर खराब भस्में बनाकर बेचते हैं। कल-

कत्ते जैसे बहुत बड़े शहर में जङ्गली कण्डों का मिलना बिल्कुल मुश्किल है। हाथ से बने उपलों का मिलना भी कठिन है। क्योंकि बंगाल में बारहों महीने वर्षा पड़ती है। अतः कलकत्ते के बहुत से लोग पत्थर के कोयलों से भस्म बनाते हैं। डाक्टरी दवा बनाने वाले भी धन कमाने की इच्छा से भस्म बनाकर बेचने लगे हैं। ये लोग तेजाब (Acid) से भी भस्म बनाते हैं। पत्थर के कोयले और तेजाब से बनी हुई भस्में कैसी होंगी, यह तो सभी समझ सकते हैं। पत्थर के कोयलों से बनाया गया भोजन गुण और स्वाद में घटिया होता है, तब धातु भस्में तो पत्थर के कोयलों की तीक्ष्ण अग्नि से निश्चय ही विकृत हो जाती हैं। ये लोग आयुर्वेद पर विश्वास नहीं करते। अपनी दवा बेचने के लिये आयुर्वेद का नाम लेते हैं, नहीं तो जनता उनकी भस्में कैसे खरीदे? हमको लकीर का फकीर कहा जाय—इसकी कुछ परवाह नहीं है। हम प्राचीन भस्म निर्माण पद्धति को हृदय से कल्याणकर मानते हैं और प्राचीन पद्धति से ही भस्में बनाते हैं।

## भस्म बनाने का हमारा प्रबन्ध

देहली से १०८ माइल दक्षिण-पश्चिम कुँआली नाम का गाँव है, जो कलकत्ता से १०१० माइल दूर पड़ता है। बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के मालिकों का जन्म स्थान यही गाँव है। गाँव का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन लगभग २५ माइल है, इस स्टेशन पर भी पत्थर के कोयले बिकते नहीं हैं। यहाँ जलावन का सामान भी मोल नहीं बिकता। हमारी तरफ से खुला ऐलान किया गया है कि जहाँ हमारी भस्में बनती हैं, उस स्थान से २० कोस के भीतर कोई १ मन पत्थर का कोयला भी साबित कर दे तो उसे ५००) रुपया इनाम दिया जायगा। इसलिये हमारे यहाँ भस्में पत्थर के कोयलों से या बिजली से बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। हमारी रसायनशाला में १८ गजपुट और ८ कूपीपक्व रसायनों की भट्ठियाँ बराबर चालू रहती हैं। मालिकों की बनाई हुई विशाल धर्मशाला की बगल में बहुत बड़ी रसायनशाला है। रसायनशाला में ही धर्मार्थ औषधालय भी है।

बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के सब से बड़े मालिक पं० रामकृष्णजी जोशी सदैव इस रसायनशाला की देखभाल करते हैं। आयुर्वेदाचार्य पं० नारायणदत्त शास्त्री विभाग के अध्यक्ष हैं, जो भस्म और कूपीपक्व रसायन बनाने में प्रसिद्ध और विशेषज्ञ

हैं। इस जगह मकान भाड़ा नहीं लगता, गोमूत्र, घृतकुमारी, अर्कक्षीर आदि की कीमत नहीं लगती, मजूरी बहुत सस्ती है, जंगली कण्डे ( वन्योपल, जंगली गोइंठा) ) हजारों मन विना कीमत के मिलते हैं। सिर्फ जंगल से मंगाने की मजदूरी लगती है। जंगली उपलों से ही भस्म सर्वश्रेष्ठ बनती हैं। किन्तु ऊपर लिखी तमाम सुविधायें एक जगह मिलना बहुत मुश्किल काम है। परमात्मा की कृपा से भस्म और कूपीपक्व रसायन वनाने की सभी सहूलियतें हमको अपने आप मिल गयी हैं। इन सहूलियतों के कारण बहुत ही कम खर्च में सभी भस्में उत्तम से उत्तम तैयार होती हैं। इस रसायनशाला में एक साल के अन्दर ही लोह, मण्डूर और अभ्रक आदि भस्में ८-८, १०-१० मन से ज्यादे तैयार होती हैं। मनों की तादाद में बनने के कारण भस्में पुरानी होकर विकती हैं। यह तो सभी जानते हैं कि भस्में जितनी पुरानी होंगी उतनी ही फायदेमन्द होंगी। जो लोग सेर, आध-सेर भस्म तैयार करते हैं, वे लोग भस्मों को किस तरह पुरानी कर सकते हैं। इस तरह बनी हुई भस्में कलकत्ता, पटना, झाँसी, नागपुर और ब्यावर भेज दी जाती हैं, जहाँ शीशियों में पैक करके ऊपर से शिवलिंग ट्रेडमार्क लगाकर एजेन्टों के पास विक्री के लिये भेज दी जाती हैं। पैकिंग इस ढङ्ग से की जाती है कि वेचने वाला किसी तरह से कपट या जाल नहीं कर सके। कीमती भस्मों की एक आना भर तक छोटी पैकिंग बनाई गई हैं, जो जरूरत के मुताबिक कम दाम में खरीदी जा सकती हैं। चवन्नी भर भस्म की आवश्यकता के लिये एक तोला की शीशी खरी-दने की जरूरत नहीं है। हमारी दवा बेचने वाले सभी एजेन्ट सूचीपत्र के दामों में ही भस्म और रस आपको विक्री करेंगे तथा किसी तरह का खर्च आदि नहीं लेंगे। बहुत से वैद्य और ग्राहक पूछा करते हैं कि आपके यहां की रस-भस्में इतनी सस्ती क्यों हैं? इस सवाल का जवाब ऊपर दे दिया गया है। कुछ दवा बनानेवाले हमसे भी सस्ती दर में रस-भस्में बेचते हुये देखे जाते हैं, वे किस तरह बेचते हैं? यह विचार करने लायक विषय है। हम लोग बहुत ही कम खर्च में उत्तम चीज बनाने का इन्तजाम किये हुये हैं और कम से कम नफा से सभी दवाइयां वेचते हैं। १४५००००) की सालाना विक्री में ३०-४० हजार से अधिक मुनाफा नहीं होता। ऐसी हालत में और लोग यथार्थ चीज न देकर ही रस-भस्में हमारी दर से सस्ती बेच सकते हैं। रंग-रूप से तो रस-

भस्मों का पहचानना असम्भव है, इसलिये रस-भस्मों को खरीदते समय यही ख्याल रखना होगा कि जिस कारखाने की रस-भस्में खरीद रहे हैं वह पूर्ण विश्वासी है या नहीं ? सिवा विश्वास के और उपाय व्यर्थ हैं।

## रस-भस्मों के स्टाक की आवश्यकता

दवा बेचने वाले दूकानदार और वैद्यों के पास रस-भस्मों का बहुत बड़ा स्टाक सदैव रहना चाहिये। क्या मालूम कौनसी दवा की जरूरत किस समय हो जाय ? जरूरत के समय यदि रोगी को रोग के अनुकूल दवा न मिले तो मृत्यु तक हो जाती है। हमारे यहां पत्र लिखकर दवा मंगाने और मिलने तक तो रोगी को कुछ का कुछ हो सकता है। इसलिये हर रोग को एक या दो रस और सभी भस्में स्टाक में रखनी जरूरी हैं। जिस वैद्य या दवा बेचने वाले के पास रस-भस्मों का पूरा संग्रह न हो, उसे बिना हथियार वाला सिपाही समझना चाहिये। जैसे बहुत ही होशियार और ऊँचे दर्जे का वीर सिपाही भी बिना अच्छे हथियारों के दुश्मन का नाश नहीं कर सकता, वैसे ही ऊँचे दर्जे के रस-भस्मों के बिना वैद्य या औषधि विक्रेता रोगों को नष्ट नहीं कर सकता। टैंक या मशीनगन के जोर से एक आदमी ही हजारों शत्रुओं को मार भगाता है। इसी तरह बढ़िया दवाओं के बल से रोग भी मार भगाये जा सकते हैं। बहुत से वैद्य और दूकानदार बाहरी तड़क-भड़क में तो बहुत खर्च कर डालते हैं, लेकिन उनके स्टाक में कीमती दवाइयाँ नहीं मिलतीं। बिना पूरी पूंजी के व्यापार करने वाले की जो दशा होती है वही दशा बिना पूरे स्टाक के वैद्य या दवा बेचने वाले की होती है। इसलिये बाहरी आडम्बर में व्यर्थ खर्च न करके रस-स्मों का कीमती स्टाक रखना चाहिये ताकि जनता अपने-आप खोजती हुई चली आवे। काष्ठादि दवाओं की तरह रस-भस्में एक साल में खराब नहीं होते हैं। शास्त्र में कहा है कि "पुराणाः स्युर्गुणैर्युक्ता आसवा धातवा रसाः" आसव, धातु-भस्में और रस पुराने होने से ज्यादे गुण करते हैं। इसलिये रस-भस्मों का पूरा २ संग्रह करना चाहिये।

निवेदक—

व्यवस्थापक—**श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन,**

कलकत्ता, पटना, झाँसी, नागपुर और ब्यावर

# अनुपान सम्बन्धी जानने योग्य बातें

(१) भस्मों और रसों की जो मात्रा लिखी गयी है, वह पूरी उम्र वालों के लिये है। बालक और कमजोर आदमी को आधी मात्रा देनी चाहिये। छोटे बच्चों को जिनकी उम्र १ साल की हो, चौथाई मात्रा या वैद्य की सलाह लेकर देना चाहिये।

(२) भस्मों की मात्रा कम से कम और अधिक से अधिक लिखी गई है, जैसे अभ्रक भस्म की मात्रा कम से कम १ रत्ती और अधिक से अधिक ३ रत्ती है। इसलिये साधारण अवस्था में इसके बीच की मात्रा लेनी चाहिये और ताकतवर को पूरी तथा रोग की प्रबल हालत में किसी अनुभवी वैद्य से सलाह लेकर मात्रा निश्चित करनी चाहिये।

(३) लाल मिर्च, तेल, गुड़, गर्ममसाला आदि चीजें तथा गरिष्ठ ( जल्दी हजम न होनेवाला ) या बासी भोजन न करना चाहिये। दूध, घी, मक्खन आदि पौष्टिक चीजें खाना और ब्रह्मचर्य का पालन करना उत्तम है।

## रस निकालने की विधि

बहुत सी दवाओं का अनुपान स्वरस ( रस ) के साथ होता है। स्वरस की विधि तीन प्रकार की है :—

पहली विधि—किसी ताजा हरी जड़ी-बूटी या पत्ती को कूट कर उसको कपड़े से निचोड़ लेने पर स्वरस तैयार हो जाता है। इसे आधा तोला से २ तोला तक लेना चाहिये।

दूसरी विधि—यदि हरि जड़ी-बूटी न मिले तो वैसी हालत में सूखी औषधि को कूट कर दुगुने पानी में २४ घण्टे भिगो कर छान लेने पर वह भी स्वरस की जगह व्यवहार होता है। इसे १ तोला से ४ तोला तक लेना चाहिये।

तीसरी विधि—सूखी दवा को कूटकर आठ गुने पानी में उबालना और जब चौथाई भाग बच जाय तब छान कर उसे स्वरस की जगह काम में लेना चाहिये। इसे १ तोला से ४ तोला तक लेना चाहिये। जिस दवा में केवल स्वरस ही अनुपान हो वहाँ दवा को पीस कर स्वरस के साथ मिला कर लेना, जहाँ रस और मधु दोनों लिखा हो वहाँ दवा को मधु से घोट कर रस मिला कर लेना।

## क्वाथ (काढ़ा) बनाने की विधि

अढ़ाई तोला काढ़े की औषधि को अधकुटी (मोटा चूर्ण) करके आध सेर पानी में मन्द आँच से उबालिये। जब एक छटांक जल बाकी रहे, तब कपड़े से छानकर थोड़ा गरम रहते पिलाइये। काढ़ा बनाते समय वर्तन का मुँह खुला रखना चाहिये। ढक देने से काढ़ा भारी हो जाता है। काढ़ा मिट्टी के कोरे वर्तन में बनाना चाहिये और बनाकर अधिक देर तक न रखना चाहिये। जिस दवा में काढ़े को लेना हो उस दवा को पीसकर मुँह में रखकर ऊपर से काढ़ा पीना चाहिये।

गाजिह्वादि क्वाथ (काढ़ा)—गाजवां, मुलेठी, सौंफ, मुनक्का, अञ्जीर, उन्नाव, अडूसा, जूफा, लिसोड़ा, खूबकलां, हँसराज, गुलबनप्सा, कंटकारी—प्रत्येक ५-५ तोला, कालीमिर्च २॥ तोला मोटा कूटकर २७ पुड़िया बना लें। फिर क्वाथ बनाकर उपयोग में लें।

धान्यपञ्चक क्वाथ—धनियां, खश, वेलगिरी, नागरमोथा, सोंठ—प्रत्येक १-१ छटांक लेकर मोटा कूटकर १० पुड़िया बना लें। फिर क्वाथ बनाकर अनुपान में लें।

त्रिफला क्वाथ—हर्रे, वहेड़ा, आमला तीनों की गुठली निकालकर बराबर भाग लेकर २॥ तोले की पुड़िया बनाकर रख लें। फिर क्वाथ बनाकर अनुपान से लेना चाहिये।

पुनर्नवादि क्वाथ—पुनर्नवा (गदपुरना), हर्रे, नीम की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, पटोलपत्र, गिलोय, सोंठ—इन सबको एक-एक छटाँक लेकर मोटा कूटकर १६ पुड़िया बनाना, फिर काढ़ा बनाकर अनुपान में लेना चाहिये।

मञ्जिष्ठादि क्वाथ—मजीठ, हर्रे, बहेड़ा, आमला, कुटकी, बच, दारूहल्दी, गिलोय, नीम छाल—इन सबको एक-एक छटांक लेकर मोटा कूटकर १८ पुड़िया बनाना, फिर काढ़ा बनाकर अनुपान में लेना चाहिये।

रास्नादि क्वाथ—रास्ना, गिलोय, देवदारू, सोंठ, एरण्डमूल—इन पांचों को एक-एक छटांक लेकर मोटा कूटकर १० पुड़िया बनाना, फिर काढ़ा बनाकर अनुपान में लाना चाहिये।

दूध—जहां दूध का अनुपान हो, वहां भस्म या रसायन औषधि को पीस कर मुँह में रखकर ऊपर से एक पाव से आधा सेर तक दूध पीना चाहिये। यदि अधिक दूध हजम हो सके तो अधिक पीया जा सकता है।

मक्खन-मिश्री—जहां मक्खन-मिश्री का अनुपान हो वहां मक्खन आधा तोला और मिश्री आधा तोला पीसकर लेना चाहिये। फिर दवा को पीसकर तीनों को मिलाकर चाटना। दवा चाटने के बाद तुरन्त ही पानी नहीं पीना चाहिये।

मुरब्बा—जहां मुरब्बे का अनुपान हो वहां मुरब्बा से गुठली निकालकर उसमें दवा मिलाकर खाना चाहिये। मुरब्बा १ तोला से ४ तोला तक लिया जा सकता है।

अनार का रस—दवा पीसकर अनार के रस में मिलाकर पीना चाहिये। अनार का रस १ तोला से ४ तोला तक लिया जा सकता है।

अर्क—जिस दवा में अर्क का अनुपान हो, वहाँ दवा को पीसकर मुँह में रखकर ऊपर से अर्क २॥ तोला से एक छटाँक तक पीना चाहिये, जिससे दवा अर्क के साथ पेट में चली जाय।

शिलाजीत और मधु—जहां शिलाजीत और मधु का अनुपान हो, वहां शिलाजीत ३ रत्ती और थोड़ा मधु (दवा में मिलाकर चाटने लायक) लेकर दवा को पीसकर तीनों को मिलाकर चाटना चाहिये।

चूर्ण—जिस रसायन, भस्म के साथ किसी चीज के चूर्ण का अनुपान हो उस चीज को कूट-छानकर एक आना भर से दो आना भर तक रसायन भस्म में मिलाकर अनुपान में लिखें, मधु आदि से घोटकर चाटना चाहिये।

त्रिकटु चूर्ण—सोंठ, मरिच, पीपल, इन तीनों को बराबर लेकर कूट-छान कर रखना, इसे त्रिकटु चूर्ण कहते हैं।

मधु—जहां केवल मधु का अनुपान हो वहाँ मधु इतना मिलाना चाहिये कि औषधि मधु में अच्छी तरह मिलाकर चाटी जा सके।

मधु और घी—जहां मधु और घी का एक साथ अनुपान हो वहां मधु एक तोला और घी चार आना भर लेना चाहिये। भूलकर भी बराबर नहीं लेना चाहिये, क्योंकि मधु और घी बराबर मिलाकर चाटने से जहर हो जाता है।

घी—जहां केवल घी का अनुपान हो वहाँ घी इतना मिलाना चाहिये कि औषधि घी में मिलाकर अच्छी तरह से चाटी जा सके।

मलाई—किसी भस्म का मलाई के साथ अनुपान हो तो भस्म को मलाई के बीच में रखकर खाना चाहिये। यदि किसी रसायन गोली का मलाई से अनुपान हो तो गोली को पीसकर मलाई में रखकर खाना चाहिये। ऊपर से दूध पीना चाहिये, जिसमें दवा अच्छी तरह पेट में पहुँच सके। मलाई आधा तोला से २ तोला तक और दूध एक पाव से आधा सेर तक पीना चाहिये।

धारोष्ण दूध—तत्काल के दुहे हुये ताजे दूध को धारोष्ण दूध कहते हैं। धारोष्ण दूध के अनुपान में दवा को पीसकर मुँह में रखकर तुरन्त ही धारोष्ण दूध पी लेना चाहिये, क्योंकि कच्चा दूध रक्खा रहने से वायुकारक हो जाता है।

गरम जल—जल को गरम करने से जब एक उबाल आ जाय, तब उसे छानकर सुसुम करके अनुपान में लेना चाहिये।

शरबत—४ तोला दवा को आधा सेर जल में उबालना, आधा पाव जल बाकी रहने पर छानकर उसमें एक पाव मिश्री या सफेद चीनी डालकर चासनी बनाना चाहिये। यही शरबत है। इसमें से एक छटाँक शरबत एक पाव पानी में घोल देने से पीने लायक शरबत तैयार हो जायगा।

चावलों का पानी—एक तोला चावलों को खूब साफ करके गीले कपड़े से पोंछकर ८ तोला पानी में भिगोना, चावल मुलायम हो जाने पर मसल छानकर अनुपान में लेना चाहिये।

# पथ्यापथ्य

किसी भी वैद्य, चिकित्सक या रोगी को पथ्य-परहेज का जानना बहुत जरूरी है; क्योंकि केवल पथ्य-परहेज करने से भी प्रायः रोग अच्छे हो जाते हैं। यदि औषधि सेवन के समय रोगी ने ठीक पथ्य और परहेज न किया तो सैकड़ों औषधियों का सेवन करने पर भी रोग अच्छा नहीं हो सकता। इसलिये कोई भी औषधि, रस, भस्मादि सेवन करते समय पथ्य-परहेज का खयाल रखना जरूरी है।

रस-भस्मों का कोई खास पथ्यापथ्य नहीं है। अतः जिस रोग में रस-भस्म का व्यवहार किया जाय उसी रोग का पथ्यापथ्य रोगी को पालन करना चाहिये। यहाँ खास पथ्यापथ्य का विवरण लिखा जा रहा है। आशा है सर्वसाधारण इससे लाभ उठायेंगे। विशेष जानकारी के लिये हमारे यहाँ की "उपचार-पद्धति" देखिये।

पथ्य—खासकर हरेक रोग में पथ्य हल्का, जल्दी हजम होने वाला, ताजा, विकार रहित होना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन, गौ या बकरी का दूध, फलों में अनार, बेदाना, मौसमी का रस, कमला नीबू (नारंगी), अंगूर, मुनक्का (आबजूस) आदि तथा साबूदाना, बार्ली, खोई, मूंग की दाल का पानी, दूध को गर्म करके नीबू के रस से फाड़ कर बनाया हुआ छेने का पानी, परवल का भरता।

कुपथ्य—रोग की हालत में स्त्री-सम्भोग, भैंस का दूध, उर्द की दाल, लाल मिर्च, तेल, खटाई, गुड़, गर्म मसाला, बासी, गरिष्ठ (देर से हजम होने वाला) भोजन, नदी-नाले का बिना उबला हुआ जल, खीरा, ककड़ी, खरबूजा आदि फल, खोवा, मैदा और उर्द की दाल या बेशन से बने हुए बड़े, पकौड़ी आदि और कोंहड़ा, करैला, घुइयां आदि की तरकारी, अधिक जागना, चिन्ता, मेहनत, संयोग विरुद्ध भोजन।

---

## अभ्रक भस्म ( योगरत्नाकर )

**प्रधान गुण**—त्रिदोष, प्रमेह, कुष्ठ, उदररोग, राजयक्ष्मा, पांडु, कामला, ग्रहणी, शूल, श्वास, कास, आम, मन्दाग्नि, ज्वर, गुल्म, अर्श, मानसिक दुर्बलता, मृगी, उन्माद, हृद्रोग, प्रसूत, धातुक्षीणता आदि सब प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोगों में यह भस्म लाभदायक सिद्ध हुई है। इसके सेवन से शरीर सुदृढ़ और वीर्य पुष्ट होता है। यह भस्म वाजीकरण और रसायन है। यह अकालमृत्यु के भय को दूर करती है।

**लाभकारी अनुपान**—वात, पित्त, कफ का एक साथ कुपित होना त्रिदोष (सन्निपात) कहलाता है। ऐसी अवस्था में बढ़े हुये दोषों के अनुसार अनुपान देकर अभ्रक भस्म का सेवन करना चाहिये। बीसों प्रकार के प्रमेहों में—शिलाजीत के साथ कुष्ठ और रक्तविकारों में—खदिरारिष्ट के साथ, उदररोगों में—कुमार्यासव के साथ इस भस्म का सेवन अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। राजयक्ष्मा का आभास होने पर अथवा क्षय की प्रथमावस्था में जब रोगी का शरीर कास और मन्द ज्वर के कारण क्षीण होने लगता है, उस अवस्था में प्रवाल पिष्टी, श्रृङ्ग भस्म और गिलोय सत्व के साथ अभ्रक भस्म का नियमित सेवन १०० में ८५ रोगियों पर सफल साबित हुआ है। रक्ताणुओं की कमी से उत्पन्न पांडु, कामला (Anæmia) पर अभ्रक भस्म को मंडूर और अमृतारिष्ट के साथ देने से बहुत फायदा होता है। रक्त की अत्यन्त कमी होने पर आजकल डाक्टर लोग दूसरे का रक्त चढ़ाते हैं। आयुर्वेद चिकित्सापद्धति में गिलोय के साथ अभ्रक भस्म का सेवन कराने से यह काम हो जाता है। संग्रहणी में अभ्रक भस्म का सेवन कुटजावलेह के साथ कराना चाहिये। यह आम की कृमि को समूल नष्ट कर रोगी को पूर्ण स्वस्थ्य बना देती है। वातजन्य शूल में शङ्ख भस्म अथवा अजवायन अर्क के साथ अभ्रक भस्म का सेवन महोपकारी होता है। श्वास रोग पुराना हो जाने से रोगी बहुत कमजोर हो जाता है और बहुत खाँसने पर चिकना सफेद कफ निकलता है तथा थोड़ा भी परिश्रम करने से पसीना आ जाता है। ऐसी अवस्था में अभ्रक

भस्म का सेवन पिप्पली चूर्ण और मधु के साथ कराना अत्यन्त लाभदायक है अथवा १ तोला च्यवनप्राश, ½ रत्ती स्वर्ण भस्म के साथ सेवन कराने से आशातीत लाभ होता है। सामान्य कास रोग में अधिक कफस्राव होने पर शृङ्ग भस्म या वासावलेह तथा शुष्क कासरोग मे प्रवाल पिष्टी और सितोपलादि चूर्ण तथा मक्खन या मधु के साथ इस भस्म का सेवन कराने से बहुत फायदा होता है। आमांश में कुटजारिष्ट के साथ, मन्दाग्नि में त्रिकटु चूर्ण के साथ तथा जीर्णज्वर में लघुमालिनी बसन्त के साथ अभ्रक भस्म का सेवन अन्यर्थ सिद्ध होता है। रक्तार्श पुराना हो जाने पर वारम्वार रक्तस्राव होने लगता है। शरीर के सबल होते ही रक्तस्राव हो जाता है। ऐसी दशा में अभ्रक भस्म शुक्ति पिष्टी के साथ देने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है। मानसिक दुर्बलता होने पर कार्य करने का उत्साह नष्ट हो जाता, चित्त मे अत्यधिक चांचल्य रहता, रोगी निस्तेज, चिन्ताग्रस्त और क्रोधी हो जाता है। ऐसी अवस्था में अभ्रक भस्म का सेवन मुक्तापिष्टी के साथ कराना बहुत लाभदायक होता है। भोजन के नहीं पचने पर रस, रक्त आदि के न बनने से ओज भी नहीं बनता। फलस्वरूप अपस्मार, उन्माद, स्मृतिनाश, अनिद्रा, चित्तचांचल्य, हिस्टीरिया आदि मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अभ्रक भस्म के सेवन से थोड़े ही दिनों में शारीरिक परमाणुओं की वृद्धि होकर ओज की प्राप्ति हो जाती है और वे सुदृढ़ हो जाते हैं जिससे समस्त मानसिक रोगों का निराकरण होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है। देहरादून, हरिद्वार आदि हिमालय प्रदेशीय ब्राह्मी चूर्ण के साथ अभ्रक भस्म का सेवन करने से मानसिक रोगों पर जादू का सा असर होता है। हृदय की दुर्बलताओं के लिये अभ्रक भस्म बड़ी उपयोगी औषधि है। नागार्जुनाभ्र जो हृदयपुष्टि के लिये प्रसिद्ध है, केवल अभ्रक भस्म का ही प्रयोग है। अभ्रक भस्म हृदय-उत्तेजक तो जरूर है, लेकिन कुचला और कर्पूर के समान नहीं। यह हृदय के स्नायुमय घटकों को सबल बनाकर हृदय को उत्तेजित करती है। एक तोला मधु के साथ अभ्रक भस्म सेवन करने पर हृदय रोग निवारण मे बहुत लाभ होता है। प्रसूत रोग में देवदार्व्यादि क्वाथ या दशमूल क्वाथ के साथ अभ्रक भस्म का सेवन करने से अत्युत्तम फल होता है। धातुक्षीणता की बीमारी मे च्यवनप्राश और प्रवालपिष्टी के साथ इसे खाना चाहिये। अभ्रक भस्म योगवाही है। अतः संयोगी

द्रव्यों के गुणों को बढ़ाती है। पाचनविकार में आँतों की शक्ति को उत्तेजित करने और स्वाद उत्पन्न करने के लिये अभ्रक भस्म का मिश्रण देना अत्यन्त गुणकारी है। मन्दाग्नि-संग्रहणी में अभ्रक पर्पटी उत्तम कार्य करती है। स्थायी मलावरोध और संचित मल के विकारों के लिये भी अभ्रक पर्पटी का प्रयोग महोपकारी सिद्ध हुआ है। अम्लपित्त की बीमारी में अभ्रक भस्म का प्रयोग अति सुन्दर फल देता है। पाचक और रञ्जकपित्त की कमी होने पर यकृत् विकार को दूर करने के लिये मण्डूर के साथ अभ्रक भस्म देनी चाहिये। इसी प्रकार अरुचि, अम्लपित्त और पित्त की प्रबलता आदि में कपर्दक और प्रवाल पिष्टी के साथ प्रयोग करने से अच्छा लाभ करती है। अभ्रक भस्म को १० से १००० गजपुट देना शास्त्रीय विधान है। जितनी अधिक गजपुट दी जाय, उतना ही अधिक गुणदायक होती है। अभ्रक भस्म के सेवन करने के लिए ऋतु का प्रतिबन्ध नहीं होता। किसी भी मौसम में इसका सेवन किया जा सकता है।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक दिन में दो से चार बार तक अथवा रोगानुसार बलाबल देखकर देनी चाहिये।

## अकीक भस्म (यूनानी)

प्रधान गुण—यह एक प्रकार का खनिज पत्थर है जो कई प्रकार का होता है। उनमें पीत और श्वेत वर्ण के पत्थर भस्मों के लिये सर्वोत्तम माने गये हैं। इसकी भस्म हृदय एवं मस्तिष्क को बल देने वाली तथा वात-पित्त नाशक है। इसके सेवन से बढ़ी हुई तिल्ली एवं यकृत विकार आराम होते हैं। यह वात-रोग-जन्य उन्माद, मूर्छा, पुराना शुष्ककास, सब प्रकार के रक्तस्राव, रक्त प्रदर, पुरानी सुजाक, व्रण (घाव), अश्मरी (पथरी) को नष्ट करने में अक्सीर है। इसे नेत्रों में लगाने से ज्योति की वृद्धि होती है। इसके सेवन से वीर्य गाढ़ा होता है एवं शरीर में कामोत्पादक शक्ति बढ़ती है। भिन्न-भिन्न अनुपानों द्वारा यह अनेक रोगों पर काम करती है। सामान्य अनुपान मधु है। वात तथा प्लीहा विकारों के लिये इसका खास प्रयोग सफलतापूर्वक होता है। थूक के साथ यदि खून आता हो तो उसे बन्द करने में इसका व्यवहार अत्यन्त गुणकारी है।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक मक्खन या मधु के साथ या रोगानुसार।

## कपर्दक भस्म (रसेन्द्रसारसंग्रह)

प्रधान गुण—यह भस्म परिणाम-शूल, अन्नद्रव शूल, संग्रहणी, अम्लपित्त रस-क्षय, आफरा श्वास, गुल्म, उदरवात, मन्दाग्नि और कर्णस्राव आदि रोगों में लाभदायक है। इस भस्म में पित्त की अम्लता को कम करने का मुख्य गुण है। शंख और शुक्ति की अपेक्षा उदर में स्वादुता उत्पन्न करने का इसमे विशेष गुण है। इस कारण से कोष्ठगत वायु की वृद्धि से होने वाला आफरा या उदरशूल, भोजन का अच्छी तरह परिपाक न होने से बारम्बार सूखी या खट्टी डकारों का आना, अजीर्णादि में कपर्दक भस्म महोपकारी है। यह पित्तशामक है। अतः विशेषकर पित्त की अम्लता को दूर करती है। यह वातहर एवं शूलघ्न तथा पाचक भी है।

लाभकारी अनुपान—अजीर्णादि लक्षणों मे मधु के साथ, परिणाम शूल मे यदि वमन और आफरा हो तो दाड़िम स्वरस या दाड़िमावलेह के साथ देने से विशेष लाभ करती है। रसाजीर्ण मे कपर्दक भस्म हिंग्वष्टक चूर्ण के साथ तथा अन्नद्रव शूल मे शंख मिलाकर देने से अवश्य फायदा करती है। ग्रहणी की प्रारम्भिक अवस्था में अफीम आदि स्तम्भक दवाएँ न देकर केवल भुना हुआ जीरा चूर्ण के साथ कपर्दक भस्म का प्रयोग करना अत्युत्तम है। अम्लपित्त मे बार बार खट्टी डकारें एवं वमन आने की दशा में स्वर्णमाक्षिक भस्म मिला कर देना चाहिये। स्वास रोग में पिप्पली चूर्ण और मधु के साथ देना अधिक गुणदायक होता है। अग्निमांद्य में त्रिकुटचूर्ण के साथ इसका सेवन महोपकारी है। कर्णस्राव पर कपर्दक भस्म को कान में डालकर ऊपर से नीबू का स्वरस डालना चाहिये एवं कपर्दक भस्म को मक्खन और मधु के साथ चाटकर ऊपर से दूध पीने से विलक्षण लाभ होता है।

मात्रा—२ से ४ रत्ती तक आवश्यक्तानुसार।

नोट-कपर्दक भस्मको मक्खन, मधु आदि के साथ देना चाहिये। केवल कपर्दक देना अच्छा नहीं है, क्योंकि क्षारकी अधिकता के कारण इससे जीभ फट जाती है।

## कहरवा ( तृणकान्तमणि ) पिष्टी (यूनानी)

प्रधान गुण—पित्त विकार, हृदय दुर्बलता, रक्तातिसार, रक्तप्रदर, रक्तपित्त वमन, प्रवाहिका (पेचिस), अर्श आदि रोगों में इसका प्रयोग लाभदायक है। यह शीतल, पित्तशामक एवं रक्त निरोधक है। चक्कर आना, दाह, ज्यादा प्यास लगना, पसीने का ज्यादा आना आदि पित्त जन्य उपद्रवों में इसका प्रयोग उत्तम है। नाक, मुँह, गुदा, योनि आदि किसीभी भाग से गिरते हुए खून को यह रोकती है। मस्तिष्क में कीड़े पड़ जाने से बरावर होने वाले शिरदर्द में इससे अच्छा फायदा होता है। घावपर छिड़कने से यह खून को बन्द कर घाव को सुखा देती है।

लाभकारी अनुपान—साधारणतया मक्खन, शर्बत बनफ़्सा या जल। पित्त विकारों मे—प्रवालपिष्टी २ रत्ती मिलाकर आंवला मुरव्वा या शर्बत नीलोफर के साथ। हृदय दुर्बलता मे—अर्जुनारिष्ट के साथ। रक्तातिसार में—कुटज क्वाथ या कुटजारिष्ट के साथ। रक्तप्रदर मे—खूनखराबा चूर्ण १ माशा और अशोकारिष्ट के साथ। पेचिस और बवासीर में—ईसबगोल भूसी के साथ मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

मात्रा—२-४ रत्ती दिन मे २-३ बार तक।

नोट—इसके साथ सभी अवस्थाओं मे प्रवालपिष्टी एवं मोतीपिष्टी का मिश्रण विशेष लाभदायक होता है।

## कांस्य भस्म (शार्ङ्गधर संहिता)

प्रधान गुण—कृमि, कुष्ट, रक्तविकार, नेत्ररोग, प्रमेह आदि रोगों पर यह भस्म उत्तम कार्य करती है।

लाभकारी अनुपान—कृमि रोग में वायविडंग चूर्ण एवं सोमराजी चूर्ण के साथ, रक्त विकार में गन्धक-रसायन एवं सारिवाद्यरिष्ट के साथ, नेत्ररोग में आंवला मुरव्वा और दूध के साथ, प्रमेह में कच्ची हल्दी-स्वरस और मधु के साथ। साधारणतया मधु और गुलकन्द के साथ इसका सेवन करना ठीक है।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक।

नोट—कांस्य भस्म सेवन करने के २ घंटा पहले और बाद भोजन करना चाहिये। रोग में हानि न करे तो दूध का सेवन हितकारी है।

## कासीस भस्म ( सिद्धयोगसंग्रह )

प्रधान गुण—यह भस्म पाण्डु, रक्ताल्पता, क्षय, श्वेत कुष्ठ, यकृत्प्लीहा वृद्धि, आम विकार, उदर रोग, गुल्म-शूल आदि रोगों पर उपयोगी है। किसी भी रोग के बाद की कमजोरी या चिन्ता फिक्र जन्य दुर्बलता को दूर कर शरीर में नया खून पैदा कर पुष्ट बनाने में उत्तम है। पाचन पित्त को सुधार कर अग्नि को प्रदीप्त करती है। रक्तवर्द्धक एवं पित्त शामक गुण विशेष होने से सुकुमार प्रकृति वालों को विशेष अनुकूल पड़ती है। मण्डूर से भी ज्यादा सौम्यता इस भस्म में होती है। कषाय गुणयुक्त होने से नेत्ररोगों में भी लाभदायक है।

लाभकारी अनुपान—पाण्डु-रक्ताल्पता में शहद और कुटकी काढ़ा से। क्षय में—चौसठप्रहरी पीपल के साथ। श्वेत कुष्ठ में—त्रिफला और वायविडङ्ग चूर्ण तथा विषम भाग घृत और मधु से। यकृत्प्लीहा वृद्धि में—शहद और गोमूत्र के साथ। आम विकार में—शहद यथा धान्य पंचक काढ़ा के साथ। उदररोग मे त्रिकटु चूर्ण और शहद से। गुल्म-शूल मे—घृतकुमारी रस और शहद से। नेत्र-रोगों मे—त्रिफला घृत अथवा आंवला मुरब्बा से। रजोविरोध में—एलवा और हींग के साथ देने से मासिक धर्म साफ होकर गर्भाशय शुद्ध होता है।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक दिन में दो बार।

## कान्त लौह भस्म—कान्ति सार ( योगरत्नाकर )

प्रधान गुण—सभी प्रकार के लौह में कान्त लौह उत्तम माना जाता है। इसलिये कान्त लौह की भस्म भी विशेष गुणकारी होती है। यह साधारण लौह से विशेष शक्तिसम्पन्न होता है। अतः इसमें लौह भस्म के सभी गुण अधिक मात्रा में हैं।

सेवन विधि और मात्रा भी लौह भस्म के समान ही है। विशेष जानकारी के लिये लौह भस्म प्रकरण देखना चाहिये।

## खर्पर भस्म ( रसेन्द्रसारसंग्रह )

**प्रधान गुण**—वायुपित्त के बढ़ जाने से पैदा होने वाले रोगों में तथा प्रमेह, क्षय, खांसी और नेत्र रोगों में यह भस्म लाभदायक है।

**लाभकारी अनुपान**—क्षय के बुखार या जीर्णज्वर में च्यवनप्राश, पिप्पली चूर्ण और मधु के साथ इसका सेवन अति गुणदायक होता है। इन रोगों में स्वर्ण वसन्तमालती जैसी शास्त्रीय प्रसिद्ध औषधियों का प्रयोग होता है जिसमें खर्पर भस्म की मात्रा सर्वाधिक है। खांसी पुरानी हो जाने पर यदि अन्य दवाओं से लाभ कम दिखाई पड़े तो उस समय खर्पर का प्रयोग सितोपलादि चूर्ण और मुक्तापिष्टी के साथ करने से विशेष लाभ होता है।

**मात्रा**—१ रत्ती से ३ रत्ति तक आवश्यकतानुसार।

## गोदन्ती ( हरिताल ) भस्म ( रसायनसार )

**प्रधान गुण**—यह भस्म पित्तज्वर, आमज्वर, शिरदर्द, जीर्णज्वर, मलेरिया, प्रतिश्याय (जुकाम), स्त्रियों के रक्तप्रदर, रक्तस्राव और सूखी खांसी में विशेष लाभदायक है। बालकों के ज्वर, कास-श्वास, कब्ज और अजीर्ण आदि रोगों पर यह भस्म सफल साबित हुई है। मलेरिया जैसी कठिन व्याधि में यह शीघ्र लाभप्रद है।

**लाभकारी अनुपान**—मलेरिया के अत्यधिक तापमान में गोदन्ती सुदर्शन चूर्ण के फाण्ट अथवा सुदर्शन अर्क के साथ देने से मलेरिया का तापमान शीघ्र कम होता है। शिर दर्द में १ माशा गोदन्ती और १ माशा मिश्री, १ तोला शुद्ध गो घृत सब मिलाकर दिन में दो-तीन बार देने से लाभ होता है। इसी प्रकार सूर्य्यावर्त्त, अर्धावभेदक (अर्धकपारी) में सूर्योदय के पहले से आरम्भ कर चार-चार घंटे के अन्तर से देने पर लाभ निश्चित है। स्त्रियों के श्वेत अथवा रक्तप्रदर और बालकों के सूखा रोग में गोदन्ती के समान भाग प्रवालपिष्टी मिलाकर देना उत्तम है। शरीर में चूने की कमी के कारण होने वाले सभी रोगों में गोदन्ती भस्म अत्युत्तम औषधि है। प्रतिश्याय इन्फ्लूएञ्जा आदि में गोदन्ती भस्म लक्ष्मीविलास रस

के साथ मिलाकर मधु के साथ प्रयोग करने से उत्तम फल देती है। साधारणतया मधु या मिश्री इसका अनुपान है।

मात्रा—२ रत्ती से ६ रत्ती तक अथवा बलाबल देखकर।

नोट—अधिक गोदन्ती का व्यवहार यकृत को हानि पहुंचाता है। इसलिये मात्रा पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

## जहरमोहरा खताई भस्म ( यूनानी )

प्रधान गुण—यह भस्म मातदिल है। हृदय एवं मस्तिष्क को बल देने वाली तथा विषनाशक है। अजीर्ण, वमन (उल्टी, कै), दाह (जलन), विसूचिका (हैजा), अतिसार एवं यकृत् विकार, दिल की घबड़ाहट, जीर्णज्वर, बालकों के हरे-पीले दस्त एवं शोष (सूखा) रोग में इसका सेवन अत्यन्त लाभदायक है। यह बल-वीर्य और कान्ति को बढ़ाती है। बालकों के लिये अमृततुल्य महौषधि है।

लाभकारी अनुपान—गर्मी के फोड़े-फुँसी, जहरीले एवं विस्फोटक घाव आदि में गुलाब जल, चन्दन अर्क, नीम की अन्तरछाल के क्वाथ के साथ इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक है।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक दिन में २ से ४ बार तक आवश्यकतानुसार।

## जहरमोहरा खताई पिष्टी ( यूनानी )

यह अग्निपुटी न होने के कारण भस्म से ज्यादा सौम्य होती है। गुण, मात्रा, अनुपान आदि भस्म के अनुसार ही समझना चाहिये।

## ताम्र भस्म ( शार्ङ्गधरसंहिता )

प्रधान गुण—उदर रोग, प्रमेह, अजीर्ण, विषमज्वर, सन्निपात, कफोदर, प्लीहोदर, यकृत् विकार, परिणाम शूल, हिचकी, आफरा, अतिसार, संग्रहणी, पांडु, मांसार्बुद, गुल्म, कुष्ठ, कृमिरोग, अम्लपित्त, हैजा, प्लेग आदि में ताम्र भस्म आयुर्वेद की अत्युत्तम महौषधि है। अनेकों रस एवं औषधि इसके योग से बनती है। यह अत्यन्त शक्तिवर्द्धक, रुचिकारक और कामोद्दीपक है। यकृत्-विकृति होने

पर पित्त का निर्माण बहुत कम होता है और कभी-कभी यकृत् में पथरी हो जाती है। इसके लिये ताम्र भस्म अव्यर्थ औषधि है। पित्त विकृतिजन्य शूल इसके सेवन से निश्चित रूप से शान्त होता है। यकृत् में पित्तस्राव कराने के लिये ताम्र भस्म बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है।

लाभकारी अनुपान—पित्त की कमी अथवा यकृत् में पथरी के शमन के लिये करेले की पत्तियों के स्वरस के साथ ताम्र भस्म को सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है। मन्दाग्नि और संग्रहणी में यकृत् से पित्तस्राव कम होता है और ऐसी अवस्था में बाजरे के आटा में जल मिलाने से जैसा रंग होता है वैसा ही सफेद दस्त होने लगता है। इसके निराकरण के लिये सोंठ के चूर्ण के साथ ताम्र भस्म का प्रयोग महोपकारी है। शरीर में रक्त बढ़ाने के लिये आयुर्वेद में लौह भस्म के उपयोग का विधान है। वर्तमान विज्ञान ने यह निश्चय किया है कि लौह भस्म मे ताम्र भस्म का मिश्रण होने से ही वह पूर्ण लाभ करती है। मन्दाग्निमूलक रोगों मे लौह और ताम्र का मिश्रित प्रयोग निश्चित रूप से करना चाहिये। कफ रोग में गूलर फल के चूर्ण के साथ, वातज प्रमेह में गिलोय सत्व और मधु के साथ, अजीर्ण रोग में त्रिकुट चूर्ण और मधु के साथ, कफ प्रधान सन्निपात में अदरख स्वरस और मधु के साथ ताम्र भस्म का प्रयोग महान फलप्रद साबित हुआ है। विषमज्वर में ताम्र भस्म १ रत्ती, शुद्ध वच्छनाभ विष १ चावल मधु के साथ मिला कर देने से लाभ होता है। प्लीहोदर, यकृत्, पित्तज शोथ और परिणाम शूल पर कुमार्य्यासव या पुनर्नवा स्वरस के साथ देना लाभदायक है। सब प्रकार के शूलों पर ताम्र भस्म १ रत्ती, शुद्ध गन्धक १ रत्ती, इमली क्षार १ माशा मिला कर गोघृत के साथ खाना चाहिये। हिचकी में नीबू रस के साथ ताम्र भस्म का प्रयोग तत्काल लाभदायक होता है। आमातिसार में आंवला चूर्ण २ माशा, पिप्पली चूर्ण ३ रत्ती के साथ, पाण्डु में नवायस मंडूर के साथ, कृमि रोग में वायविडंग चूर्ण तथा सोमराजी चूर्ण के साथ ताम्र भस्म का प्रयोग महोपकारी है। गुल्म में कुमार्यासव के साथ तथा विशूचिका ( हैजा ) में त्रिकुट चूर्ण एवं पंच लवण के चूर्ण के साथ ताम्र भस्म का सेवन अति गुणकारी है। अम्लपित्त के शमन के लिये ताम्र भस्म का उपयोग स्वर्णमाक्षिक भस्म के साथ करना चाहिये। कुष्ठ रोग में बाकुची

चूर्ण और मधु के साथ ताम्र भस्म का सेवन फलप्रद है।

मात्रा—आधी रत्ती से एक रत्ती तक दिन में दो बार आवश्यकतानुसार।

नोट—ताम्र भस्म अत्यन्त उग्र, तीक्ष्ण, उष्ण, भेदी और पित्तस्रावी है। अतः इस औषधि का उपयोग सम्हालकर करना चाहिये। ताम्र में वान्ति-भ्रान्ति का दोष विद्यमान् रहता है। परन्तु हमारे यहां की ताम्र भस्म वान्ति-भ्रान्ति के अवगुण से रहित है। यद्यपि ताम्र भस्म आयुर्वेद शास्त्र की अति उपयोगी औषध है, किन्तु इसी वान्ति भ्रान्ति के अवगुण के कारण इसका प्रचार बहुत सीमित हुआ है, इसलिये ताम्र भस्म को इस दोष से मुक्त होना चाहिये। सूर्य की किरणों द्वारा देखने से चन्द्रिका रहित मालूम हो एवं थोड़ेसे दही में मिलाकर १२ घंटे कांच के पात्र मे रखने पर भी नीलापन न दीखे तो ताम्र भस्म को विशुद्ध समझना चाहिये। हमारे यहां की ताम्र भस्म इस दोष से रहित और विशुद्ध है। इसका उपयोग निःसंकोच कर सकते हैं।

## त्रिवंग भस्म ( सिद्धयोगसंग्रह )

प्रधान गुण—नाग, वंग और यशद इन तीनों के सम्मिश्रण से यह भस्म तैयार होती है। साधारणतः नाग, वंग का प्रयोग भिन्न-भिन्न अनुपानों द्वारा भिन्न-भिन्न रोगों में होता है। परन्तु त्रिवंग भस्म अधिक शक्तिदायक होने के कारण प्रमेह, शुक्रस्थान, गर्भाशय, मधुमेह, नपुंसकत्व, प्रदर, सोम रोग आदि में अति लाभदायक है।

लाभकारी अनुपान—बीसों प्रकार के प्रमेहों पर शुद्ध शिलाजीत और मधु के साथ देने से त्रिवंग भस्म अति फलप्रद होती है। धातुक्षीणता आदि कारणों से शुक्रस्थान इतने दुर्बल हो जाते हैं कि विषय-भोगादि के चिन्तन मात्र से वीर्यस्राव हो जाता है। ऐसी अवस्था में त्रिवंग-भस्म प्रवाल पिष्टी के साथ मधु और आंवला स्वरस मिलाकर देने से लाभ करती है। बार-बार गर्भपात एवं अत्यधिक सन्तति होने अथवा अधिक सहवास के कारण स्त्रियों का गर्भाशय कमजोर हो जाता है एवं गर्भ धारण शक्ति नष्ट हो जाती है। ऐसी दशा में त्रिवंग भस्म का मुक्तापिष्टी और च्यवनप्राश के साथ सेवन करना अत्युत्तम है। प्रमेहादि को उचित

चिकित्सा नहीं कराने से कालान्तर में मधुमेह की अवस्था हो जाती है। ऐसी हालत में जामुन गुठली का चूर्ण अथवा गुड़मार बूटी के चूर्ण के साथ त्रिवंग भस्म देना लाभप्रद है। अप्राकृतिक मैथुन एवं बुढ़ापे की कमजोरी आदि कारणों से उत्पन्न हुई नपुँसकता पर त्रिवंग भस्म मलाई के साथ देना चाहिये। स्त्रियों को बाल्यावस्था में ब्रह्मचर्य के अभाव के कारण अथवा अत्यधिक सहवास के कारण श्वेत और चिकना जलस्राव होने पर त्रिवंग भस्म चावल के धोवन के एवं शृङ्गभस्म के साथ देना फलप्रद है। स्त्रियों के बन्ध्यत्व ( बांझपन ) में भी त्रिवंग भस्म का प्रयोग उत्तम है।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक अवस्थानुसार।

## नाग भस्म ( रसतरङ्गिणी )

प्रधान गुण—इस भस्म के सेवन से प्रमेह, विशेषकर मधुमेह, नेत्ररोग, गुल्म, प्लीहा वृद्धि, प्रदर, अतिसार, रक्तगुल्म, आमाशय की वृद्धि से होने वाले अम्लपित्त, मन्दाग्नि, अपची, गण्डमाला, धातुक्षय, श्वासनलिका के सूजन से होने वाली खांसी, आमवात, निर्बलता, शिरदर्द, यकृत् दोष, श्वासरोग, सब प्रकार के मूत्ररोग, वातरोग, पाण्डु आदि रोग दूर होते हैं। इस भस्म के सेवन से रस-रक्त आदि सम्पूर्ण धातुओं की वृद्धि होती है, इसलिये यह शरीर के समस्त अवयवों को परिपुष्ट करती है। यह अग्नि को प्रदीप्त करती है। आयुर्वेद शास्त्र में लिखा है कि नित्यप्रति नाग भस्म का सेवन करने से बल की प्राप्ति होती है। इसके सेवन से सब प्रकार के रोगों का विनाश होकर आयु की वृद्धि होती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, कामशक्ति बढ़ती है एवं मृत्युभय दूर होता है।

लाभकारी अनुपान—प्रमेह के द्वारा अधिक वीर्यस्राव होने पर दिमाग कमजोर हो जाता है। काम करने मे उत्साह नहीं होता, विचारों में उच्छृङ्खलता हो जाती है। ऐसी अवस्था में नाग भस्म का प्रयोग शुद्ध शिलाजीत के साथ करने पर एक-दो मात्रा के बाद ही इसका चमत्कार मालूम होने लगता है। मधुमेह ( Diabetes ) में गुड़मार बूटी के चूर्ण के साथ इसका सेवन लाभदायक है। स्थूल शरीर वाले मधुमेह के रोगी को यह भस्म अधिक लाभ करती है। नाग भस्म

के सेवनकाल में यदि केवल गोदुग्ध के ही आहार पर रहा जाय तो मधुमेह समूल नष्ट हो जाता है। मूत्राशय और शुक्राशय के सभी विकारों में नाग का मिश्रण सुन्दर कार्य करता है। प्रमेह, वीर्यस्राव, मधुमेह तथा तज्जनित शिरःशूल, बहुमूत्र, प्रदर, कटिवेदना आदि उपद्रव नाग-भस्म के सेवन से समूल नष्ट हो जाते हैं। नेत्र विकार में नाग भस्म का प्रयोग त्रिफला चूर्ण और घृत के साथ करना चाहिये। पित्तज और वातज गुल्म में सोंठ के चूर्ण और नमक के साथ नाग भस्म का सेवन अत्यन्त लाभदायक है। प्लीहा के बढ़ जाने पर नाग भस्म का उपयोग मंडूर के साथ करना लाभदायक है। स्त्रियों के प्रदर रोग में विशेषतः श्वेतप्रदर में नाग भस्म या नाग भस्म का मिश्रण बहुत उपयोगी है। स्त्रियों के अस्थिक्षय में जिसे डाक्टरी में स्टोमोलेसिया कहते हैं, आंवले और गोखरू के चूर्ण के साथ नाग भस्म का प्रयोग अधिक गुणदायक होता है। अतिसार और संग्रहणी रोग पुराना हो जाने पर रोगनाशक औषधियों के साथ नाग भस्म का सेवन शक्ति बढ़ाने के लिये किया जाता है। आमाशय के आकार में वृद्धि हो जाने के कारण जो अम्लपित्त हो जाता है, उसमें वमनादि कराकर नाग भस्म आंवलास्वरस के साथ देने से अति शीघ्र लाभ होता है। उदर में व्रण होकर भी अम्लपित्त के समान ही लक्षण पैदा होते हैं। इस अवस्था में भी नाग भस्म का सेवन बहुत लाभ करता है। अँतड़ियों की दुर्बलता से पैदा हुई मंदाग्नि और कब्ज में नाग भस्म पञ्चकोल चूर्ण के साथ देना हितकारक है। अपची और गण्डमाला में गांठ कठोर अथवा सूजी हुई और ऊपर अधिक उठी हुई मालूम होती है। ऐसी दशा में नाग भस्म का प्रयोग मधु से अवश्य करना चाहिये। धातुक्षय से केवल शुक्रक्षय ही नहीं समझना चाहिये। इससे सभी धातुओं का क्षय इच्छित है। इस क्षय में नाग भस्म का प्रयोग मुक्ता-भस्म अथवा च्यवनप्राश के साथ करने से जीवनदाता का काम करता है। श्वास-नलिका के सूजन से होने वाली खांसी में नाग भस्म का प्रयोग च्यवनप्राश अथवा वासावलेह के साथ करने से महान फल होता है। आमवात में सोंठ चूर्ण के साथ नाग भस्म का सेवन हितकर है। निर्बलता दूर करने के लिये नाग भस्म को मक्खन और मिश्री के साथ देना चाहिये। यकृत् दोष में अर्कक्षार १ रत्ती, नाग भस्म १ रत्ती का मिश्रण देने से लाभ करता है। शिर दर्द में बादाम के हलवे के साथ,

श्वास रोग में सोमलता चूर्ण एवं मधु के साथ नाग भस्म का सेवन आशातीत फलदायक है। सब प्रकार के मूत्र रोग में शुद्ध यवक्षार १ माशा, नाग भस्म १ रत्ती देने से फायदा होता है। वात रोग में दशमूल क्वाथ के साथ, पाण्डु रोग में पुनर्नवा मण्डूर के साथ नाग भस्म का प्रयोग महोपकारी सिद्ध हुआ है।

नोट—नित्यप्रति नाग भस्म का सेवन करने से कभी-कभी कोष्टशूल उत्पन्न हो जाता है। ऐसे समय में थोड़े दिनों के लिये इसका सेवन बन्द कर देना चाहिये।

## पन्ना भस्म ( रसरत्नसमुच्चय )

प्रधान गुण—यह भस्म ओजवर्धक है। सन्निपातज्वर, वमन, तृषा, विष-विकार, अम्लपित्त, श्वास, पाण्डु, मलावरोध, अर्श और शोथ को दूर करती है तथा अग्नि को प्रदीप्त कर ओज को बढ़ाती है। हृदय की गति को सीमित करने तथा विषदोष को नष्ट करने के लिये पन्ना भस्म का खास उपयोग होता है। इसके सेवन से स्मरणशक्ति और आयु की वृद्धि होती है। यह भस्म गरम प्रकृतिवालों के लिये अति हितकर है।

लाभकारी अनुपान—मक्खन, मलाई, दूध, पान का स्वरस, मधु आदि रोगानुसार।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक।

## पीतल भस्म ( रसेन्द्रसारसंग्रह )

प्रधान गुण—इस भस्म में ताम्र और यशद भस्म के मिश्रित गुण हैं, लेकिन ताम्र भस्म के समान उग्र नहीं है। जिन रोगियों को उदर रोग में ताम्रभस्म का सेवन सहन नहीं हो, उनको पीतलभस्म लाभदायक है। शूल, संग्रहणी आदि में यशद भस्म से लाभ न हो तो पीतल भस्म का प्रयोग करना चाहिये। पित्त और कफ विकार में पीतल भस्म का प्रयोग बहुत फायदा करता है। यह दीपन और पाचन है। रक्तपित्त, श्वेत-कुष्ठ, यकृतविकार, रक्तदोष, प्लीहा वृद्धि, अर्श, संग्रहणी, शूल, पाण्डु और कृमि रोगों में पीतल भस्म का सेवन फलप्रद है।

लाभकारी अनुपान—मधु, अनार का रस अथवा रोगानुसार।

मात्रा—चौथाई रत्ती से १ रत्ती तक।

## प्रवाल भस्म चन्द्रपुटित

### ( प्रवालपिष्टी )

**प्रधान गुण**—क्षय, पित्तविकार, रक्तपित्त, कास-श्वास, विष, भूतबाधा, उन्माद, नेत्ररोग, धातुदोष, शिरोरोग, रक्तार्श, यकृत्विकार, ज्वर, बालरोग, अम्लपित्त आदि पर बहुत उपयोगी है। प्रवाल भस्म की अपेक्षा पिष्टी पित्तनाशक, पित्तविकारघ्न और सौम्य होने के कारण पित्तयुक्त शुष्क कास, रक्तप्रदर, रक्तपित्त, अम्लपित्त, नेत्रदाह, वमन आदि विकारों में विशेष हितकर है। क्षय रोग की प्रत्येक अवस्था में प्रवालपिष्टी लाभ पहुंचाती है। पित्तविकार की तो यह सर्वोत्कृष्ट औषधि है। पित्त की तीक्ष्णता, उष्णता एवं अम्लता को शान्त करने में यह अपूर्व है। प्रवाल अपने शामक, शीतवीर्य और प्रसादक गुणों के कारण भिन्न-भिन्न रोगों मे अति लाभदायक होता है।

**लाभकारी अनुपान**—क्षय की प्रथमावस्था में जब कि रोग का निर्णय करना कठिन प्रतीत होता हो, केवल क्षय का पूर्वरूप अथवा आभास (संशय) मात्र हो, ऐसी अवस्था में प्रवाल पिष्टी का प्रयोग सितोपलादि चूर्ण के साथ निरन्तर सेवन से रोग समूल नष्ट हो जाता है। क्षय की द्वितीयावस्था में प्रवाल को शृङ्ग भस्म और गिलोय सत्त्व के साथ देने से अपूर्व लाभ होता है। क्षय की तृतीयावस्था में रोगी का बचना तो भगवान् के ही हाथ में है, फिर भी स्वर्ण भस्म और गिलोय सत्त्व के साथ प्रवाल पिष्टी को देने से रोगी को आराम मालूम होता है। पैत्तिक शिरःशूल, वमन, दाहादि पर प्रवाल का प्रयोग आंवले के मुरब्बा, घृत और मिश्री के साथ करना श्रेयस्कर है। पित्तप्रकोप में कारण से रक्तपित्तविकार उत्पन्न होता है और मुख, नाक, गुदा, योनि या रोम रोम से रक्त निकलने लगता है। बहुत से लोगों को ग्रीष्म ऋतु में और बहुतों को सदा ही नाक से रक्त बहता रहता है। इसे हेमाफाइलिया कहते हैं। रक्तविकार के कारण रक्त स्तम्भक गुण नष्ट हो जाता है, जरा सा चोट लगने से या घाव से जो खून निकलने लगता है, उसका बन्द होना कठिन हो जाता है। ऐसी अवस्था में प्रवाल पिष्टी का प्रयोग आंवले के मुरब्बा या दुर्वा स्वरस के साथ करने से अवश्य लाभ होता है। स्वर्णमाक्षिक भस्म में साथ इसका प्रयोग तो पित्तविकारों में अमृत-तुल्य लाभदायक है। पित्तजन्य

शुष्ककास में प्रवालपिष्टी का प्रयोग अनार के स्वरस के साथ करना चाहिये। पित्त-वृद्धिजन्य कास में खांसते-खांसते जब कड़वी वमन होने लगती है एवं हाथ-पैर में जलन होने लगती है, प्यास अधिक लगती है और थोड़ा-थोड़ा ज्वर भी होने लगता है, तब प्रवालपिष्टी के सेवन से पित्त का शमन होकर कफ तर होकर बाहर निकल आता है। बच्चों की कुक्कर-खांसी ( हूपिङ्ग कफ ) में उन्हें दीर्घ काल तक कष्ट होता है। बच्चे खांसते-खांसते कै कर देते हैं। ऐसी अवस्था में प्रवालपिष्टी मिश्री के साथ कुछ दिनों तक सेवन करना महोपकारी है। उरःक्षत जन्य शुष्ककास में लाक्षा के काढ़े के साथ प्रवालपिष्टी देना चाहिये। गर्भवती स्त्रियों के कास, वमन एवं अन्य उपद्रवों में प्रवालपिष्टी के मिश्रण से लाभ होता है। जमे हुए कफ को बाहर निकालने के लिये शृङ्ग भस्म और मिश्री के साथ तथा कफ को सुखाने के लिये शृङ्ग भस्म और मधु के साथ प्रवालपिष्टी का प्रयोग उत्तम फलदायक है। पित्तजन्य श्वास में कफ निकालने के लिये श्वासघ्न औषधियों के साथ या स्वतन्त्र रूप से प्रवालपिष्टी का उपयोग होता है। विष का प्रयोग होने पर शरीर में विष का कुछ न कुछ अंश अवश्य रह जाता है। खासकर संखिया, हरिताल, रसकपूर आदि का असर जीवन भर रह जाता है और शरीर को कष्ट देता रहता है। ऐसी अवस्था में प्रवालपिष्टी का सेवन मक्खन के साथ अति लाभदायक है। भूतोन्माद में ब्राह्मी स्वरस के साथ प्रवालपिष्टी का सेवन करना हितावह है। तेज शराब या तीव्र विष के सेवन से उत्पन्न हुए उन्माद में पित्तदुष्टी हो जाता है। इसकी शान्ति के लिये प्रवालपिष्टी का उपयोग अत्युत्तम है। गर्मी के कारण आंखें आ जाती हैं और उनमें तीव्र जलन ( दाह ) और भयंकर वेदना होने लगती है। ऐसी अवस्था में प्रवालपिष्टी के साथ स्वर्णमाक्षिक भस्म मिलाकर मिश्री और घृत अथवा दूध के साथ देने से रोग अति शीघ्र नष्ट हो जाता है और कुछ काल तक निरन्तर सेवन करने से सदा के लिये रोग जाता रहता है।

पित्त-प्रकृति के लोगों को अथवा पित्तवर्द्धक आहार-विहार करने से स्वप्नदोष अथवा शुक्रस्राव होने लगता है। इसके निवारण के लिये कबाब-चीनी के साथ प्रवालपिष्टी का प्रयोग करना चाहिये। शुक्रस्थान की अत्यन्त निर्बलता अथवा स्नायुमण्डल की दुर्बलता के कारण शुक्र बहुत पतला और शक्तिहीन हो जाता है।

इस अवस्था में अश्वगन्धारिष्ट और च्यवनप्राश के साथ प्रवालपिष्टी का प्रयोग अत्यन्त फलप्रद होता है। पित्तजन्य मस्तिष्क शूल में प्रवालपिष्टी बादाम की खीर अथवा हलवा के साथ देने से लाभ करती है। रक्तार्श में मुक्ताशुक्ति के साथ अथवा नागकेशर के साथ प्रवालपिष्टी के निरन्तर सेवन से स्थायी लाभ निश्चित है। बार-बार रक्त का गिरना तो शीघ्र ही बन्द हो जाता है। यकृत्विकार में पित्तदुष्टि यदि अधिक हो जाय तो आरोग्यवर्द्धिनी के साथ प्रवालपिष्टी देना चाहिये। पित्तप्रधान ज्वर में दाह, तृषा, शीर्ष-शूल, निद्रानाश, चक्कर, वमन आदि उपद्रव हो जाते है। इस दशा मे प्रवालपिष्टी का प्रयोग गिलोय सत्व के साथ करने से बहुत लाभ होता है। यह ज्वर के बढ़े हुए तीव्र वेग को कम कर उसे पकाती है। ज्वर (टायफायड) मे प्रवाल का प्रयोग ज्वर को मर्यादा में रखने के लिये किया जाता है।

बालकों के शरीर मे चूना का अंश (कैलसियम) कम हो जाने पर अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। जैसे—हड्डी-पसली का टेढ़ा एवं पतला हो जाना, दांत का समय पर नहीं निकलना, पीले और अपच के दस्त होना, दूध पीने के साथ वमन होना आदि। इनके शमन के लिये प्रवालपिष्टी को चूने के पानी और मिश्री तथा कमला नीबू के रस के साथ देने से अमृत के समान फायदा होता है। पित्तज अम्लपित्त में बार-बार अत्यन्त कड़वी, पीली, दाहयुक्त वमन होती है, चक्कर आता है, बेचैनी एवं शिरदर्द आदि उत्पन्न हो जाते हैं। इसकी शान्ति के लिये अविपत्तिकर चूर्ण अथवा आंवला मुरब्बा के साथ देने से प्रवालपिष्टी अत्यन्त लाभ करती है। पित्तज प्रदर में गर्भस्राव का दाह व प्रदर के जल लगने से होने वाली फुँसियां, त्वचा फटकर पीड़ा होना, खुजली पैदा होना आदि उपद्रव होते हैं। इस अवस्था में उशीरासव के साथ प्रवालपिष्टी का प्रयोग उत्तम लाभदायक है। दवा सेवन के साथ-साथ उत्तर-वस्ति द्वारा योनि को सदा धोते रहना चाहिये।

मात्रा—१ रत्ती से ६ रत्ती तक मक्खन और मधु से या रोगानुसार।

## प्रवाल भस्म [ अग्नि पुटित ] ( शार्ङ्गधर संहिता )

प्रधान गुण—प्रवालपिष्टी के सम्पूर्ण गुण इसमें विद्यमान है। फर्क इतना ही है कि यह प्रवालपिष्टी से कम शीतवीर्य है।

**लाभकारी अनुपान**—सेवन विधि तथा अनुपान भी प्रवाल भस्म चन्द्र-पुटित ( प्रवालपिष्टी ) के समान ही है।

## वङ्ग भस्म ( रसेन्द्रसार संग्रह )

**प्रधान गुण**—वङ्ग भस्म प्रमेह, प्रदर, धातुक्षीणता, बहुमूत्र, वीर्यस्राव, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुँसकता, कास-श्वास, रक्तपित्त, पाण्डु, कृमि, मन्दाग्नि, क्षय, नेत्ररोग आदि को नष्ट करती है। यह उष्ण, दीपन, पाचन, रुचिकर, बल-वीर्य-वर्द्धक, वातघ्न और किंचित पित्तकारक है। स्त्रियों के गर्भाशय के दोष, अत्यार्तव, कष्टार्तव तथा बन्ध्यत्व दूर करने मे भी यह भस्म गुणकारी है। उपदंश और सूजाक से दूषित शुक्र को शुद्ध कर सन्तानोत्पादन के योग्य बनाती है। पुराने रक्तदोष और त्वचा-दोष भी इसके सेवन से दूर होते हैं। बीसों प्रकार के प्रमेह विशेषतः शुक्रमेह पर वङ्ग भस्म का प्रयोग अत्युत्तम सिद्ध हुआ है। रोगोत्पत्ति का कारण यदि शुक्रस्राव हो तो वङ्ग भस्म का सेवन निश्चित रूप से लाभ करता है।

**लाभकारी अनुपान**—अभ्रक भस्म और शिलाजीत अथवा गिलोय सत्व और मधु के साथ साधारणतया यह भस्म दी जाती है। स्त्रियों के श्वेतप्रदर में वङ्ग भस्म को शृङ्ग भस्म के साथ मिलाकर देना चाहिये। इससे श्वेत प्रदर नष्ट होने के अलावा स्त्री-बीज (डिंब) सबल होकर बन्ध्यत्व दोष नष्ट होता है। शुक्र और शुक्रस्थान को अशक्यता उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं। उनमें से मुख्य कारण है—स्वाभाविक अथवा अस्वाभाविक रूप से अधिक वीर्य का पात करना। इससे शुक्र पतला और शक्तिहीन हो जाता है। इसका बुरा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर भी पड़ता है। स्त्री के दर्शन अथवा चिन्तन मात्र से तुरन्त शुक्रस्राव होने लगता है। बार-बार स्वप्नदोष होता है और कितने को यह बीमारी इतनी बढ़ जाती है कि वे पागल या अर्द्ध पागल की तरह हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में वङ्ग भस्म का सेवन शुक्रस्थान एवं शुक्र दोनों को पुष्ट करता है। फलतः समस्त धातुओं की पुष्टि होकर शरीर बलवान् हो जाता है। शुक्र धातु के दो मुख्य कार्य हैं—गर्भ संजनन और बुद्धिवर्द्धन। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर निरन्तर वङ्ग भस्म का सेवन मलाई अथवा हल्वे के साथ करने से बुद्धि और स्मरणशक्ति बढ़ती है तथा गर्भोत्पादक

शक्ति पैदा होती है। वृद्धावस्था एवं शुक्रजन्य तरुणावस्था के बहुमूत्र में बङ्ग भस्म को सेवन शिलाजीत के साथ करने से बड़ा लाभ होता है। स्वप्नदोष में ईसवगोल की भूसी के साथ बङ्ग भस्म का सेवन महा लाभकारी है। शीघ्रपतन और नपुंसकता का मूल कारण यदि अधिक वीर्यपात हो तो, बङ्ग भस्म का सेवन उचित अनुपान के साथ करना अति गुणदायक होता है। अति मैथुन या अति शुक्रपात के कारण कास-श्वास एवं क्षय रोग की उत्पत्ति हो जाती है। इस रोग के साथ धातुक्षीणता के लक्षण भी विद्यमान रहते हैं। बङ्ग भस्म के सेवन से यह रोग समूल नष्ट हो जाता है। अति शुक्रक्षय के कारण उत्पन्न कोई भी रोग हो, उसमें बङ्ग भस्म देने से उत्तम लाभ होता है। रक्तपित्त मे प्रवालपिष्टी के साथ बङ्ग भस्म का प्रयोग लाभप्रद है। अप्राकृतिक मैथुन ( हस्त मैथुन आदि ) की दुष्ट आदत के कारण पाण्डु रोग के समान चेहरा पीला पड़ जाता है, शरीर निस्तेज, शुष्क और कृश हो जाता है। पाचनशक्ति मन्द हो जाती है। इस अवस्था में प्रवालपिष्टी और स्वर्णमाक्षिक के साथ बङ्ग भस्म का सेवन करने से अच्छा फल होता है। मानसिक दुर्बलता में बङ्ग भस्म और अभ्रक भस्म का मिश्रण ब्राह्मी अवलेह के साथ देना अत्युत्तम है। बङ्ग भस्म का सेवन आरग्वधादि क्वाथ अथवा अन्य रेचक औषधि के साथ करने से पेट के कृमि और कृमिजन्य विकार नष्ट हो जाते हैं। शुक्र की निर्बलता जनित अग्निमांद्य में पिप्पली चूर्ण और मधु के साथ बङ्ग भस्म अच्छा काम करती हैं। नेत्ररोग में बङ्ग भस्म अथवा बङ्ग भस्म का मिश्रण ताजे मक्खन के साथ तथा सूजाक में बङ्ग भस्म के साथ मुक्तापिष्टी, चांदी का वर्क, इलायची तथा वंशलोचन मिलाकर मधु के साथ देने से अति गुणदायक होता है। जीर्ण त्वचा रोगों में एक्जीमा (व्यूची) रोग विशेष कष्टदायक और दीर्घकालिक होता है। उसमें लगाने की औषधि के साथ-साथ बङ्ग भस्म का सेवन महोपकारी है।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक मक्खन और मधु से या रोगानुसार।

## त्रिमल भस्म ( सिद्धयोगसंग्रह )

प्रधान गुण—विमल—लौह और गन्धक का यौगिक कल्प है। अतः रक्तवर्द्धन एवं रक्तशोधन कार्य के लिये इसकी भस्म विशेष गुणदायक होती है।

पाण्डु, कामला, शोथ क्षय, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर आदि रोगों में रक्ताल्पता को दूर कर शरीर को नीरोग बनाने में अत्युत्तम है। वृष्यत्व गुणयुक्त होने से यह बल बढ़ाने में भी उपयोगी है। स्वर्णमाक्षिक, लौह, मण्डूर आदि भस्मों का प्रयोग जिन रोगों पर होता है उन पर विमल भस्म का प्रयोग सर्वथा उपयुक्त एवं विशेष हितकर है। पाण्डु (पीलिया) में विमल भस्म का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है।

**लाभकारी अनुपान**—त्रिकटु, त्रिफला और घृत के साथ सेवन करने से उपरोक्त समस्त रोगों में लाभ होता है। अन्यान्य रोगों में मंडूर लौह की तरह उपयोग करना चाहिये।

**मात्रा**—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

## वैक्रान्त भस्म ( रसरत्न समुच्चय )

**प्रधान गुण**—वैक्रान्त को उत्तम गुणयुक्त होने से ही हीरा का उपरत्न माना गया है। इसीलिये हीरा भस्म के अभाव में वैक्रान्त भस्म का सेवन कराया जाता है। यह भस्म त्रिदोषघ्न, षड्रसयुक्त, रसायन गुणवाली है। सब धातुओं की निर्बलता को दूर करती है। और धातुक्षीणता, क्षय, प्रमेह, वातपित्त, कफ-प्रकोप आदि को दूर कर आयु की वृद्धि करती है।

**लाभकारी अनुपान**—समस्त धातुओं की निर्बलता में मक्खन के साथ वैक्रान्त भस्म का सेवन लाभप्रद है। धातुक्षीणता और क्षय में प्रवाल पिष्टी के साथ वैक्रान्त भस्म का प्रयोग फलप्रद है। बुद्धि वृद्धि के लिये बच के चूर्ण और घी के साथ वैक्रान्त भस्म का सेवन महोपकारी है। वैक्रान्त भस्म का सेवन आंवला चूर्ण और मधु के साथ करने से आयु की वृद्धि होती है।

**मात्रा**—एक चावल से चार चावल तक।

## मण्डूर भस्म ( रसतरङ्गिणी )

**प्रधान गुण**—यह भस्म शीतल, सौम्य और कषाय गुणवाली है। जो गुण लौह भस्म के हैं वे ही कम मात्रा में मण्डूर भस्म में पाये जाते हैं। मण्डूर भस्म लौह भस्म की अपेक्षा शरीर पर जल्दी असर करती है। इसलिये बच्चों,

गर्भवती स्त्रियों एवं कोमल प्रकृतिवाले लोगों के लिये लौह के स्थान में मण्डूर भस्म का उपयोग अधिक लाभकारी है। मण्डूर भस्म रक्ताल्पता ( एनीमिया ), पाण्डु, कामला, कुम्भ-कामला, हलीमक आदि में सर्वोत्कृष्ट औषधि है। इन रोगों में अनेक कारणों से रक्तकण कम हो जाते हैं, जिससे हृदय के वेग की वृद्धि हो जाती है। फलस्वरूप नाड़ी की गति भी तेज हो जाती है। मण्डूर भस्म या लौह भस्म का सेवन रञ्जकपित्त को सम्यक बनाकर रक्ताणुओं को बढ़ाता है। इसलिये रक्ताणुओं की अल्पता से उत्पन्न सभी रोग इससे नष्ट होते हैं।

**लाभकारी अनुपान**—साधारणतया मण्डूर भस्म का सेवन त्रिकटु चूर्ण और मधु से करना चाहिये। अगर दस्त की कब्जियत हो तो गोमूत्र का अनुपान देना ठीक है। किसी भी कारण से होने वाले शोथ में मण्डूर भस्म रामबाण औषधि है। छोटे बालकों को मिट्टी खाने से होने वाले पाण्डु तथा निर्बलता में मधु के साथ देने से विशेष लाभ करती है। यकृत् और प्लीहा-वृद्धि में मण्डूर-मिश्रण महोपकारी है। बालकों के मृद्वस्थि रोग में प्रवाल भस्म और गिलोय सत्व के साथ मण्डूर भस्म देना विशेष लाभदायक है। कितनी ही लड़कियों की आयु बड़ी हो जाने पर भी अंग नहीं भरता, न रजोदर्शन ही होता है। ऐसी अवस्था में मण्डूर भस्म त्रिफला और घृत में मिलाकर ऊपर से मधु डालकर देना अत्युत्तम है सभी प्रकार के उदरशूल, मन्दाग्नि, संग्रहणी तथा रक्ताल्पता में मंडूर भस्म का उपयोग चमत्कारी गुण दिखलाता है।

**मात्रा**—१ से ६ रत्ती तक।

## मधु मण्डूर ( योगरत्नाकर )

**प्रधान गुण**—इसमें अधिक पुट लगने के कारण मण्डूर भस्म की अपेक्षा यह विशेष गुणकारी है। इसलिये मण्डूर भस्म का प्रयोग जहां सफल नहीं होता वहां इस भस्म का प्रयोग सुन्दर कार्य करता है। रक्ताल्पता, पाण्डु, कामला, यकृत्, प्लीहाविकार, शोथ, उदर रोग आदि की यह श्रेष्ठ महौषधि है। यकृत् विकार और रक्तवृद्धि के लिये इसका प्रयोग विशेष लाभदायक है। इसके सेवन से शरीर में नया खून प्रचुर मात्रा में पैदा होता है।

सेवन विधि मण्डूर भस्म की तरह ही समझना चाहिये।

मात्रा—१ से ६ रत्ती तक।

## मयूरचन्द्रिका भस्म ( योगरत्नाकर )

प्रधान गुण—यह श्वास, हिक्का, वमन ( उल्टी ) आदि की श्रेष्ठ दवा है। मोर पंख के पिछले हिस्से में जो चमकदार भाग रहता है, उसी की भस्म उत्तम होती है। चन्द्रिका भाग में जो सुनहला रंग दिखलाई पड़ता है, उसमें बहुत न्यून अंश में स्वर्ण का भाग रहता है, इसलिये श्वास रोग में इस औषधि का चमत्कारिक प्रभाव होता है।

लाभकारी अनुपान—श्वास रोग में अभ्रक भस्म के साथ मिला कर देने से अच्छा लाभ होता है। हिक्का ( हिचकी ) में केवल यह भस्म मधु के साथ या काकड़ासिंगी १ रत्ती, पीपल चूर्ण ५ रत्ती मिलाकर देने से जल्द लाभ होता है। वमन में कपूरकचरी का चूर्ण २ रत्ती, जहरमोहरा खताई पिष्टी २ रत्ती मिलाकर चन्दनादि अर्क या पुदीना अर्क के साथ देने से शीघ्र फायदा होता है।

मात्रा—२ से ६ रत्ती तक।

## माणिक्य भस्म ( रसरत्नसमुच्चय )

प्रधान गुण—यह भस्म नपुंसकता, धातुक्षीणता, हृद्रोग, वातपित्त-विकार, पित्तविकार, वातदोष, ग्रहबाधा, भूतबाधा और क्षयरोग को नाश कर शरीर की धातुओं को पुष्ट बनाती है। यह भस्म बल, वीर्य और बुद्धि की वृद्धि के लिये बड़ी ही लाभदायक है। दीपन होने के कारण इसे मन्दाग्नि में सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

लाभकारी अनुपान—मलाई, मक्खन, च्यवनप्राश या स्वर्णवंग और मधु।

मात्रा—आधी से १ रत्ती तक।

## मोती भस्म—चन्द्रपुटित ( यूनानी )
## ( मोती पिष्टी )

प्रधान गुण—अग्निपुटी मोती भस्म की अपेक्षा मोती पिष्टी अधिक गुण-

दायक है। अग्नि-संयोग न होने के कारण मोती पिष्टी भस्म से ज़्यादा सौम्य होती है। गुलाबजल में २१ दिन घोंटकर चन्द्रमा की शीतल छाया में सुखाने से और भी सौम्यता आजाती है। इसलिये इसे चन्द्रपुटी मोती भस्म भी कहते हैं। अग्नि-पुटी भस्म की अपेक्षा इसका प्रयोग विशेष हितकर है। यह पिष्टी नेत्र रोग, धातु-क्षीणता, क्षय, उरःक्षत, हृदय की निर्बलता, कास, श्वास, जीर्णज्वर, उन्माद, रक्तपित्त, दिमाग की कमजोरी, शिरदर्द, पित्तवृद्धि, दाह, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र आदि को दूर करती है। इसके सेवन से पित्त की तीव्रता और अम्लता कम होती है तथा नेत्र की ज्योति बढ़ती है। शीतवीर्य होने के कारण यह मूत्र-मार्ग एवं सर्वाङ्ग के दाह और पित्तवृद्धि को रोकती है। अनिद्रा रोग में मोती पिष्टी से यथेष्ट लाभ होता है।

**लाभकारी अनुपान**—नेत्र का बार-बार दुखना तथा लाल होकर गर्म-गर्म आंसू का गिरना आदि पित्तज लक्षणों में मोती पिष्टी का सेवन मक्खन या त्रिफला-घृत के साथ करना अत्यन्त लाभदायक होता है। धातु क्षय से रसादिक धातुओं का अनुलोम क्षय समझना चाहिये। रसक्षय (Sprue) प्रायः दुष्ट जल से उत्पन्न होता है। इसमें बार-बार पतले दस्त होकर रोगी क्षीण होजाता है एवं मुँह में छाले पड़ जाते हैं और समस्त शरीर में दाह उत्पन्न होजाता है। ऐसी अवस्था में मोती पिष्टी और प्रवाल पिष्टी का मिश्रण मधु से देना विशेष हित-कर है। क्षय रोग में मोती पिष्टी का उपयोग सितोपलादि चूर्ण के साथ करने से रोग की प्रथमावस्था से तृतीयावस्था तक लाभ करता है। दाह, बेचैनी, अधिक ज्वर, तृषा आदि पित्त प्रधान लक्षण हों तो मोतीपिष्टी विशेष एवं निश्चित रूप से लाभ करती है। उरःक्षत में च्यवनप्राश के साथ मोतीपिष्टी का सेवन करना परम हितकारी है। हृदय की निर्बलता में मुक्तापिष्टी सर्वश्रेष्ठ औषधि है। १ तोला शुद्ध मधु से चाटकर ऊपर से अर्जुनारिष्ट या अर्जुनघृत मिला कर दूध पीजाना चाहिये। पित्तप्रधान कास और श्वास में मोतीपिष्टी का उपयोग च्यवनप्राश के साथ करने से रोग शीघ्र शांत होजाता है। जीर्णज्वर में रोगी अत्यन्त दुर्बल, शक्तिहीन होजाता है। ऐसी दशा में वसन्तमालती, गिलोय सत्व और मुक्तापिष्टी का मिश्रण अमृत समान फल देता है। तेज शराब, गांजा, धतूर आदि तीक्ष्ण नशीले पदार्थों का

अधिक सेवन करने से पित्त-दुष्टि होकर उन्माद रोग होजाता है। स्वर्णमाक्षिक अथवा प्रवाल पिष्टी के मिश्रण को कुष्माण्डपाक अथवा ब्राह्मी घृत के साथ सेवन करने से उत्तम लाभ होता है। गर्मी के मौसम में उष्ण आहार-विहार के कारण नाक, मुँह, गुदा, मूत्र आदि मार्ग से रक्त गिरने लगता है तथा कोमल प्रकृति वाले मनुष्य को दाह, बेचैनी आदि लक्षण उत्पन्न होजाते हैं। ऐसी अवस्था में मोतीपिष्टी गुलकन्द या आंवला मुरब्बा के साथ देने से पित्त विकृति शांत होजाती है। १ रत्ती मकरध्वज, आधी रत्ती स्वर्ण भस्म के साथ मोतीपिष्टी का निरन्तर सेवन करने से दिमाग की कमजोरी में आश्चर्यजनक लाभ होता है, दिमाग पुष्ट होकर शान्त रहता है। शिर दर्द की हालत में बादाम का हलुवा या गेहूँ के निशास्ता के साथ मोतीपिष्टी का सेवन शीघ्र फलदायक होता है। ४० दिन इसके सेवन करने से स्थायी रूप से लाभ होता है। पित्त की अम्लता और तीक्ष्णता की अधिक वृद्धि होने पर मोतीपिष्टी मीठे अनार-स्वरस के साथ देना चाहिये। पित्तज प्रमेह में दाह और उष्णता के बढ़ जाने पर मोतीपिष्टी का उपयोग प्रवालपिष्टी और गिलोय सत्व के साथ करने से विशेष लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात में मूत्र के साथ रक्त गिरता हो या पेशाब के रास्ते से खाली रक्त जाता हो तो मोती पिष्टी का प्रयोग कुकरौंधा के रस के साथ देने से विशेष फायदा करता है। अनिद्रा में स्वर्णमाक्षिक के साथ मोती पिष्टी का मिश्रण बहुत काम करता है। मोती पिष्टी के साथ प्रवाल पिष्टी और सितोपलादि चूर्ण मिलाकर गुलकन्द या आँवला मुरब्बा के साथ देने से गर्भोपद्रव शान्त होकर गर्भ पुष्ट होता है।

मात्रा—आधी से १ रत्ती तक।

## मोती भस्म ( रसेन्द्रसारसंग्रह )

**प्रधान गुण**—मोती स्वभावतः शीतवीर्य होता है, परन्तु अग्नि संयोग होने के कारण भस्म में कुछ उष्णता आजाती है और इसीलिये मोती पिष्टी की अपेक्षा इसमें सौम्य-गुण कम हो जाता है। अतः भस्म की अपेक्षा पिष्टी का व्यवहार अधिक करना चाहिये। शेष सभी गुण मोतीपिष्टी के समान ही हैं।

**लाभकारी अनुपान**—सेवनविधि और अनुपान मोतीपिष्टी के समानही हैं।

मात्रा—आधी से एक रत्ती तक।

## मोती सीप भस्म चन्द्रपुटित (रसेन्द्रसारसंग्रह)

### [ मोती सीप पिष्टी ]

प्रधान गुण—मोती सीप चूने का सेन्द्रियकल्प है। इसके गुण, धर्म मोती की ही तरह हैं, किन्तु मोती की अपेक्षा यह गुणों में कम है। अग्निपुटी भस्म की अपेक्षा चन्द्रपुटी भस्म विशेष लाभदायक होती है। क्षय, श्वास, खाँसी, जीर्णज्वर, नेत्रदाह, हृद्रोग, पित्तजदाह, पित्तप्रधान, अरुचि, पित्तज परिणामशूल, यकृत्शूल, वमन, पित्तातिसार, अम्लपित्त, रक्त और श्वेत प्रदर आदि रोगों में अत्यन्त लाभदायक है। पित्त और किंचित् कफदोष—रस, रक्त, मांस, अस्थि के दूषण और आमाशय, यकृत्, प्लीहा, ग्रहणी आदि स्थानों पर इसका प्रयोग उत्तम लाभ पहुंचाता है।

लाभकारी अनुपान—क्षय की सभी दशाओं में प्रवालपिष्टी और गिलोय सत्व के साथ देना उत्तम फलदायक है। खाँसी, श्वास में वासावलेह के साथ देना चाहिये। जीर्णज्वर में—वसन्तमालती और गिलोय सत्व के साथ मोती सीप का प्रयोग अच्छा काम करता है। नेत्ररोग में—त्रिफला घृत के साथ, हृद्रोग में—अभ्रक भस्म और अर्जुन घृत के साथ खाकर ऊपर से दूध पीना चाहिये। पित्तविकारों में—आँवला मुरब्बा, गुलकन्द, मक्खन आदि अनुपानों द्वारा इसे देना चाहिये। अरुचि, वमन में—प्रवालपिष्टी, नीबू-रस और मिश्री के जल या कमला नीबू-रस के साथ देना चाहिये। परिणामशूल में शङ्ख भस्म और हिंग्वष्टक चूर्ण के साथ देने से अच्छा फायदा होता है। यकृत्शूल में—नवायस मण्डूर और मधु के साथ, पित्तातिसार में अनार शर्बत या बेल-मुरब्बा के साथ देना चाहिये। अम्लपित्त रोग में कपर्दक भस्म और मिश्री के साथ, रक्तप्रदर में अशोक छाल के क्वाथ और श्वेतप्रदर में श्रृंग भस्म और चावल धोवन तथा मिश्री के साथ देना उत्तम फलदायक है। इसके अलावे शेष प्रयोग और सेवनविधि मोती भस्म की तरह समझना चाहिये।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक।

## यशद भस्म ( रसरत्नसमुच्चय )

**प्रधान गुण**—यह भस्म कषाय और अति शीतल गुणवाली है। रसवाहिनी और रसपिंड की विकृति में यह बहुत उत्तम औषधि मानी गई है। यह कफ, पित्त शामक है। नेत्ररोग, दाह, प्रदर, पित्तज प्रमेह, खाँसी, अतिसार, संग्रहणी, धातु क्षय, जीर्णज्वर, पांडु, श्वास आदि रोगों में लाभदायक है। नेत्ररोग की यह उत्तम औषधि है। कण्ठमाला, अपची, अन्तरेन्द्रिय की शोथ में भी लाभदायक है।

**लाभकारी अनुपान**—नेत्ररोगों में १ माशा घी और ४ माशा शहद के साथ खाकर ऊपर से दूध पीना। दवा खाने के साथ-साथ १ रत्ती यशद भस्म आधा तोला शतधौत घृत या मक्खन में मिलाकर दिन में २ बार सुबह-शाम अञ्जन करना चाहिये। इससे अभिष्यन्द, वर्त्म, शुण्डिका, नेत्रव्रण आदि रोग दूर होकर नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। दाह (जलन) में प्रवाल पिष्टी और आंवला मुरब्बा के साथ इसे देना चाहिये। सब प्रकार के प्रदर में अशोक छाल के क्वाथ के साथ देने से लाभ होता है। प्रमेह और मधुमेह दोनों में यशद का प्रयोग सुन्दर कार्य करता है। विशेषकर पित्तजन्य प्रमेहों में जब अङ्ग का टूटना, हाथ-पैर में दाह होना, सारा शरीर गर्म रहना, प्यास की अधिकता, शरीर में सुई चुभाने की सी पीड़ा होना, जिह्वा का कठोर होना और फट जाना, कंठ की गांठों में शोथ हो जाना, मस्तिष्क का शून्य हो जाना, थोड़े ही परिश्रम से थक जाना इत्यादि लक्षणयुक्त प्रमेह और मधुमेह में यशद भस्म गिलोय रस और शिलाजीत के साथ देने से अच्छा फायदा करती है। खाँसी में सितोपलादि चूर्ण के साथ देना चाहिये। अतिसार और संग्रहणी—कभी-कभी अँतड़ी में शोथ होने पर अतिसार हो जाता है और साथ में वमन, ज्वर, उदरशूल, स्वरभंग आदि उपद्रव होते हैं और रोगी की शक्ति क्षीण होकर मृतप्राय हो जाता है, ऐसी स्थिति में १ रत्ती यशद भस्म ६ रत्ती मिश्री में मिलाकर ६ भाग करके १-१ भाग २-२ घन्टे पर छाछ या दूध के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है। धातुक्षय में शिलाजीत के साथ देना चाहिये। क्षय में जब उरःक्षत होकर फुफ्फुस का कुछ भाग नष्ट हुआ मालूम होता हो और सारे शरीर में क्षय का विष फैलकर तीव्र ज्वर, खाँसी और

प्रात काल पसीना आता हो, बल मांस का क्षय हो गया हो, इस दशा में यशद भस्म च्यवनप्राश और मुक्ता भस्म के साथ खाकर ऊपर से बकरी का दूध पीने से बढ़े हुये उपद्रव शान्त होकर धीरे-धीरे रोग शमन हो जाता है। पांडु रोग में मण्डूर भस्म के साथ इसे देना चाहिये। श्वास रोग और उसके उपद्रवों में पान रस के साथ देने से लाभ होता है।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक अथवा रोगानुसार।

## रौप्य (चांदी) भस्म ( रसेन्द्रसारसंग्रह )

प्रधान गुण—रौप्य भस्म मधुर, विपाक वाली, कषाय और अम्ल रसात्मक शीतल, सारक, लेखन, रुचिप्रद और स्निग्ध होती है। बृंहण गुण होने से वातप्रकोप को शमन करती है। बीसों प्रकार के प्रमेह, वातरोग, पित्तविकार, नेत्र-रोग, क्षय, वातप्रधान कास, प्लीहावृद्धि, यकृद्‌वृद्धि, धातुक्षीणता, अपस्मार, हिस्टीरिया आदि रोगो मे रौप्य भस्म का उपयोग अति लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह मूत्रपिंडों का शोधन कर उन्हे शुद्ध और बलवान बनाती है।

लाभकारी अनुपान—उपदंश या सूजाक होने के पश्चात् स्रोत के संकुचित होने के कारण अगर नपुँसकता आई हो तो रौप्य भस्म का सेवन शिलाजीत के साथ करने से बहुत लाभ होता है। यह मांसपेशियों और रक्तवाहिनियों को बलवान बनाती और आयु, वीर्य, बुद्धि और कांति को बढ़ाती है। बीसों प्रकार के प्रमेह पर शहद, मलाई या मक्खन के साथ रौप्य भस्म को चाटकर ऊपर से १ तोला ईसबगोल की भूसी आध सेर गोदुग्ध मे खीर बनाकर एवं उचित मिश्री मिलाकर अथवा शिलाजीत या मधु के साथ सेवन करें और क्षुधा लगने पर ही भोजन करें तो २१ दिन मे प्रमेह दूर हो सकता है। अत्यन्त शारीरिक एवं मानसिक श्रम, शोक, भय आदि से वातवृद्धि होती है एवं मस्तिष्क की शक्ति कम हो जाती है, इसके लिये अश्वगन्धा चूर्ण के साथ रौप्य भस्म का प्रयोग महोपकारी है। पित्तविकारों में रौप्य भस्म गुलकन्द या आँवला मुरब्बा के साथ देने से समस्त पित्तविकार का शमन होता है। वातप्रधान और पित्तप्रधान नेत्ररोगों में रौप्य भस्म

को त्रिफला घृत या मक्खन के साथ सेवन करने से विशेष लाभ होता है। शुक्र-क्षयजन्य व्याधियों मे वंग भस्म और शङ्ख भस्म दोनों ही उपयोगी हैं किन्तु यदि शुक्रक्षय में वातप्रकोप होकर कमर, पीठ आदि स्थानों में दर्द हो, पेशाब में जलन और वेदना आदि उपद्रव हों तो वंशलोचन और इलायची के चूर्ण के साथ रौप्य भस्म का प्रयोग निश्चित लाभ करता है। वातप्रधान शुष्क कास में रौप्य भस्म को मक्खन अथवा मलाई के साथ देना श्रेयष्कर है। यकृत् और प्लीहावृद्धि में रौप्य भस्म का मण्डूर भस्म के साथ मिश्रण अच्छा फलदायक है। धातुक्षीणता में रस-रक्तादि धातु बढ़ाने के लिये रौप्य भस्म उत्तम औषधि है। अपस्मार, हिस्टीरिया, मूर्च्छा, उन्माद, मस्तिष्क दौर्बल्य में वच, ब्रह्मदण्डी के चूर्ण और घी के साथ रौप्य भस्म देने से अधिक लाभ करती है। खूनी और बादी दोनों प्रकार के बवासीर में रौप्य भस्म को इसबगोल के साथ देने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है एवं दर्द आदि शान्त हो जाता है।

**मात्रा**—आधी से १ रत्ती तक।

## रौप्यमाक्षिक भस्म ( रसतरङ्गिणी )

**प्रधान गुण**—रौप्यमाक्षिक में रौप्य (चाँदी) का अँश रहने से इसका व्यवहार रौप्य की जगह किया जाता है, परन्तु इसके गुण रौप्य से कम हैं। इसमें रौप्य के अतिरिक्त अन्य धातुओं का भी संयोग होने से और भी गुण पाये जाते हैं। पांडु, प्रमेह, बवासीर, शोथ, नेत्ररोग, मूत्र-पिण्ड के विकार आदि में महोपयोगी है। यह रसायन होने के कारण शारीरिक कमजोरी के लिये भी अत्युत्तम है।

**लाभकारी अनुपान**—पांडु और शोथ मे नवायस मण्डूर और पुनर्नवा रस के साथ देने से यह बहुत लाभ करती है। प्रमेह में शिलाजीत के साथ देना चाहिये। बवासीर में जब रक्त का प्रवाह बन्द न होता हो उस समय प्रवाल पिष्टी और रक्त खराबा चूर्ण के साथ देने से यह तत्काल लाभ दिखाती है। मूत्रपिण्ड की गर्मी और अशक्तता में वङ्ग भस्म और शिलाजीत के साथ देने से आशातीत लाभ होता है। नेत्ररोगों में आंवला मुरब्बा के साथ देने से चमत्कारिक गुण

दिखलाती है। इससे नेत्र की ज्योति बढ़ती और आँख के सब दोष दूर होते हैं। शारीरिक कमजोरी मिटाने के लिये च्यवनप्राश या मलाई के साथ देना उत्तम है। शेष गुण, मात्रा और अनुपान रौप्य भस्म की तरह समझना चाहिये। नेत्र की फूली पर दिन में दो बार अञ्जन करने से फूली धीरे-धीरे कट जाती है। उपरोक्त रोग के अलावे यह भस्म तारुण्यपीडिका, हिक्का रोग एवं सिरदर्द में लाभदायक है। युवावस्था में स्त्री-पुरुषों के मुंह पर फुन्सियां पैदा हो जाती हैं, उसके लिये शङ्ख भस्म मधु के साथ खाना और पीली सरसों, चिरौंजी तथा मसूर दाल सम भाग गोदुग्ध में पीस कर लेप करने से उत्तम लाभ होता है। हिक्का (हिचकी) रोग में मयूरचन्द्रिका भस्म समान भाग मिलाकर एक रत्ती काकड़ासिंगी और दो रत्ती पीपल चूर्ण के साथ एक-एक घन्टा पर देने से बहुत जल्द फायदा होता है। सिर दर्द में गोदन्ती भस्म और मिश्री मिलाकर गर्म पानी के साथ देने से यह बहुत अँशों मे (ऐस्प्रीन) की तरह तुरन्त फायदा करती है।

मात्रा—१ रत्ती से ६ रत्ती तक।

## लौह भस्म ( योगरत्नाकर )

**प्रधान गुण**—पांडु, पित्तविकार, उन्माद, धातुदौर्वल्य, संग्रहणी, मंदाग्नि, प्रदर, मेदवृद्धि, कृमि, कुष्ठ, उदर रोग, आमविकार, क्षय, ज्वर, हृदयरोग, ववासीर, रक्तपित्त, अम्लपित्त, शोथ आदि रोगों में लौह भस्म अत्यन्त गुणदायक है। यह रसायन और वाजीकरण है। लौह भस्म मनुष्य के जीर्ण शरीर का पुनर्निर्माण कर उसे हृष्ट-पुष्ट बनाने में खास महत्व रखती है। भारतीय रसायनों में लौह का प्रयोग सबसे प्रधान है। एलोपैथिक चिकित्सा में भी लौह का प्रयोग बाहुल्यता से होता है। यह खून को बढ़ाने और शुद्ध करने के लिये सर्व प्रसिद्ध महौषध है।

"आयुः प्रदाता बलवीर्यकर्त्ता रोगापहर्ता मदनस्य कर्त्ता।
अयः समानं न हि किञ्चिदस्ति रसायनं श्रेष्ठतमं नराणाम्॥"

अर्थात् लौह भस्म आयुवर्द्धक, बल और वीर्य को बढ़ाने वाली, रोगों का नाश करने वाली और कामोत्तेजक गुणवाली है। इसके समान उत्तम रसायन दूसरा नहीं है।

लाभकारी अनुपान—पांडु रोग, यकृत् (लीवर) की क्रिया बिगड़ने पर रञ्जक पित्त अच्छी तरह आशोषित नहीं होता। वही पित्त रुधिर में मिलकर उसके स्वाभाविक रंग को बदल देता है। इसी को पांडु (पीलिया) कहते हैं। ऐसी अवस्था में लौह भस्म का प्रयोग कुटकी के क्वाथ और मधु के साथ करने से आशातीत लाभ होता है। कृमिजन्य पांडु में लौह भस्म का सेवन वायविडङ्ग और कमीला के चूर्ण के साथ कराने से बहुत फायदा करता है। पित्तविकार—रक्तवाहिनी नाड़ियों में रक्त का प्रवाह तेजी से होना, नाड़ी और हृदय के चाप में वृद्धि का हो जाना, नेत्रों का लाल हो जाना, अधिक स्वेद का आना, मानसिक बेचैनी का होना आदि पित्तजन्य विकारों पर लौह भस्म दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता के चूर्ण के साथ देने से उत्तम लाभदायक होती है। उन्माद में ब्राह्मीस्वरस और मधु अथवा सारस्वतारिष्ट के साथ तथा धातुदौर्बल्य में अश्वगन्धादि चूर्ण और प्रवाल भस्म के साथ लौह भस्म का सेवन विलक्षण गुणप्रद होता है। संग्रहणी में अन्न का परिपाक ठीक न होने पर अग्न्याशय के निर्बल हो जाने के कारण मल दूषित होकर अनायास ही बार-बार दस्त हो तब लौह भस्म का प्रयोग भुना हुआ जीरा और मधु के साथ करने से अग्नि चैतन्य होकर शारीरिक शक्ति बढ़ती है एवं मल बँध जाता है। मन्दाग्नि में त्रिकटु चूर्ण के साथ लौह भस्म देना उत्तम है। सम्पूर्ण प्रदर रोगों में अशोकारिष्ट और पत्रांगासव के साथ लौह भस्म का सेवन अति लाभदायक होता है। मेदवृद्धि में लौह भस्म मधु एवं त्रिफला चूर्ण के साथ सेवन करने से मेद की वृद्धि रुक जाती है एवं संचित मेद भी नष्ट हो जाता है। मण्डल, कुष्ठ, पामा (खुजली) पर आँवला, शक्कर और निम्बू के पञ्चाङ्ग के साथ लौह भस्म का सेवन करना चाहिये। उदर शूल में गोमूत्र से पकाई हुई छोटी हरड़ के चूर्ण और गुड़ के साथ खाकर ऊपर से गर्म जल पिलाने से लाभ होता है। किसी भी महाव्याधि से मुक्त होने के पश्चात् रोगी का बल कम हो जाता है और मांस-पेशी शिथिल पड़ जाती हैं। बल, मांस और रक्त अत्यन्त कम हो जाता है। इस क्षीणता को दूर कर शरीर को स्वस्थ बनाने के लिये लौह भस्म का सेवन च्यवनप्राश के साथ करना चाहिये। अनुपान फल देता है। इससे ज्वर में पिप्पली चूर्ण तथा हृदय दौर्बल्य में अर्जुनारिष्ट के साथ लौह भस्म का सेवन महान्

गुणदायक सिद्ध हुआ है। रक्तार्श मे अधिक रुधिर गिरने पर शोथ एवं पांडु आदि के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। ऐसी अवस्था मे कुटजावलेह के साथ लौह भस्म का सेवन करने से तत्काल फायदा नजर आता है। रक्तपित्त और अम्लपित्त पर आँवला स्वरस के साथ लौह भस्म देना चाहिये। सब प्रकार के शोथ रोग मे लौह भस्म का प्रयोग पुनर्नवा का स्वरस या क्वाथ के साथ देने से निश्चित रूप से लाभ करता है। यदि साथ मे यकृत् प्लीहावृद्धि भी हो तो लौह भस्म मे ताम्र भस्म मिलाकर सेवन करने से महागुणकारी होता है। लौह भस्म रसायन है अर्थात् इसके सेवन से रस आदि सब धातुओं की उत्पत्ति एवं उसका वर्द्धन होता है। इसलिये इसका व्यवहार रसायन-विधान से अर्थात् चढ़ते-उतरते योग से करना चाहिये। शिलाजीत, अभ्रक भस्म एवं स्वर्ण भस्म—इनमे से किसी एक के साथ लौह भस्म खाने से अपूर्व लाभ होता है।

**मात्रा**—आधी से ३ रत्ती तक।

**तीक्ष्ण लौह भस्म**—साधारण लौह भस्म की अपेक्षा विशेष गुणयुक्त है। मात्रा, अनुपान आदि लौह भस्म की तरह समझना चाहिये।

**लौहसार भस्म**—यह उत्तम लौह की भस्म है। गुण, अनुपान, मात्रा लौह भस्म के तुल्य है।

## शङ्ख भस्म (रसेन्द्रसारसंग्रह)

**प्रधान गुण**—यह भस्म उदरवात, यकृत्-प्लीहावृद्धि, गुल्म, अजीर्ण, मन्दाग्नि, आफरा, शूल, अतिसार, संग्रहणी और नेत्र के फूले में अत्यन्त लाभकारी है।

**लाभकारी अनुपान**—उदर में वायु उत्पन्न होकर शूल चलना, आफरा सा हो जाना, अपच के कारण अन्न की दूषित स्वाद वाली डकारों का आना आदि उपद्रव होने पर शङ्ख भस्म हिंग्वष्टक चूर्ण के साथ देने से तत्काल लाभ होता है। यकृत् और प्लीहा के बढ़ जाने पर प्रायः क्षारीय औषधियों का व्यवहार होता है, परन्तु जब मलावरोध न हो तो अन्य क्षारयुक्त औषधियों की अपेक्षा शंख

भस्म का प्रयोग समान भाग मण्डूर भस्म मिलाकर कुमारीआसव के साथ देने से खूब लाभ होता है। मलावरोध हो तो साथ में रेचक औषधियों का व्यवहार भी करना चाहिये। गुल्म रोग मे वज्रक्षार चूर्ण के साथ देना उत्तम है। अजीर्ण, मन्दाग्नि और आफरा में १ से ४ रत्ती तक शङ्ख भस्म नीबू रस और मिश्री के साथ अथवा भुनी हुई हींग १ रत्ती और ६ माशा घृत के साथ रोगानुसार दिन में २-३ बार देना चाहिये। इसके योग से बनी शङ्ख वटी और महाशङ्ख वटी का प्रयोग भी उत्तम है। सब प्रकार के शूलों पर काला नमक, भुनी हींग और त्रिकटु चूर्ण के साथ देने से चमत्कारिक गुण होता है। पक्वातिसार और संग्रहणी में शङ्ख भस्म बेल के मुरब्बे के साथ देने से फायदा होता है। इसके योग से बना हुआ शंखोदर रस भी अतिसार-संग्रहणी के लिये उत्तम है।

मात्रा—२ से ६ रत्ती तक।

## शृङ्ग भस्म ( रसतरङ्गिणी )

प्रधान गुण—यह भस्म श्वास कास, पार्श्वशूल, निमोनिया, ब्रोंकाइटिस, इन्फ्लुएञ्जा, जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा की प्रथमावस्था, हृदयशूल, सर्दी, जुकाम, वृक्क-व्रण, पायरिया (Pyorrhœa), बालकों का सूखा रोग आदि में महोपकारी है। शृङ्ग का मुख्य गुण कफ-श्वास का नियमन करना, फुफ्फुसों में रहे हुये कफदोष की साम्यावस्था स्थापित कर फुफ्फुस-कोषों को शक्ति देना, हृदय को शक्ति देना, क्षय की प्रथमावस्था में क्षय के कीटाणुओं का नियमन कर क्षय को बढ़ने न देना आदि है। श्वास-कास में सहायक औषधियों के रूप में शृङ्ग भस्म महोपयोगी सिद्ध हुई है।

लाभकारी अनुपान—सर्दी-जुकाम की खाँसी में बनफ्सा क्वाथ के साथ पार्श्वशूल और निमोनिया मे अभ्रक भस्म और मधु के साथ तथा ब्रोंकाइटिस में मल्ल सिन्दूर के साथ शृङ्ग भस्म का सेवन महोपकारी है। निमोनिया अथवा इन्फ्लुएञ्जा के बाद अवशिष्ट कफ बहुत समय तक कष्ट देता है तथा दुर्गन्धयुक्त पीले रङ्ग का चिकना कफ निकलता है। इसके लिये शृङ्ग भस्म और रस सिन्दूर का मिश्रण अडूसा मुलेठी, बहेड़ा और मिश्री के क्वाथ के साथ देना विशेष हित-

कर है। कफ को बाहर निकालने के लिये मिश्री का अनुपान और कफ को सुखाने के लिये मधु या पान का अनुपान देना चाहिये। प्लूरेसी में शृङ्ग भस्म और मकर-ध्वज का मिश्रण मुलेठी क्वाथ के साथ देना हितावह है। इन्फ़्लुएञ्जा में शृङ्ग भस्म अच्छा फायदा करती है। गोदन्ती हरिताल के साथ उचित अनुपान से इसे देना चाहिये। राजयक्ष्मा की प्रथमावस्था में प्रवाल पिष्टी के साथ शृङ्ग भस्म का निरंतर प्रयोग करने से रोग निर्मूल हो जाता है। हृदयशूल में मक्खन के साथ शृङ्ग भस्म देना चाहिये। शृङ्ग भस्म हृदय-पौष्टिक है। सर्दी, जुकाम में कफाधिक्य हो तो शृङ्ग भस्म देना ज्यादा हितकारक है। वृक्कव्रण या मूत्रस्तम्भ में वङ्ग भस्म के साथ शृङ्ग भस्म देने से पीव जल्दी सूख ज़ाता है। पायरिया में शृङ्ग भस्म का सेवन बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। बालकों के सूखा रोग और डब्बा (पसली चलना) रोग में प्रवाल पिष्टी का मिश्रण बहुत ही लाभ करता है।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक।

## स्वर्ण भस्म (रसतरङ्गिणी)

प्रधान गुण—यह भस्म स्निग्ध, मधुर, कषाय, किञ्चित् तिक्त, शीतवीर्य और रसायन गुणवाली होती है। पाककाल में मधुर, बृंहण, हृद्य और स्वर शुद्धि-कारक है। स्वर्ण भस्म प्रज्ञा, वीर्य, बल, स्मृति, कांति और ओज को बढ़ाने वाली है। यह क्षय (राजयक्ष्मा), धातुक्षीणता, जीर्णज्वर, मन्दज्वर, बराबर आने वाला ज्वर, त्रिदोष, मस्तिष्क-निर्बलता, पुराना श्वास, कास, दाह, पित्तरोग, पित्तज-उन्माद, विष-विकार, पित्तप्रधान-प्रमेह, दृष्टि-क्षीणता, प्रदर, नपुँसकता आदि रोगों की अति श्रेष्ठ औषधि है। जिस प्रकार सामाजिक जीवन में स्वर्ण को बड़ा ही महत्वपूर्ण आर्थिक स्थान प्राप्त है, ठीक उसी प्रकार शारीरिक व्याधि को दूर करने में यह बड़ा महत्व रखती है। अत्यन्त क्षीणावस्था को प्राप्त हुये मृतप्राय रोगी को भी जीवनी शक्ति प्रदान करने की अद्भुत शक्ति स्वर्ण भस्म में पाई जाती है। ऐसे तो सभी रोगों में स्वर्णघटित औषधियों से चमत्कारी लाभ होता है किन्तु राज-यक्ष्मा, जीर्णज्वर, संग्रहणी, स्नायु-दौर्बल्य, नपुँसकता आदि महाव्याधियों में तो स्वर्ण भस्म के बिना रोग का आराम होना कठिन है। दिल को ताकत पहुंचाने

वाली औषधियों में स्वर्ण भस्म का सर्व प्रथम स्थान है। स्वर्ण भस्म का कार्य रक्त को निर्दोष बनाकर हृदय को पुष्ट बनाना तथा रक्तवाहिनियों और वातवाहिनियों को सबल करना है। अर्जुन, कपूर, कुचला, डिजेटेलिसपत्र आदि में जो हृदय को पुष्ट करने के गुण हैं, उनसे बिल्कुल भिन्न और उत्तम गुण स्वर्ण भस्म में हैं। यह स्मरण रखना चाहिये कि स्वर्ण भस्म की मात्रा बहुत ही कम हो। एक रत्ती के १६वें भाग से ५०वें भाग तक देना ठीक है। अनुलोमक क्षय (Sprue) में भी स्वर्ण भस्म विशेष लाभदायक है। इसी तरह कण्ठमाला ( जो एक मस्सा का ही भेद है ) में भी स्वर्ण भस्म से उत्तम लाभ होता है। दोनों प्रकार की धातुक्षीणता ( अर्थात् रस, रक्तादि धातुओं की क्षीणता और केवल शुक्रधातु की क्षीणता ) में स्वर्ण बसन्तमालती, बसन्त कुसुमाकर आदि स्वर्णघटित औषधियों से आशातीत लाभ होता है। जीर्णज्वर, मन्दज्वर, बार-बार आने वाला ज्वर आदि पुराने और महाकष्टदायक ज्वरों में स्वर्ण मिश्रित औषधियों से निश्चित लाभ पहुँचता है। स्वर्णघटित बृहत्, सर्वज्वरहर लौह, पुटपक्व विषमज्वरान्तक लौह आदि औषधि से कालाज्वर या किसी तरह आराम न होने वाला मलेरिया ज्वर जड़ से नष्ट हो जाता है। सैंकड़ों इन्जेक्शन लेने पर और वर्षों डाक्टरी चिकित्सा करने पर भी जो रोगी अच्छे न हुये वे सब उपरोक्त स्वर्णघटित औषधियों से अच्छे किये गये हैं। त्रिदोष (सन्निपात) में कस्तूरीभैरव, समीरपन्नग आदि स्वर्णघटित दवाओं से रोगी की प्राण-रक्षा होती है। मस्तिष्क की निर्बलता में स्वर्ण भस्म सर्वोत्तम साबित हुई है। स्वर्ण मिश्रित मकरध्वज वटी, बृहत् वातचिन्तामणि आदि महौषधियों से अत्यन्त कष्टदायक दिमागी कमजोरी दूर होने के सैंकड़ों उदाहरण हैं। पुराना श्वास और कास जब किसी भी तरह नहीं आराम हो तो बृहत् श्वासचिन्तामणि, महालक्ष्मीविलास आदि स्वर्णघटित दवाओं का प्रयोग करना चाहिये। इससे निश्चित रूप से लाभ होता है। तीव्र विष-विकार के शमन होने पर सूक्ष्मावस्था में विषविकृति शेष रह जाती है, उसके लिये अल्पमात्रा में स्वर्ण भस्म का प्रयोग करने से विष निर्मूल हो जाता है। स्वर्ण सेवन करने वालों पर विष का प्रभाव बहुत कम होता है।

लाभकारी अनुपान—हृदय को पुष्ट और बलवान बनाने के लिये स्वर्ण भस्म का प्रयोग अदरख रस और मधु के साथ करना चाहिये। जन्तुघ्न, प्रतिविषोत्पादक गुण के कारण स्वर्ण भस्म राजयक्ष्मा में अत्यन्त लाभ करती है। जब राजयक्ष्मा में ज्वर का वेग अधिक हो तब स्वर्णघटित औषधि नहीं देनी चाहिये। क्षय की प्रथमा और द्वितीयावस्था में जब रोगी क्षीण हो रहा हो और मन्दज्वर से पीड़ित हो, उस समय स्वर्ण भस्म, शृङ्ग भस्म, प्रवाल पिष्टी और गिलोय सत्व के साथ मिलाकर देने से बहुत लाभ होता है। पित्त-प्रधान या वात-प्रधान पुराने श्वास-कास मे द्राक्षासव के साथ स्वर्ण भस्म देना बहुत ही उत्तम सिद्ध हुआ है। दाह मे आंवला मुरब्बा के साथ स्वर्ण भस्म देने से पर्याप्त लाभ होता है। पित्त-रोग और पित्त उन्माद में स्वर्ण मिश्रित दवाओं से आशातीत लाभ होता है। पित्तप्रधान प्रमेह पर आँवला स्वरस या गिलोय स्वरस के साथ स्वर्ण भस्म या स्वर्ण घटित औषधियों का प्रयोग महोपकारी सिद्ध हुआ है। नेत्रों की दृष्टि कम हो जाने पर पुनर्नवा चूर्ण के साथ स्वर्ण भस्म देना चाहिये। इससे दृष्टि-शक्ति बढ़ जाती है। भयंकर प्रदर मे चौलाई की जड़ के स्वरस के साथ स्वर्ण भस्म का सेवन सर्वोत्तम साबित हुआ है। नपुंसकता में स्वर्णघटित मकरध्वज, मुक्तापिष्टी, स्वर्ण भस्म का मिश्रण सबसे अधिक लाभदायक होता है। संग्रहणी में स्वर्णपर्पटी से मृतप्राय रोगी अच्छे होते देखे गये हैं, ऐसी अवस्था मे स्वर्ण भस्म का प्रयोग सोंठ या भुना जीरे का चूर्ण और मधु के साथ देने से अपूर्व लाभ होता है। बुद्धि वृद्धि के लिये स्वर्ण भस्म वच के चूर्ण और मधु के साथ, कान्ति वृद्धि के लिये पद्मकेशर के चूर्ण और मधु, तारुण्य प्राप्ति के लिये शंखपुष्पी चूर्ण और मधु के साथ, वाजीकरण के लिये विदारीकन्द के चूर्ण और मधु के साथ स्वर्ण भस्म का प्रयोग अत्यन्त गुणदायक होता है।

मात्रा—चौथाई से १ रत्ती तक अथवा रोगानुसार।

## स्वर्णमाक्षिक भस्म ( योगरत्नाकर )

प्रधान गुण—बहुत लोगों का विश्वास है कि स्वर्णमाक्षिक स्वर्ण के अभाव में दिया जाता है, किन्तु वास्तव में स्वर्णमाक्षिक लौह का सौम्य कल्प है।

लौह के कल्पों मे जो उष्णता और तीव्रता आदि कठोर गुण रहते हैं, वे इस भस्म में नहीं है। लौह का अति सौम्य कल्प होने से यह नाजुक, सुकुमार, शक्तिहीन स्त्री-पुरुषों के लिये तथा बालकों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। स्वर्णमाक्षिक भस्म स्वादु, तिक्त, वृष्य, रसायन, योगवाही, शामक, शक्तिवर्द्धक, पित्तशामक, शीतवीर्य, स्तम्भक और रक्तप्रासादक है। पांडु, कामला, जीर्णज्वर, निद्रानाश, दिमाग की गर्मी, पित्तविकार, नेत्ररोग, वमन, उबकाई, अम्लपित्त, रक्तपित्त, व्रणदोष, प्रमेह, प्रदर, मूत्रकृच्छ्र, शिरःशूल, विषविकार, अर्श, उदररोग, कंडु, कुष्ठ, कृमि, मदात्यय, बालरोगादि में यह विशेष उपयोगी औषधि सिद्ध हुई है। विशेषकर कफ-पित्त के रोगों मे यह महोपकारी है। पांडु, कामला आदि रक्ताल्पता की प्रधान औषधि लौह भस्म है। किन्तु यदि लौह भस्म से रोग का शमन न हो तो लौह का सौम्यकल्प मण्डूर भस्म का प्रयोग करें और अगर इससे भी सफलता न मिले तो स्वर्णमाक्षिक भस्म का प्रयोग करें। यदि स्वर्णमाक्षिक भी काम न करे तब गुडूचि घनसत्व (शंसमनी वटी) मिलाकर प्रयोग करें। यह प्रयोग रक्ताल्पता के क्रम के अनुसार है। बालरोगों के लिये स्वर्णमाक्षिक भस्म अत्यन्त उपयोगी है। इससे प्रायः सभी बालरोग नष्ट होते हैं और बालकों का शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है। बच्चों को सुलाने का तो इस भस्म में विशेष गुण है।

लाभकारी अनुपान—पांडु और कामला में स्वर्णमाक्षिक शहद-पीपल अथवा मूली के रस के साथ तथा जीर्ण ज्वर में वर्धमान पिप्पली के साथ सेवन करने से विशेष लाभ होता है। निद्रानाश एवं पित्तज उन्माद में रात्रि को सोते समय जटामांसी, नेत्रवाला तथा रक्तचन्दन के क्वाथ के साथ स्वर्णमाक्षिक देने से निद्रा आने लगती है। दिमाग की गर्मी में स्वर्णमाक्षिक देने से निद्रा आने लगती है। दिमाग की गर्मी के लिये स्वर्णमाक्षिक का प्रयोग कुष्मांड रस के साथ करना हितावह है। पित्तविकार में स्वर्णमाक्षिक का सेवन शर्बत गुलबनफसा या मीठे अनार के रस के साथ करना लाभदायक है। नेत्ररोगों में नेत्र की जलन और लाली के लिये मक्खन के साथ स्वर्णमाक्षिक को खाना एवं गुलाबजल के साथ लगाना बड़ा लाभदायक होता है। वमन एवं उबकाई में स्वर्णमाक्षिक बेर की मज्जा के साथ देने से निश्चित रूप से लाभ होता है। अम्लपित्त की सभी अवस्थाओं

में स्वर्णमाक्षिक मिश्रण लाभप्रद है। यदि केवल स्वर्णमाक्षिक का ही प्रयोग करना हो तो आमल की स्वरस के साथ करना अत्युत्तम है। रक्तपित्त में स्वर्णमाक्षिक भस्म अनन्तमूल, लालचन्दन, पद्मकाष्ठ के क्वाथ के साथ देना लाभदायक है। पित्तविकृति से छोटी-छोटी फुँसियाँ पैदा हो जाती हैं। इसमें अनन्तमूल अर्क या क्वाथ के साथ स्वर्णमाक्षिक का प्रयोग शीघ्र लाभ करता है। पित्तज प्रमेहों में स्वर्णमाक्षिक भस्म गिलोय सत्व के साथ देना चाहिये। पित्तजन्य प्रदर में द्राक्षावलेह या शर्बत वनफ़्सा के साथ स्वर्णमाक्षिक भस्म का प्रयोग उत्तम फलदायक होता है। मूत्रकृच्छ्र में यवक्षार के साथ, पित्तज शीर्षशूल में शङ्ख भस्म और मक्खन के साथ स्वर्णमाक्षिक भस्म का सेवन महोपकारी है। विषविकार में स्वर्णमाक्षिक भस्म का प्रयोग मधु के साथ दीर्घकाल तक करना लाभदायक होता है। रक्तार्श और पित्तार्श में अधिक रक्त गिरने पर रोगी बहुत कमजोर हो जाता है। ऐसी अवस्था मे स्वर्णमाक्षिक भस्म नागकेशर, तेजपात और इलायची चूर्ण के साथ देने से बहुत फायदा करती है। उदररोग में यकृत् और प्लीहा के बढ़ जाने पर स्वर्णमाक्षिक का मिश्रण बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। खाज-खुजली और कुष्ठ में स्वर्णमाक्षिक को तुलसी स्वरस के साथ या गन्धक रसायन के साथ देना चाहिये। कृमि रोग में तुलसी स्वरस के साथ स्वर्णमाक्षिक का प्रयोग हितकारक है। ज्यादा शराब पीने से उत्पन्न हुये मदात्यय रोग में कुटकी, पुनर्नवा एवं गिलोय के क्वाथ के साथ स्वर्णमाक्षिक का सेवन उत्तम फलदायक है। मसूरिका रोग में कचनार छाल के क्वाथ के साथ देने से मसूरिका का अन्तर्गत विकार बाहर निकल जाता है। कुनैन के अधिक सेवन से भी अनेक तरह के उपद्रव पैदा हो जाते हैं। इन सबके लिये स्वर्णमाक्षिक भस्म का उपयोग दूध और मिश्री के साथ करने से बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक।

## हजरुल यहूद भस्म ( सिद्धयोगसंग्रह )

प्रधान गुण—यह अश्मरी (पथरी) नाशक एवं मूत्रल है। किसी भी तरह रुके हुये पेशाब को साफ करने में यह उत्तम है। यदि पथरी बहुत बड़ी न

हो गई हो तो कुछ दिन लगातार इसका प्रयोग करने से विना ओपरेशन के ही पेशाव के रास्ते यह उसे निकाल देती है। मूत्रावरोध, मूत्रकृच्छ्र, शर्करा आदि में पेशाव साफ करने के लिये इसका प्रयोग बहुत लाभदायक है।

लाभकारी अनुपान—नारियल जल, कुल्थी का काढ़ा या रोगानुसार। इसके साथ श्वेतपर्पटी २-३ माशा मिलाकर देने से विशेष लाभ होता है। पेशाव साफ करने के लिये शीतल जल, दूध, दही की लस्सी आदि के साथ भी दे सकते हैं।

मात्रा—३ से ६ रत्ती तक दिन में २-३ वार।

## हरिताल (तवकिया) भस्म ( रसायनशाला प्रक्रिया )

प्रधान गुण—यह भस्म स्निग्ध, ऊष्ण, कटु एवं अग्निदीपक है। वातरक्त, कुष्ठ, उपदंश (गर्मी), चर्मरोग, रक्तविकार, विषमज्वर, शीताङ्ग और कफवात प्रधान भयङ्कर सन्निपात, वातरोग, ऊर्ध्वश्वास, अपस्मार (मृगी), भगन्दर आदि रोगनाशक उत्कृष्ट रसायन है। इसका रसायन विधान के अनुसार सेवन करने से जरावस्था की निर्वलता दूर होकर वल, वीर्य एवं कान्ति की वृद्धि होती है।

लाभकारी अनुपान - वातरक्त की यह अचूक दवा है। विशेषकर वात, कफ प्राधान्य वातरक्त में यह महोपयोगी है। सर्वाङ्ग में जड़ता एवं शूल का चलना, शोथ, त्वचा का फटना एवं काला, मैला या सफेद हो जाना—हाथ या पैरों की अंगुलियों का टेढ़ा हो जाना, त्वचा की शून्यता—स्पर्श का ज्ञान न होना, शीतल आहार-विहार से रोग का बढ़ना आदि वात प्रधान लक्षण होने पर हरिताल भस्म घी के साथ खाकर गिलोय क्वाथ पीने से उत्तम लाभ होता है। कफ प्राधान्य वातरक्त में शीतलता, हाथ-पैर पर अग्नि का भी असर न होना आदि लक्षण में करंज के पत्तों के रस में घी या मिश्री मिलाकर इसे देना हितकर है। वातरक्त के शमन हो जाने पर भी किसी-किसी रोगी को फोड़े-फुन्सी, खुजली, रक्त दूषित होकर चकत्ते होना आदि उपद्रव हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में अनन्तमूल, चोपचीनी

आदि रक्तशोधक दवा के साथ हरिताल भस्म का सेवन लाभकारी है। कुष्ठ रोग में बाकुची चूर्ण और मंजिष्ठादि अर्क के साथ इसका सेवन कुष्ठ और उसके उपद्रवों को दूर करता है। उपदंश (गर्मी) रोग जब नया हो तब पारद, रस कर्पूर, अमीर रस आदि दवायें देना उत्तम है। परन्तु रोग पुराना हो जाने पर जब उपदंश का विष विशेष गहराई में हो और त्वचा, मांस, रक्त आदि दूषित होकर कुष्ठ, चर्म-रोग आदि का आभास मालूम हो तब इस भस्म का प्रयोग गन्धक रसायन और अनन्तमूल अर्क के साथ देने से अन्य औषधियों की अपेक्षा विशेष लाभदायक होता है। समस्त चर्म रोगों में मधु और गिलोय रस या मंजिष्ठादि अर्क के साथ इसे व्यवहार करना चाहिये। शीताङ्ग और कफ, वात प्राधान्य सन्निपात में अदरख रस के साथ इसे देने से बेहोशी, शीतपना आदि दूर होकर रोगी जल्द होश मे आ जाता है। ऊर्ध्वश्वास में बहेड़ा भिंगी या सोमलता के चूर्ण के साथ देना चाहिये। अपस्मार (मृगी) मे ब्राह्मी घृत के साथ देना लाभदायक है। मलेरिया में कुनैन आदि की जगह इसका व्यवहार करना चाहिये। वातव्याधि मे दशमूल काढ़ा के साथ इसका प्रयोग उत्तम फलदायक है। भगन्दर रोग मे शुद्ध गुग्गुल के साथ देना चाहिये।

मात्रा—१ से २ चावल तक या रोगानुसार दिन में दो बार।

---

नोट—पित्त प्राधान्य कुष्ठ और पित्त प्राधान्य वातरक्त में इसका व्यवहार नहीं करना चाहिये। खटाई, नमक, मिर्च, तेल आदि त्याग देना उत्तम है।

# कूपीपक्व रसायन

हमारे यहां षड्गुणबलिजारित पारद से ही समस्त औषधियाँ बनाई जाती हैं। इसलिये अधिक गुणदायक होती हैं। नीचे लिखे कूपीपक्व रसायन षड्गुण-बलिजारित पारद से ही बनाये गये हैं। इस पर भी द्विगुण और षड्गुण शब्द जहाँ प्रयुक्त हुये हैं उनका तात्पर्य दूसरे बार का समझना चाहिये। इस क्रिया से निश्चय ही औषधि की शक्ति बढ़ जाती है। इनका उपयोग वैद्य की सलाह से करना उचित है।

**मकरध्वज** यह एक ऐसी सर्वश्रेष्ठ महौषधि है जिसके समान सर्वरोगनाशिनी दवा संसार के किसी भी चिकित्सा शास्त्र में नहीं है। बड़े-बड़े डाक्टरों ने भी यह बात मान ली है कि मकरध्वज के जोड़ की दवा दूसरी नहीं है। इसके अलावा अगणित प्राणी काल के मुँह से बचते हैं। बंगाली डाक्टर तो इसका बहुत ही ज्यादे व्यवहार करते हैं। एक ही मकरध्वज से बहुत रोगों का आराम होना—यह विज्ञापन नहीं है, युक्तिसंगत और हजारों बार का अनुभूत है। यह तो सभी जानते हैं कि ताकत बढ़ने से हर रोग में फायदा होता है। मकरध्वज के सेवन से मनुष्य की ताकत बहुत बढ़ती है। हृदय (दिल) और स्नायु-मण्डल (दिमाग) को इन्जेक्शन की तरह ५ मिनट में ताकतवर बनाता है। मकर-ध्वज के खाने से शरीर का वजन निश्चित रूप से बढ़ता है। यह बल, वीर्य, कांति, शक्ति, पुरुषार्थ आदि के लिये सर्वश्रेष्ठ दवा है। शीघ्रपतन की भी आजमूदा दवा है। नपुंसकता (नामर्दी) के लिये मकरध्वज महागुणकारी है। गोद के बच्चे से लेकर सौ वर्ष तक की उम्र तक को मकरध्वज एकसा फायदा करता है। कुछ लोगों में गलतफहमी है कि मकरध्वज या चन्द्रोदय मरते समय ही दिया जाता है, साधारण अवस्था में मकरध्वज नहीं दिया जाता, परन्तु सबसे अच्छी दवा होने के कारण ही यह मरते समय दिया जाता है। जो दवा मरते हुये रोगी को प्राण-दान देने की ताकत रखता है, वह साधारण रोग में तो जादू-मन्त्र की तरह तुरन्त

फायदा करती है। बङ्गाल में तो बहुतसे धनी-मानी बारहो महीने मकरध्वज को बिना रोग के खाते हैं और बहुत ही तन्दुरस्त बने रहते हैं। भैषज्यरत्नावली में लिखा है :—

एतदभ्यासतश्चैव जरामरण नाशनम्।
अनुपान विधानेन निहन्ति विविधान्गदान् ॥

अर्थ—इसके सेवन से बुढ़ापा चला जाता है और अचानक मौत (हार्टफेल) नहीं होती। अनुपान भेद से मकरध्वज बहुतसी बीमारियों को नष्ट करता है।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक अवस्थानुसार।

लाभकारी अनुपान—नये बुखार में अदरख का रस या परवल का रस और शहद। मियादी बुखार में पान का रस और शहद। सन्निपात में ब्राह्मी रस के साथ। निमूनिया में अडूसे का रस और शहद। मोतीझरा में शहद और लौंग का काढ़ा। मलेरिया बुखार में करंज का चूर्ण और शहद। पुराने बुखार में पीपल का चूर्ण या शेफाली रस और शहद। ज्वरातिसार में शहद और सोंठ का पानी। आँव के दस्तों मे बिल्व (बेल) की गिरी का चूर्ण और शहद। खून के दस्तों में कूड़े की छाल का काढ़ा और शहद। पतले दस्तों में जीरे का चूर्ण और शहद। पुराने दस्तों में चावल का धोवन और शहद। संग्रहणी में जीरे का चूर्ण और शहद। बवासीर मे जमीकन्द का चूर्ण या निमोली का चूर्ण और शहद। खूनी बवासीर में नागकेशर का चूर्ण और शहद। अजीर्ण में अजवायन या सौंफ का अर्क और शहद। हैजे में प्याज का रस और शहद। कब्जियत में त्रिफला का पानी और शहद। अम्लपित्त में आँवले का पानी और शहद। पांडु (पीलिया) मे पुराने गुड़ के साथ। राजयक्ष्मा में सितोपलादि चूर्ण, गिलोय का सत्व या मुलेठी का सत्व अथवा बासक (अडूसा) का रस और शहद। खाँसी में कण्टकारी का रस या पान का रस और शहद। दमा में बेल के पत्ते का रस या अपामार्ग का रस और शहद। स्वरभंग में मुलेठी चूर्ण और शहद। अरुचि में नीबू का रस और शहद। मृगी मे वच का चूर्ण और शहद। पागलपन में कुष्मांडावलेह

या ब्राह्मी रस और शहद। वातव्याधि में एरंड की जड़ का रस और शहद। वातरक्त में गिलोय का रस और शहद। आमवात में शहद में खाकर ऊपर से सनाय, बड़ी हरें और अमलतास का काढ़ा पीना। वायुगोला में भुनी हुई हींग का चूर्ण और गर्म पानी। हृदय रोग में अर्जुन की छाल का चूर्ण और शहद। मूत्र-कृच्छ्र और मूत्राघात मे गोखरू का काढ़ा और शहद। सूजाक में जवाखार और गर्म पानी। पथरी में कुलथी की दाल का काढ़ा और शहद। प्रमेह (धातुस्राव) मे कच्ची हल्दी का रस या आँवले का रस अथवा नीमगिलोय का रस और शहद। मधुमेह में जामुन गुठली का चूर्ण और शहद। कृशता (दुर्बलता) में असगन्ध का चूर्ण और शहद। उदररोग और शोथ में शहद और शुद्ध रेंडी का तेल। गर्मी (आतशक) मे अनन्तमूल का काढ़ा और शहद। शीतला (चेचक) में करेले की पत्ती का रस और शहद। मुखरोग में गिलोय का रस और शहद। रक्तप्रदर मे अशोक की छाल का चूर्ण या उसमे पकाया हुआ दूध और शहद। सफेद प्रदर में चावल का धोवन या राल का चूर्ण और शहद। सूतिका रोग में शहद और दशमूल का काढ़ा। नाड़ी छूटने पर तुलसी का रस और शहद। कफरोग मे अदरख का रस और शहद। पित्त के रोग मे शहद, सौंफ और धनिया का पानी। ताकत बढ़ाने के लिये—बेदाना का रस, मलाई, मक्खन, अंगूर का रस, शतावरी का रस या पान का रस और शहद। स्तम्भन शक्ति के लिये—माजूफल का चूर्ण, जायफल का चूर्ण और शहद।

मूल्य—८०) रु० से लेकर १) रु० फी तोला तक कीमत मकरध्वज की देखी गई है। इसमें कुछ लोग बहुत ज्यादे कीमत लेते हैं और बहुतसे लोग साफ-साफ नकली चीज बेचते हैं। मकरध्वज के लिये पारद को बहुत ही शुद्ध करना होता है। विशुद्ध पारद के कारण ही मकरध्वज में गुण होते हैं। हिन्दुस्तान के सबसे बड़े डाक्टर कर्नल आर० एन० चोपरा ने रोगियों पर परीक्षा करके देखा है कि उत्तम मकरध्वज ही लाभ करता है। नकली चीज नुकसान करती है। हमारे मकरध्वज की एक खुराक ही चमत्कार दिखलाती है। वह अकारण नहीं दिखलाती, इसमें बहुत ही परिश्रम और खर्च किया जाता है। मकरध्वज बहुत उत्तम होने पर भी कीमत ज्यादा नहीं है।

**षड्गुणवलिजारित मकरध्वज** साधारण मकरध्वज के जो गुण ऊपर लिखे गये हैं, वे सब गुण अधिक मात्रा मे इसमें हैं। फर्क इतना ही है कि साधारण मकरध्वज दुगुने गन्धक से बनाया जाता है और यह छः गुणा गन्धक जारण करके बनाया जाता है, इसलिये इसमे चौगुने गुण हैं। यदि खर्च करने की शक्ति रोगी में हो तो इसका व्यवहार करना चाहिये, निश्चित रूप से फायदा होगा। अनुपान पहले लिखे जा चुके हैं।

**सिद्ध मकरध्वज** राजा, महाराजा और धनीमानी ही इसका व्यवहार कर सकते हैं। मकरध्वज के सम्पूर्ण गुण इसी मे पाये जाते हैं। इसके बनाने में जितना परिश्रम और धन खर्च होता है, उसको देखते हमारी कीमत बहुत कम है। सिद्ध मकरध्वज को २००) रु० तोला तक लोग बेचते थे। अब वह अन्धेर-खाता तो नहीं रहा, फिर भी दवा बहुत ही कीमती है। सिद्ध मकरध्वज अपना गुण निश्चय दिखलाता है, इसमें सन्देह करने की गुञ्जायश नहीं है। मात्रा और अनुपान मकरध्वज वाले ही हैं।

**मधु मकरध्वज** मकरध्वज को असली शहद के साथ एक घंटा खूब अच्छी तरह घोटकर खाना चाहिये, नहीं तो पूरा फायदा नहीं करता। हर रोगी के यहाँ बढ़िया और छोटी खरल का मिलना असम्भव-सा ही है। असली शहद भी बहुत जगह नहीं मिलता। इस कठिनाई से बचने के लिये हमने "मधु मकरध्वज" तैयार किया है। ७ खुराक मकरध्वज को २॥ तोला असली शहद मे दिनभर अच्छी तरह घोंटकर शीशी में भर दिया गया है। जल्दी के काम में १ खुराक रोगी को मधु मकरध्वज तुरन्त चटा दिया जा सकता है।

**चन्द्रोदय** जैसे बङ्गाल के कविराजों में मकरध्वज का प्रचार है, उसी तरह पश्चिमीय वैद्यसमाज में चन्द्रोदय का प्रचार है। वास्तव मे दोनों चीजें एक ही हैं, बनाने का भेद शीशी में है। मकरध्वज साधारण बोतल मे बनाते हैं और चन्द्रोदय आतसी शीशी में बनता है। आतसी शीशी भारी होने के कारण चन्द्रोदय में अग्नि अधिक देर देनी होती है—इसी कारण इसकी कीमत

मधु से। कास, श्वास और कफ रोगों में अदरख का रस और मधु से। मलेरिया तथा विषमज्वरों म तुलसी रस और मधु से।

**मल्ल सिन्दूर**
**(रसायनसार)**

संखिया और कज्जली का यह रासायनिक कल्प अत्यन्त और उष्णवीर्य है। पित्तप्रधान रोगों और पित्तप्रकृति के पुरुषों को इसकी बहुत हल्की मात्रा खास सौम्य औषधि के मिश्रण के साथ देनी चाहिये और ठंडा उपचार रखना चाहिये। वात और कफ के विकारों में यह तीर की तरह शरीर मे प्रवेश कर फौरन उत्तम फल दिखलाता है। जन्तुघ्न होने के कारण रक्त में घुसे हुये मलेरिया, हैजा, गर्मी आदि के कीटाणुओं को जल्दी नष्ट करता है। यह रक्तवाहिनियों में उत्तेजना पैदा करता और हृद्गति को बढ़ाता है, अतः ज्यादा बुखार में इसे न देना चाहिये। आतशक के लिये तो यह 'न्यू सल्वर्सन' का इन्जेक्शन ही है। आतशक या सूजाक के कारण होने वाले गठिया तथा अन्य उपद्रवों में इससे बहुत जल्दी लाभ होता है।

पक्षाघात, आमवात, धनुष्टङ्कार आदि सभी वातरोगों और कफ सम्बन्धी कास, श्वास- निमोनिया, उरस्तोय, डब्बा आदि रोगों में यह आशातीत लाभ करता है। शीताङ्ग और कफप्रधान सन्निपातों में इसकी एक ही मात्रा चमत्कार दिखलाती है। स्त्रियों के हिस्टीरिया रोग में इसका बड़ा जल्दी प्रभाव पड़ता है। एक सप्ताह में ही सब दौरे समाप्त हो जाते हैं। बुढ़ापे की दुर्बलता और पुराने दमे में मल्ल सिन्दूर अच्छा कार्य करता है। यह पाचक रस को ज्यादा पैदा करके खूब भूख लगाता है और मूत्राशय तथा शुक्रप्रणालियों की कमजोरी को दूर करके नवीन पौरुष उत्पन्न करता है। हस्तमैथुन से नामर्द हुये पुरुषों को यह जरूर देना चाहिये। हैजे और अजीर्णजन्य दस्तों के विष को यह जल्दी नष्ट कर देता है। पित्त-प्रमेहों को छोड़कर वात-कफ के सभी प्रमेहों में यह रसायन अच्छा गुण दिखलाता है। यह परम पौष्टिक और उत्तेजक रसायन है। अतः केवल बल-वीर्य वृद्धि के लिये भी इसका सेवन किया जाता है और थोड़े ही दिनों में चेहरे को सुर्ख बनाकर मैथुनशक्ति को बढ़ा देता है। इसके साथ प्रवालपिष्टी जैसी सौम्य औषध मिलाकर खिलाने से ज्यादा गर्मी भी नहीं मालूम होती।

मात्रा—चौथाई रत्ती से १ रत्ती तक।

लाभकारी अनुपान—मलेरिया, विपमज्वर में मधु और तुलसी का रस। आतशक और सूजाकजन्य वातविकारों में मंजिष्ठादि क्वाथ और मधु के साथ। पक्षाघात आदि वातविकारों में दशमूल क्वाथ और मधु से। कफ-वातजन्य सन्निपातों में अदरख रस के साथ। प्रमेह, बहुमूत्र और शुक्रक्षय में मधु के साथ। आतशक और उसके विकारों में अनन्तमूल के क्वाथ और शहद के साथ। निमोनिया आदि कफ रोगों में पान के रस और मधु के साथ।

## रस सिन्दूर ( रसेन्द्रसारसंग्रह )

गुण धर्म के हिसाब से यह उष्णवीर्य रसायन है। रक्तगति को बढ़ाना, रक्तगत दोषों को नष्ट करना और हृदय को बल देना इसका प्रधान कार्य है। पारद, गन्धक का यह कल्प शरीर के अंगों की क्रिया को बढ़ाता है। अनुपान भेद से सभी रोगों में इसका मिश्रण लाभ करता है। अकेला रससिन्दूर पित्तप्रधान रोगों में नहीं देना चाहिये और अगर देना ही आवश्यक हो तो इसके साथ कोई शीतवीर्य औषधि मिला देनी चाहिये। कफ के विकारों को यह जल्दी दूर करता है। रस, रक्त और मांसगत रोगों तथा श्वासेन्द्रिय के विकारों में यह अच्छा लाभ करता है। निमोनिया, उरस्तोय, संग्रहणी, पांडु, सन्निपात आदि में सहायक औषधि के साथ इसका मिश्रण देना चाहिये। बल, वीर्य की वृद्धि, रक्तशोधन आदि सभी कार्यों में इस रसायन का प्रयोग किया जा सकता है। शास्त्रों में इसके बहुत अनुपान बतलाये गये हैं। यहाँ खास-खास का उल्लेख कर दिया जाता है।

मात्रा—आधी रत्ती से एक रत्ती तक।

लाभकारी अनुपान—संग्रहणी, अतिसार और हैजे में सोंठ चूर्ण या भुने हुये जीरे तथा मधु के साथ। निमोनिया, उरस्तोय, शीतांग, कफदोष, अरुचि और सभी कफ-विकारों में पीपल चूर्ण और शहद से। हृदय रोगों में अर्जुन की छाल के रस और मधु के साथ। कास, श्वास और क्षय में अदरख का रस और मधु। वीर्यवृद्धि के लिये प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और बहुमूत्र में सतशिलाजीत, छोटी इलायची और धारोष्ण दूध से। उपदंश तथा रक्तरोगों में मंजिष्ठादि क्वाथ से।

## रजतसिन्दूर ( रसायनसार )

यह रजतगुणविशिष्ट उत्तम योगवाही रसायन है। जिन-जिन रोगों में रजत का प्रयोग होता है उन रोगों में यह रजत पारद के संयोग से निर्मित रसायन उससे अधिक लाभ करता है। धातुदौर्बल्य, मस्तिष्क एवं हृदय की दुर्बलता, कार्श्य, प्रमेह, मन्दाग्नि आदि की सिद्ध फलप्रद महौषधि है।

मात्रा और अनुपान—आधी से एक रत्ती अथवा रोगानुसार, मक्खन, मलाई, मधु, मिश्री आदि के साथ।

## शिलासिन्दूर ( रसायनसार )

नियमित रूप से कुछ दिनों तक इसका सेवन करने से कुष्ठ या खून खराबी से उत्पन्न हुये चर्मरोग आराम होते हैं। जाड़ा देकर आने वाला बुखार और शीताङ्गसन्निपात में इसके प्रयोग से बहुत लाभ होता है। गर्मी की मौसम की अपेक्षा जाड़े की मौसम में इसका सेवन करना अधिक हितकारी है।

मात्रा—एक से २ रत्ती तक, सुबह और शाम।

लाभकारी अनुपान—कुष्ठ रोग में बाकुची का चूर्ण डेढ़ माशा और मधु के साथ चाटकर ऊपर से खैर का काढ़ा पीना चाहिये। मलेरिया बुखार में बुखार आने के ६ घन्टा पहले दो-दो घन्टा के अन्तर से एक-एक खुराक तुलसीदल के रस और मधु के साथ सेवन करना चाहिये। शीताङ्गसन्निपात में पान के रस के साथ देना चाहिये।

## समीरपन्नग ( रसयोगसागर )

यह सन्निपात की उत्तम औषधि है। विशेषकर सन्धिक सन्निपात के लिये यह बहुत उपकारी है। कफ के बढ़ जाने पर इसका प्रयोग बड़ा काम करता है। शीताङ्गसन्निपात में नाड़ी की गति क्षीण हो जाने पर इसकी एक-दो खुराक से ही आशाजनक लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—आधी रत्ती से २ रत्ती तक पान के रस और मधु के साथ, सुबह-शाम या रोग की अवस्थानुसार।

**सुवर्ण समीरपन्नग** यह साधारण समीरपन्नग की अपेक्षा विशेष गुण-दायक है। गुण, मात्रा और अनुपान साधारण की तरह ही है।

## सुवर्णराजवंगेश्वर [स्वर्णवंग] (भैषज्यरत्नावली)

यह वंग भस्म का रासायनिक कल्प बल, वीर्यवर्द्धक, उत्तेजक और वंग के सारे गुणों से युक्त है। स्वर्णवंग का विशेष प्रभाव शुक्राशय, मूत्रपिंड और वीर्य-वाहिनियों पर होता है। अतः यह प्रमेह, नामर्दी, शीघ्रपतन, शुक्रस्राव आदि मूत्र और वीर्यविकारों को जल्दी ठीक कर देता है। जीर्ण सूजाक और श्वेत प्रदर में इससे अच्छा लाभ होता है। सूजाक से उत्पन्न हुई नपुँसकता तथा स्त्री-पुरुषों की जननेन्द्रियों के सभी विकार इस रसायन से दूर हो जाते हैं। स्त्रियों के सोमरोग और अस्थिस्राव तथा श्वेतप्रदरजन्य क्षय में इसका लाभजनक प्रभाव होता है तथा वीर्य बनाकर यह शरीर को पुष्ट और स्फूर्तिशील बना देता है। आजकल के स्त्री-पुरुषों को तो साल में एक बार इस रसायन का सेवन जरूर ही करना चाहिये।

मात्रा—एक से २ रत्ती तक।

लाभकारी अनुपान—प्रमेह, नामर्दी, शुक्रस्राव और श्वेतप्रदर में दो रत्ती शिलाजीत मिलाकर मलाई में चाटें। मूत्रकृच्छ्र तथा सूजाक के विकारों में इलायची का चूर्ण मिलाकर धारोष्ण दूध से। ताकत के लिये मलाई में मिलाकर।

**स्वर्ण सिन्दूर (रसायनसार)** यह स्नायविक (मस्तिष्क सम्बन्धी) दुर्बलता के लिये बड़ा उत्तम रसायन है। अनुपान भेद से मकरध्वज की तरह यह अनेक रोगों में फायदा पहुँचाता है। इसके सेवन से बल, वीर्य, स्मरणशक्ति और कांति बढ़ती है। साधारणज्वर, सन्निपातज्वर, सर्दी, जुकाम, खाँसी, मन्दाग्नि, संग्रहणी, अम्लपित्त, प्रमेह, सूतिका रोग आदि में यह बहुत अच्छा लाभ दिखाता है। इसके नियमित सेवन से धातु सम्बन्धी अनेक रोग अच्छे होते हैं। किसी रोग के बाद की कमजोरी और बुढ़ापे की दुर्बलता को दूर करने के लिये यह बहुत फायदेमन्द है। साधारण कमजोरी को मिटाने के लिये भी यह बहुत अच्छा है।

मात्रा—१ रत्ती मधु मे अच्छी तरह से घोंटकर चाटना चाहिये।

लाभकारी अनुपान—बुखार में पीपल के चूर्ण और शहद के साथ। सर्दी-जुकाम में अदरख के रस और शहद के साथ। खाँसी में अडूसे का रस और शहद के साथ। संग्रहणी में भुने हुये जीरे का चूर्ण और शहद से। प्रमेह में शतावरी का रस और शहद के साथ।

**व्याधिहरण रसायन**
**( वसन्न राजीयम् )**

यह नये पुराने सब प्रकार के उपदंश (आतशक) और उससे पैदा होने वाले रक्तविकार, सन्धिवात, गठिया, कुष्ठ, नासा एवं मुख व्रण, नाड़ी व्रण, अस्थिगत व्रण, वालों का गिरना, निद्रानाश, नाखून का टेढ़ा होना, पांडु, नेत्र-विकार, वृक्कशोथ, अंडवृद्धि एवं शोथ, चकत्ते पड़ना, गुदशूक ( गुदा पर अंकुर निकलना), गांठ हो जाना आदि उपद्रवों की सर्वोत्कृष्ट महौपधि है। उपदंश का विप जीर्ण होकर हड्डी तक पहुंच गया हो तो भी थोड़े ही दिनों तक इस रसायन के सेवन से व्याधि नष्ट होकर शरीर नीरोग एवं स्वस्थ वन जाता है। उपदंश का प्रभाव गर्भ, गर्भाशय एवं सन्तानों पर भी होता है। इसलिये विविध चर्म रोग, अस्थि एवं मांसगत रोग, यकृत् वृद्धि, ग्रन्थि वृद्धि आदि रोग हो जाते हैं। इनकी उत्पत्ति रोकने के लिये उपदंश होते ही इस रसायन के व्यवहार करने से भविष्य मे उपदंश के कोई उपद्रव नहीं होते। यह रसायन उपदंश विषघ्न एवं बल्य है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ रत्ती तक दिन में दो वार, मधु या घृत अथवा नागरवेल पान रस और शहद के साथ।

# रस-रसायन योग

आयुर्वेदीय चिकित्सा में रसों का बहुत उच्च स्थान है। वैद्यों के पास रस-चिकित्सा न होती तो इस डाक्टरी चिकित्सा के सामने ठहरना कठिन था। यदि वैद्य के पास प्रधान-प्रधान रस न हों तो उसे शस्त्रहीन योद्धा कहना चाहिये। रस-वैद्यों को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। रस अल्प मात्रा एक-दो रत्ती से ही तत्काल

लाभ दिखलाते हैं और इससे अरुचि भी नहीं होती। रसों में प्रधान पारद या हिंगुल है। हमारे यहां प्रत्येक रस में षड्गुणवलिजारित पारद डाला जाता है, जिसका महत्व सभी चिकित्सक जानते हैं। बाजारू हिंगुल का प्रयोग हमारे यहां नहीं होता। हम काशी विश्वविद्यालय से खनिज हिंगुल मंगाकर रसों में डालते हैं। रसों में पड़ने वाली भस्मों की उत्तमता भस्मों के प्रकरण में देखिये।

**सेवन विधि**—प्रत्येक रस की मात्रा अवस्थानुसार। बच्चों को चौथाई गोली की मात्रा देनी चाहिये। गोली को पत्थर की छोटी खरल में महीन पीसकर शहद में १५ मिनट घोंटना चाहिये। फिर अनुपान की वस्तु मिलाकर चाट लेना चाहिये। अनुपान, मात्रा और गुण प्रत्येक रसों के सामने लिखे गये हैं।

## अगस्तिसूतराज रस
### (योगरत्नाकर)

अतिसार, अजीर्ण, मन्दाग्नि और संग्रहणी में बहुत उपयोगी है। पुराने आमातिसार में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। इस रस का विशेष गुण संग्राही है।

**मात्रा और अनुपान**—एक-एक गोली सुबह-शाम या रोगानुसार, चावल के पानी, बेल के मुरब्बा, नागरमोथा के रस आदि से।

## अग्निकुमार रस
### (भैषज्यरत्नावली)

शरीर की पाचक-अग्नि के मन्द होने से अजीर्ण, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कब्ज आदि रोगों में अग्निकुमार रस के सेवन से अच्छा लाभ होता है। आँतों में मल इकट्ठा होना, पेट में दर्द होना तथा पेट भारी रहना, टट्टी पतली होना आदि शिकायतें इसके सेवन से बहुत जल्दी मिट जाती हैं। अग्नि को प्रदीप्त करने के लिये तथा अजीर्ण को मिटाने के लिये यह रस अच्छा काम करता है।

**मात्रा**—एक गोली, दिन-रात में २ से ६ गोली तक ले सकते हैं।

**लाभकारी अनुपान**—अजीर्ण, मन्दाग्नि में एक छटांक गरम जल में आधा नीबू निचोड़कर उस पानी से लेना। संग्रहणी में भुना जीरा और मधु से।

**अग्नितुण्डी वटी ( रस )**
**( भैषज्यरत्नावली )**

यह दीपन, पाचन और वातनाशक औषध है। इसमें १ रत्ती में आधा रत्ती कुचला है अतः ज्यादा दिन तक इसका सेवन नहीं करना चाहिये। स्नायुमण्डल, वातवाहिनी और मूत्र-पिंड पर इसका असर होता है। मन्दाग्नि, आध्मान, अजीर्ण, स्वप्नदोष और शूल पर इसका सुन्दर प्रभाव होता है। यह हृदय को बल देती और बल की वृद्धि भी करती है। नवीन वातरोगों में इसे नहीं देना चाहिये। कृमि रोग इससे नष्ट होता है और रोग के कारण हुई अशक्ति दूर होती है।

मात्रा और अनुपान—एक से दो गोली तक, गर्म जल या दूध के साथ।

**अग्निसंदीपन रस**
**(भैषज्यरत्नावली)**

इस अग्निप्रदीपक दवा के सेवन से मन्द हुई अग्नि फिर से चैतन्य होने लगती है। गरिष्ट भोजन या अधिक भोजन करने से अजीर्ण हो गया हो तो अग्निसंदीपन की एक-दो खुराक खा लेने से भोजन जल्दी पच जाता है। अम्ल-पित्त में अग्निसंदीपन के सेवन से मुँह से खट्टा व कड़वा पानी आना बन्द हो जाता है और अन्न का परिपाक भलीभाँति होने लगता है। पेटदर्द में दर्द को कम करने के लिये वायुनाशक अनुपान से अग्निसंदीपन का प्रयोग करने से अच्छा असर होता है।

मात्रा—एक से तीन गोली तक सुबह-शाम।

लाभकारी अनुपान—अजीर्ण, मन्दाग्नि में आधे नींबू का रस मिलाये हुये गरम जल से। अम्लपित्त में धनियां के काढ़े से। पेटदर्द में अजवायन के अर्क या अजवायन के काढ़े से।

**अजीर्णकंटक रस**
**( भावप्रकाश )**

अधिक भोजन या गरिष्ठ, बासी आदि भोजन करने से उत्पन्न अजीर्ण, मन्दाग्नि, कब्ज आदि इसके सेवन से नष्ट होते हैं। यह मन्दाग्नि को नष्ट कर जठराग्नि की वृद्धि करता है। इसकी दो-तीन खुराक खाने से भूख खूब खुलकर लगती है और भोजन ठीक पचने लगता है। अजीर्ण को मिटाने के लिये इसका प्रयोग श्रेष्ठ है।

मात्रा और अनुपान—एक-दो गोली तक, सुबह-शाम या भोजन के बाद आधा कागजी नीबू का रस मिलाये हुये गरम जल से अथवा केवल ताजा जल से।

**अजीर्णारि रस**
**(बृ० निघंटुरत्नाकर)**

यह पाचक, दीपक एवं रेचक है। इसके व्यवहार से मन्दाग्नि, अजीर्ण, कब्जियत, आफरा आदि दूर होकर अग्नि की वृद्धि होती है और अधिक खाया हुआ पदार्थ भी अच्छी तरह हजम हो जाता है। अजीर्ण के लिये उत्तम दवा है।

मात्रा और अनुपान—एक से तीन गोली तक, नीबू रस और जल या केवल जल के साथ।

**अर्धनारीनटेश्वर**
**( रसेन्द्रसारसंग्रह )**

यह सन्निपात, तन्द्रा, अनिद्रा, शिरःशूल, कास, श्वास, मूर्च्छा, कफ की प्रबलता आदि में नस्य देने से शीघ्र लाभ करता है। मात्रा—एक-दो रत्ती तक

**अमरसुन्दरी वटी ( रस )**
**(योगचिन्तामणि)**

अमरसुन्दरी ८० प्रकार के वातरोगों की प्रसिद्ध दवा है। उन्माद, मृगी, श्वास, खाँसी, बवासीर और सन्निपात में इस दवा के प्रयोग से अच्छा लाभ होता है। पेट में वायु भर जाने से पेट फूल जाता है, उस समय अमरसुन्दरी की एक-दो गोली खाने से तत्काल लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—एक गोली से तीन गोली तक गरम जल से।

**अमीर रस**
**( सिद्धभेषजमणिमाला )**

रसकपूर, हिंगुल, दालचिकना—इन तीन प्रधान चीजों के कारण अमीर रस आतशक और उसके उपद्रवों के लिये रामबाण औषध है। यह तीव्र रक्तशोधक है, अतः आतशक के कीटाणुओं को जल्दी नष्ट करता है। रक्तवाहिनियों के विक्षोभ को दूर करने के कारण यह अर्धाङ्ग और सन्धिगत वातविकार को भी दूर करता है। वात और कफ प्रकृति के लोगों के सूजाक में भी इससे लाभ पहुंचता है। गर्मी (आतशक) की सभी दशाओं और उसके कारण होने वाले उपद्रवों में यह बहुत ही अच्छी दवा है।

मात्रा और अनुपान—आधी रत्ती से दो रत्ती तक, बीज निकाली हुई मुनक्का में रखकर निगल जाय। सुबह-शाम दिन में दो बार। दवा दांतों से नहीं

छूने पावे। दूध और चने की रोटी, मिश्री, हलुआ केवल तीन चीजें खानी चाहियें। सूजाक या आतशक के कारण होने वाले गठिया या अन्य वातविकारों में मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ अमीर रस देना चाहिये। दवा सेवन के समय नमक, मिर्चा आदि का पूरा परहेज रक्खें वर्ना हानि होती है।

**अमृतार्णव रस (भैषज्यरत्नावली)** यह दवा अतिसार (पतले दस्त होना), संग्रहणी, बवासीर, अम्लपित्त और मन्दाग्नि आदि रोगों में बहुत फायदेमन्द है। गुल्म, कास आदि में भी लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—एक गोली, दिन-रात में दो से ४ गोली तक। धनियां और भुना जीरा के चूर्ण या चावल के पानी के साथ।

**अश्विनीकुमार रस (अनुपानतरङ्गिणी)** पेट की वायु विगड़ जाने से होने वाले उदररोगों में और शीत (जाड़ा) लगकर आने वाले बुखार में तथा वायु के अन्य विकारों में इस रस का उपयोग किया जाता है।

मात्रा और अनुपान—एक-एक गोली, वायु के विकारों में सुबह और रात में सोते समय। शीतज्वर उतर जाने पर चार-चार घन्टा बाद ताजा जल या रोगानुसार।

**अश्वकंचुकी रस (योगचिन्तामणि)** जीर्णज्वर, अजीर्ण, पेट में दर्द होना, गुल्म, आमवात आदि रोगों में जुलाब लेने की आवश्यकता होती है या पेट में धीरे-धीरे मल इकट्ठा होने पर आश्विन, कार्तिक और चैत्र में जुलाब लेना चाहिये। जैपाल मिश्रित होने के कारण अश्वकंचुकी जुलाब के लिये अच्छी दवा है।

मात्रा—एक गोली से चार गोली तक चीनी के साथ रात में सोते समय या सवेरे ४ बजे लेना और ऊपर से चीनी या मिश्री मिला जल पीना। पेट साफ हो जाने पर करीब १०-११ बजे चावल और मूंग की खिचड़ी घी डालकर खाना चाहिये, इससे जुलाब अच्छा लगता है।

**अर्शकुठार रस**
**(रसेन्द्रसारसंग्रह)**

बवासीर में अर्शकुठार रस के सेवन से अच्छा लाभ होता है। यदि बवासीर अधिक पुराना नहीं हो तो मस्से जल्दी ही सूख जाते हैं। बवासीर में प्रायः कब्ज रहने से टट्टी जाते समय बहुत तकलीफ होती है, किन्तु इसके सेवन से कब्ज नहीं रहने पाती और पेट साफ रहता है।

मात्रा और अनुपान—एक-एक गोली सुबह-शाम ताजे जल से।

**आनन्दभैरव रस**
**( रसेन्द्रसारसंग्रह )**

आनन्दभैरव रस हर तरह के बुखार में दिया जाता है। मामूली बुखार में सुबह-शाम एक-एक गोली चाटने से फायदा होता है। जिस समय बुखार का बहुत जोर हो और कम न होने के कारण रोगी को कष्ट हो रहा हो, उस समय एक गोली आनन्दभैरव रस, एक तोला अदरख का रस और एक तोला मधु में मिलाकर चार-चार घन्टा बाद चाटने से बुखार का वेग कम हो जाता है। सर्दी, जुकाम हो जाने पर पान के रस में एक गोली मिलाकर चार-चार घन्टा बाद चाटना चाहिये।

मात्रा और अनुपान–१ से २ गोली तक पान या अदरख के रस और मधु से।

**आनन्दभैरव रस (कास)**
**( रसराज सुन्दर )**

खांसी, श्वास और कफ के विकारों में इससे अच्छा लाभ होता है। सन्निपात ज्वर, गुल्म रोग तथा संग्रहणी में भी इसका उपयोग किया जाता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक (आवश्यकतानुसार सन्निपात में ३ गोली भी दी जा सकती है)। समय—दिन में ३ से ४ बार तक। अदरख का रस और शहद या रोगानुसार।

**आमवातारि रस**
**(भैषज्यरत्नावली)**

आमवात रोग में, जिस समय हाथ-पैरों में या सारे बदन में सूजन हो गई हो, उस समय इस दवा के प्रयोग से अच्छा लाभ होता है।

**मात्रा और अनुपान**—एक से तीन गोली तक सवेरे-शाम रेंडी के तेल मे मिलाकर पीना और ऊपर से गरम जल पीना। जब तक दवा खायी जाय तब तक गरम जल पीना चाहिये।

**आरोग्यवर्द्धिनी (रसरत्नसमुच्चय)** यकृत् के खराब हो जाने पर रक्त बनने की क्रिया ठीक नहीं होती, जिससे शरीर पीला पड़ने लगता है तथा कमजोरी बढ़ने लगती है। उस समय आरोग्यवर्द्धिनी के सेवन से अच्छा लाभ होता है। यद्यपि शास्त्र में यह दवा कुष्ठ रोग में लिखी है, किन्तु इसका प्रभाव यकृत् पर ही अच्छा पड़ता है। कृमि रोगों के लिये भी यह फायदेमन्द है।

**मात्रा और अनुपान**—एक गोली से तीन गोली तक, दिन में दो बार त्रिफला के पानी के साथ।

**आमलकी रसायन** उत्तम आमले के चूर्ण को १०० बार ताजे आँवले के रस में भावना देकर बनाया जाता है। चरक आदि प्राचीन शास्त्रों में लिखा हुआ नुस्खा है। हमारी क्या बड़े-से-बड़े विद्वान् वैद्यराजों की सम्मति में भारतवासियों के लिये यह सर्वोत्तम धातुपुष्टि की दवा है। बहुत रोगियों पर परीक्षा करके देखा गया है कि आमलकी रसायन धातुपुष्टि के लिये अमृतसमान है। नियमपूर्वक सेवन करने से धातु के तमाम दोष दूर होकर वीर्य पुष्ट और निर्दोष हो जाता है। शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन, स्वप्नदोष, स्त्री-संग होते ही वीर्य का पतन, पेशाब में वीर्य का जाना, शरीर दुर्बल, दिमागी कमजोरी, सुस्ती, उदासी, कब्जियत, अम्लपित्त आदि रोग एकदम निर्मूल हो जाते हैं। दस्त साफ होता है एवं शरीर नीरोग हो जाता है। दिमागी ताकत बढ़ती है, कलेजे की गर्मी को मिटाने मे बेजोड़ है।

**मात्रा और अनुपान**—आधा तोला से एक तोला तक बराबर मिश्री मिलाकर सुबह-शाम दो बार दूध या पानी के साथ।

**इच्छाभेदी रस (रसेन्द्रसारसंग्रह)** रोगी की इच्छा के अनुसार पेट की सफाई करने वाला यह रस तेज रेचक है। कफ और वात को दूर करता, आँतों में इकट्ठे हुये विकार को निकालता और शूल को नष्ट करता है। सभी रोगों की चिकित्सा के पहले पेट को साफ करना पड़ता है और यह कार्य

इससे हो जाता है। किन्तु इसमें जमालगोटा है, वह पेट में गर्मी लाता तथा कभी-कभी ज्यादा रेचन कर देता है, इसलिये नाजुक स्त्री-पुरुषों और बच्चों तथा गर्भवती स्त्रियों को यह नहीं देना चाहिये। ज्यादा रेचन होने पर दही या शर्बत पिलाना चाहिये और रेचन के बाद खिचड़ी और दही खाना चाहिये।

मात्रा—१ से २ गोली तक जल के साथ।

**उन्मत्त रस**
(रससंकेत कलिका)

यह औषधि खाने की नहीं है, नाक में नस्य के समान सूंघने की है। सन्निपात ज्वर में, संज्ञाहीन, बेसुध होनेपर तथा तन्द्रा यानी आँखों की झपझपी होने पर और अपस्मार आदि रोगों में संज्ञाहीन होने पर इस दवा का उपयोग किया जाता है।

उपयोग-विधि—आवश्यकता के समय रोगी को यह दवा नाक द्वारा नस्य की तरह सुँघानी चाहिये।

**उन्मादगजांकुश रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह वातादि त्रिदोषजन्य उन्माद (पागलपन), अपस्मार, मृगी आदि की श्रेष्ठ दवा है। दिमाग की कमजोरी से होने वाले रोग—मूर्च्छा, बेहोशी, हिस्टीरिया, अनिद्रा आदि रोग इसके सेवन से नष्ट होते हैं। भूतोन्माद, प्रेत पिशाचादिजन्य पागलपन के लिये भी इसका प्रयोग अच्छा काम करता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम दो बार। विषम भाग शहद और घी अथवा ब्राह्मी घृत के साथ।

**एकांगवीर रस**
(बृ० निघंटुरत्नाकर)

इसके सेवन से पक्षाघात (लकवा) अर्दितवात, गृध्रसी, एकांग-वात, अपबाहुवात तथा समस्त वातविकारों में लाभ होता है, किन्तु पक्षाघात में, इसका विशेष उपयोग किया जाता है। इस रस में कान्त, लौह भस्म आदि उत्तम जल्दी फायदा करने वाली दवाओं का योग होने से यह दवा वातरोगों में निश्चित फायदा करती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम, शहद या वातनाशक काढ़ा से।

**कनकसुन्दर रस**
**(योगचिन्तामणि)**

अतिसार, संग्रहणी और ज्वरातिसार में इस रस का उपयोग होता है। यह अग्निदीपक और वेदनानाशक है। उष्णवीर्य होने के कारण पित्तप्रधान रोग में इसका मिश्रण किसी सौम्य औषध के साथ देना चाहिये। संग्रहणी और अतिसार में आम दोष न हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये। इस रस के द्वारा शरीरस्थित वेदना दूर होती है और पाचक पित्त पर्याप्त बनता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ गोली दिन में दो बार। जल, मट्ठा या सौंफ का अर्क।

**कर्पूर रस**
**(भैषज्यरत्नावली)**

कर्पूर, हिंगुल और अफीम के मिश्रण के कारण यह अतिसार के दस्तों में अच्छा लाभ करता है। पेचिश में दही के साथ जल्दी लाभ करता है, किन्तु इसके देने के पहले एरण्ड तैल से पेट का आँव निकाल देना चाहिये। निराम दस्तों और खूनी दस्तों में इसका अच्छा कार्य होता है। संग्रहणी में भी कर्पूर रस का मिश्रण हितकर होता है।

सेवन विधि—१ गोली, जायफल के घिसे पानी और मधु से या सौंफ के अर्क से ४-४ घण्टा बाद।

**कफकर्त्तरि**
**(स्वनिर्मित)**

यह कफ को काटकर बाहर निकाल देती है, इसी से इसका नाम कफकर्त्तरि रक्खा है। पान में १ चुटकी ( २ रत्ती ) डालकर धीरे-धीरे चबाकर पेट में पहुंचाना चाहिये। इससे दमा का दौरा शान्त हो जाता है और जरासा खाँसते ही रुका हुआ कफ बाहर निकल आता है। जमे हुये कफ को निकालने के लिये इसका प्रयोग करना चाहिये। दमा का दौरा भी इससे बन्द होता है।

सेवन विधि—२ रत्ती दिन में २-३ बार पान में डालकर खाना चाहिये।

**कफकेतु रस**
**(भैषज्यरत्नावली)**

कफजन्य बुखार, खाँसी, श्वास और जुकाम में इस दवा से बहुत लाभ होता है। कफ के विकारों में, सिरदर्द और कण्ठ में कफ जमा हो जाने पर इस दवा का सेवन बहुत उपकारी है।

मात्रा—एक-दो गोली चार-चार घन्टा बाद, अदरख का रस और मधु से।

**कफचिन्तामणि**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

इसके सेवन से सब प्रकार के कफ और वात रोग नष्ट होते हैं। कफाधिक्य होने पर अन्य औषधियों की अपेक्षा इसका व्यवहार शीघ्र फलप्रद होता है।

मात्रा और अनुपान—एक गोली से तीन गोली तक रोगानुसार, आर्दा रस और मधु के साथ।

**कल्पतरु रस**
(भावप्रकाश)

यह रस खाने और सूंघने दोनों कामों में आता है। इसके सेवन से वात-कफज्वर—वायु और कफ से पैदा हुआ बुखार, खाँसी, श्वास, सर्दी, जुकाम एवं बुखार में अङ्गों का जकड़ना तथा दर्द होना, मुख-नाक से लार और पानी का टपकना, अग्निमांद्य, अरुचि आदि रोग नष्ट होते हैं। इसका नस्य देने से कफ एवं वायु से उत्पन्न सिर की पीड़ा दूर होती है। मूर्च्छा, प्रलाप, बेहोशी, छींक की रुकावट आदि में इसका नस्य प्रयोग बहुत फायदेमन्द होता है।

मात्रा और अनुपान—२-२ रत्ती सुबह-शाम या रोगानुसार, आर्दा रस और मधु से।

**कल्याणसुन्दर रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, अभ्र आदि उत्कृष्ट उपादानों के कारण यह उत्तम रसायन है। फेफड़े के विकारों पर इस रस का बहुत अच्छा प्रभाव होता है। निमोनिया और उरस्तोय में संचित कफ और जल का शोषण करके यह सब उपद्रवों को नष्ट करता है। यह हृदय और मस्तिष्क को बल देता है तथा इनके विकारों, शूल, भ्रम, मूर्च्छा, सन्यास आदि को दूर करता है। सूखी खाँसी, श्वास, अरुचि, मन्दाग्नि तथा मूत्र-पिण्ड के विकार भी इससे नष्ट होते हैं। प्रमेह, नपुंसकता और बल-वृद्धि के लिये भी यह अच्छी दवा है। मात्रा—१-१ गोली।

लाभकारी अनुपान—फुफ्फुस विकारों में मधु और अदरख के रस के साथ। प्रमेह-धातु-क्षीणता में धारोष्ण दूध। हृदय और मस्तिष्क के रोगों में सेब या आँवले के मुरब्बे के साथ।

**कस्तूरीभैरव रस**
(भैषज्यरत्नावली)

हिंगुल और कस्तूरी इन दो प्रधान उपादानों के कारण यह रस वात, कफ के विकारों में बड़ा सुन्दर कार्य करता है। जीर्णज्वर मे यह अच्छा लाभ करता है। मन्थर ज्वर में तो अकेला कस्तूरीभैरव रोग के उपद्रवों को भी नहीं बढ़ने देता और आसानी से दाने निकाल देता है। अर्थात् जैसे कठिन वात रोगों में इसका अच्छा प्रभाव देखा जाता है। सन्निपात से प्रलाप, शीतांग, अनिद्रा, वातकोप आदि को यह ठीक करता है और स्त्रियों के हिस्टीरिया रोग में भी विचित्र प्रभाव दिखलाता है। प्रसूत के सभी विकारों में इसका अच्छा असर होता है। रसायन होने के कारण कमजोर स्त्री-पुरुषों के शरीर में बल-वीर्य की वृद्धि भी करता है। पित्त प्रकृति वाले स्त्री-पुरुषों और पित्त-प्रधान रोगों में इसकी कम मात्रा किसी सौम्य औषधि के साथ देनी चाहिये। मात्रा—एक गोली।

लाभकारी अनुपान—सन्निपात, मन्थरज्वर और वातविकार में अदरख रस के साथ। अर्दित में रास्नादि क्वाथ के साथ। बलवृद्धि के लिये दूध के साथ।

**कस्तूरीभैरव रस बृ०**
(भैषज्यरत्नावली)

यह रस सोना, मोती, प्रवाल, कस्तूरी आदि गुणकारी बहुमूल्य औषधियों के योग से बनाया जाता है। इसलिये स्वल्प कस्तूरीभैरव से विशेष गुणकारी है। सन्निपात के समय हृदय की कमजोरी को ठीक करने के लिये इस दवा से बहुत लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—एक गोली। सन्निपात ज्वर में अदरख के रस से। आमातिसार में बेलगिरी का चूर्ण और मधु से।

**कस्तूरीभूषण रस**
(भैषज्यरत्नावली)

त्रिदोष (सन्निपात) ज्वर में जिस समय हाथ-पैर ठंढे हो रहे हों या नाड़ी की गति क्षीण होती जा रही हो, उस समय कस्तूरीभूषण रस देने से नाड़ी की गति ठीक होती है और पैर भी गरम होने लगते हैं। सन्निपातज्वर में अवस्था के अनुसार दूसरी औषधियों का प्रयोग तो करते ही रहें, किन्तु साथ-साथ कस्तूरीभूषण रस का भी प्रयोग करना चाहिये, जिससे नये उपद्रव नहीं बढ़ने पावें। सूजनयुक्त विषमज्वर में और कास-श्वास में भी इसके सेवन से लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—एक गोली अदरख के रस और मधु से दिन में दो बार, सुबह-शाम या अवस्था के अनुसार दो-दो, तीन-तीन घण्टे बाद।

**क्रव्याद रस**
**(भैषज्यरत्नावली)**

यह परम पाचक और अग्निदीपक महौषधि है। पेट, तिल्ली, जिगर और फेफड़े के रोगों में इससे बहुत लाभ होता है। आम और कफ को यह जल्दी पचाकर पाचनशक्ति को सबल बना देता है। अजीर्ण, हैजा, गुल्म, आफरा और अरुचि में यह बहुत जल्दी लाभ करता है। भूख की शिकायत रहने वालों के लिये यह हितकर दवा है। जलोदर में भी इसका मिश्रण लाभदायक होता है।

मात्रा और अनुपान—दो से चार गोली तक। बिजोरे नींबू का रस, मट्ठा, या साधारण जल से।

**कृमिकुठार रस**
**(रसराजसुन्दर)**

यह दवा कृमि रोग (पेट में कीड़े पड़ जाना) में बहुत फायदेमन्द है। विशेषकर बच्चों को यह रोग ज्यादा होता है, जिससे बच्चे पीले पड़ जाते हैं। उस समय इस दवा का उपयोग करना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—एक से दो गोली, बच्चों को आधी गोली सुबह और शाम धतूरे के पत्तों का रस और शहद से या खुरासानी अजवायन के काढ़े से।

**कामदुधा रस**
**(रसयोगसागर)**

रक्तपित्त, रक्तप्रदर, भ्रम, उन्माद, अम्लपित्त और सोमरोग में फायदेमन्द है। पित्त के विकार में और नाक, मुँह, गुदा, योनि आदि से रक्त गिरता हो तो इस दवा का अवश्य उपयोग करना चाहिये।

मात्रा—२ से ४ रत्ती, सुबह और शाम।

लाभकारी अनुपान—मिश्री मिला हुआ गाय का दूध या चावलों के पानी से। पित्तविकारों में घी, मिश्री या मिश्री मिला हुआ दूध या आंवलों के मुरब्बा से। नाक, मुँह आदि से खून गिरने पर हरी दूब (घास) का रस २॥ तोला से एक छटाँक तक के साथ।*

**कामधेनु रस** (भैषज्यरत्नावली) यह बल, वीर्यवर्द्धक, कामोद्दीपक, पुष्टिकर रसायन है। इसके सेवन से प्रमेह, विशेषकर शुक्रमेह, ध्वजभंग आदि रोग नष्ट होकर शरीर में प्रचुर कामशक्ति पैदा होती है। वीर्य की कमी से उत्पन्न नपुँसकता, इन्द्रिय की शिथिलता, सुस्ती आदि इससे बहुत जल्द ठीक हो जाती है। यह शुक्र को गाढ़ा कर नवयौवन प्रदान करता है।

मात्रा और अनुपान—एक-दो गोली सुबह-शाम, कसेरू स्वरस और मधु अथवा विषमभाग घी और मधु से चाटकर ऊपर से मिश्री मिला गर्म दूध इच्छानुसार पीना।

**कामिनीविद्रावण रस** (भैषज्यरत्नावली) यह वीर्य की रुकावट पैदा करता है। शीघ्र वीर्य-पतन वालों के लिये लाभदायक है। यह ध्यान रखने लायक बात है कि इसमें तीसरा भाग अफीम का है। इससे दस्त की कब्जियत हो तो सुबह गर्म दूध पीना चाहिये।

समय और अनुपान—रात्रि में सम्भोग के दो-तीन घन्टा पहले ज्यादे औंटा हुआ दूध मिश्री या चीनी मिलाकर।

**कालकूट रस** (वैद्यचिन्तामणि) सन्निपातज्वर, ग्रन्थिक सन्निपात और शीतज्वर में इस रस का उपयोग किया जाता है। तीव्र वातविकार और मूर्च्छा आदि रोगों में भी फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम अदरख रस या रोगानुसार।

**कालारि रस** (योगचिन्तामणि) यह सब प्रकार के वात और कफ ज्वर, सन्निपात, विषम ज्वर आदि की श्रेष्ठ दवा है। सन्निपात की प्रलापावस्था में इसका प्रयोग सत्वर लाभ करता है। मलेरिया के लिये इसका प्रयोग कुनैन की जगह काम देता है।

मात्रा—एक गोली से २ गोली तक रोगानुसार।

लाभकारी अनुपान—वात और कफज्वर में आदी और तुलसी रस, मधु या ७ से २१ लौंग का अर्धावशेष काढ़ा के साथ। सन्निपात ज्वर में तगरादि क्वाथ के साथ या ब्राह्मी, शङ्खपुष्पी, जटामांसी प्रत्येक तीन माशे, लौंग ७ नग के

काढ़ा के साथ। विषमज्वर में जायफल चूर्ण १॥ माशा के साथ देकर दूध पिलाना या निम्बपत्र स्वरसपुटी गोदन्ती भस्म एक माशा के साथ।

**कुमारकल्याण रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, मोती, रससिन्दूर आदि कीमती चीजों से तैयार हुये इस रस का यथा नाम तथा गुण है। हृदय, फुफ्फुस, मस्तिष्क, ज्ञानेन्द्रिय, यकृत्, उदर, मूत्रपिण्ड आदि सभी अङ्गों के विकार को नष्ट करके यह शरीर को पुष्ट बनाता है। बालकों के सभी रोग कास, श्वास, क्षय, संग्रहणी, डब्बा, वमन आदि पर यह सुन्दर कार्य करता है। नीरोग बच्चों को भी यदि एक सप्ताह यह सेवन कराया जाय तो उन्हें पुष्ट बना देता और चेचक तथा मोतीझरे की बीमारी से बचाता है।

बच्चों की तरह यह बड़ों को भी दिया जा सकता है। उत्तम रसायन होने के साथ ही यह रस योगवाही भी है। शक्ति रक्षण के लिये दूसरी औषधियों के साथ यह प्रयोग किया जा सकता है। नपुंसकों को भी इससे उत्तम लाभ होता है।

**मात्रा**—बच्चों के लिये आधी गोली, माता के दूध अथवा वच तथा शहद के साथ। पूरी उम्र वालों के लिये १ गोली।

**लाभकारी अनुपान**—हृदय रोगों में अर्जुन चूर्ण के साथ। कफ, कास, श्वास, क्षय में पीपल चूर्ण और मधु के साथ। बल-वीर्यवृद्धि के लिये धारोष्ण दूध के साथ।

**कुष्ठकुठार रस**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

आयुर्वेद शास्त्र में कुष्ठ रोग को कष्टसाध्य एवं कहीं-कहीं असाध्य माना है। किन्तु फिर भी रोगनिवारण के लिये उपाय करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। कुष्ठ जैसी बीमारी के लिये जरूरी है कि अधिक समय तक दवा सेवन की जाय, किन्तु प्रायः देखा जाता है कि थोड़े दिन दवा खाने पर फायदा नहीं होने से रोगी निराश होकर दवा सेवन करना बन्द कर देता है। कुष्ठ रोग में कुष्ठकुठार रस के सेवन से अच्छा लाभ होता है, इसलिये इस रस को सेवन कर लाभ उठाना चाहिये।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली दिन में दो बार सुबह-शाम। बाकुची का चूर्ण और मधु से चाटना तथा ऊपर से खदिर (खैर) का काढ़ा पीना चाहिये।

**खञ्जनिकारि रस**
(सिद्धयोगसंग्रह)

मल्लसिन्दूर, रौप्य और विषमुष्टि (कुचिला) का यह महान् योग अत्यन्त उग्र एवं उष्णवीर्य है। इसके सेवन से पक्षाघात (लकवा), धनुष्टङ्कार, गठिया आदि पुराने से पुराने वातरोग आराम होते हैं। आतशक, सूजाक आदि के उपद्रव से पैदा हुये वातरोग के लिये भी रामवाण तुल्य काम करता है। यह वात और कफ सम्बन्धी कास, श्वास, निमोनिया, उरस्तोय, डब्बा, शीताङ्गसन्निपात आदि में लाभदायक है। पित्तज विकारों में इसका प्रयोग किसी सौम्य औषधि के साथ करना चाहिये।

**मात्रा औ' अनुपान**—१ से २ गोली सुबह-शाम गाय के दूध या दशमूल काढ़ा के साथ।

**गङ्गाधर रस**
(रसायनसार)

अतिसार (पतले दस्त लगने) की बीमारी में गङ्गाधर रस के सेवन से अच्छा लाभ होता है। खून के दस्त लगते हों या आंव के दस्त लगते हों तो भी इस दवा का प्रयोग किया जा सकता है, क्योंकि इस दवा में अफीम जैसी स्तम्भक कोई चीज नहीं दी जाती है।

**मात्रा**—१-२ गोली।

**लाभकारी अनुपान**—अतिसार मे छाछ के साथ। रक्तातिसार में कुड़े की छाल के काढ़े के साथ। आमातिसार में नागरमोथा के रस या काढ़े के साथ।

**गंडमालाकंडन रस**
(योगरत्नाकर)

गलकण्ड, गण्डमाला (कण्ठवेल), अपची और गांठ वाले फोड़ा-फुन्सियों पर इस दवा का अच्छा प्रभाव होता है। गण्डमाला रोग की यह उत्तम दवा है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली, सुबह-शाम कचनार की छाल का क्काथ या ताजा जल के साथ।

**गंधक रसायन**
(आयुर्वेदप्रकाश)

इसके सेवन से सब प्रकार के कुष्ठ, क्षय, रक्तविकारजन्य फोड़ा, फुन्सी, चकत्ते का पड़ना, आतशक (गर्मी) के सब उपद्रव नष्ट होते हैं। धातुक्षय, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदरशूलादि में भी यह लाभदायक है। बल-वीर्यवर्द्धक, पौष्टिक एवं अग्निदीपक है। इसके सेवनकाल मे नमक, अम्ल पदार्थ, शाक, दाल, स्त्री-संयोग आदि छोड़ देना चाहिये। जंगली जीवों का मांस, बकरे का मांस, दूध, शाली चावल आदि सेवन करना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती से ३ रत्ती तक शहद या त्रिफला क्वाथ के साथ।

**गर्भपाल रस**
(रसयोगसागर)

नाग, वंग और हिंगुल के प्रधान उपादान से बना हुआ यह रस सगर्भा स्त्रियों के समस्त विकारों को नष्ट करता है। सूजाक, आतशक अथवा दुग्ध-दोष के कारण गर्भपात होने की सम्भावना में मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ इस रस का सेवन करना चाहिये। सगर्भा के अतिसार, ज्वर, पांडु, मन्दाग्नि, मलावरोध, शिरःशूल, अरुचि आदि सभी विकारों में जरूरत के अनुसार इसका प्रयोग किया जा सकता है।

मात्रा—१-२ गोली सुबह-शाम।

लाभकारी अनुपान—ज्वर, रक्तस्राव और पांडु में गुडूची सत्व और मधु से। निर्वलता, शिरोभ्रम, अरुचि और रक्तवृद्धि के लिये धारोष्ण दूध के साथ। वमन, पित्तविकारों में इलायची का चूर्ण और मधु से।

**गर्भचिन्तामणि रस वृ०**
(रसरत्नाकर)

गर्भपात, गर्भावस्था के समय ज्वर, दाह, सन्निपात हो जाने पर और बच्चा पैदा होने के बाद प्रसूति ज्वर हो जाने पर गर्भचिन्तामणि रस का प्रयोग करना चाहिये। इससे बुखार उतर जायगा और कोई उपद्रव नहीं होगा।

मात्रा—एक गोली, दिन में दो या तीन बार।

लाभकारी अनुपान—गर्भवती स्त्री को मधु से घोंटकर चाटना चाहिये। प्रसूतिज्वर में मधु में मिलाकर चाटना और ऊपर से दशमूल का काढ़ा पीना चाहिये।

**ग्रहणीकपाट रस**
(रसकामधेनु)

भयंकर अतिसार, संग्रहणी और पुराने अतिसार में इस रस का उपयोग किया जाता है। इसके सेवन से आन्त्र के विकार नष्ट होते हैं तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। भुना हुआ जीरा का चूर्ण तीन माशे और शहद से।

**गुल्मकालानल रस**
(भैषज्यरत्नावली)

गुल्म रोग—वात, पित्त, कफ के अलग-अलग कुपित होने से हुआ हो या तीनों के एक साथ कुपित होने से हुआ हो, सभी प्रकार के गुल्म रोगों में 'गुल्मकालानल रस'

के सेवन से लाभ होता है। वातप्रधान गुल्म रोग में तो इसका आश्चर्यजनक गुण होता है।

**मात्रा और अनुपान**—एक-एक गोली सुबह-शाम दिन में दो बार। हरीतकी (हरड़) के काढ़े के साथ।

**चतुर्मुख रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, अभ्र, लौह, कज्जली आदि के योग से बनने वाली यह दवा वायु की बीमारी के लिये बहुत फायदेमन्द है। मूर्च्छा, हिस्टीरिया, मृगी और उन्माद रोग पर इस दवा का अच्छा असर होता है। हृदय की बीमारियों को दूर करके हृदय को मजबूत करना इस दवा का खास गुण है। क्षय, खाँसी, प्रमेह, अम्लपित्त, पांडु और प्रसूतिज्वर या प्रसूत के बाद होनेवाली कमजोरी में इस दवा का प्रयोग करके लाभ उठाना चाहिये। यह दवा पौष्टिक एवं रसायन है। इसलिये किसी बीमारी के बाद की कमजोरी या साधारणतया होने वाली कमजोरी में इस दवा से अच्छा लाभ होता है।

**मात्रा और अनुपान**—एक-एक गोली सुबह-शाम दिन में दो बार। त्रिफला चूर्ण १॥ माशे से ३ माशे तक और मधु के साथ चाटना चाहिये।

**चन्द्रकला रस**
(योगरत्नाकर)

इस रस के सेवन से बीसों प्रकार के प्रमेह, श्वेतप्रदर, मूत्र-कृच्छ्र, टट्टी, पेशाब के साथ वीर्य का जाना, स्वप्नदोष, बराबर धातु का गिरना आदि रोग आराम होते हैं। किसी तरह से वीर्य में दोष आ जाय, उस समय इस रस का सेवन लाभदायक है।

**मात्रा और अनुपान**—एक-एक गोली सुबह-शाम, दिन में दो बार गिलोय का काढ़ा और शहद अथवा गोखरू का जल और शहद से।

**चन्द्रकांत रस**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

रससिन्दूर, अभ्रक, लौह, ताम्र आदि भस्मों के संयोग से तैयार इस रस के सेवन से वात, पित्त, कफादि किसी भी दोष से उत्पन्न सिरोरोग आराम होता है। अर्धावभेदक (आधा शीशी), सूर्यावर्त ( सूर्य के साथ बढ़ने-घटने वाला सिर का दर्द ) इसके सेवन से निश्चय आराम होता है।

**मात्रा और अनुपान**—एक-एक गोली सुबह-शाम १ माशा गोदन्ती भस्म और मधु के साथ।

**चन्द्रशेखर रस**
(वृ०निघंटुरत्नाकर)

जीर्ण ज्वर, रक्तपित, श्वास, खाँसी आदि रोगों में लाभदायक है। बच्चों के धनुर्वात और डब्बा रोग में अत्यन्त उपयोगी है।

मात्रा—एक-एक गोली, दिन में तीन बार-सुबह, दोपहर और शाम को।

लाभकारी अनुपान—जीर्णज्वर, श्वास, खाँसी में अदरख रस और शहद से। रक्तपित्त में आंवलों के मुरब्बा से। बालरोग में माता के दूध के साथ।

**चन्द्रामृत रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह पांचों प्रकार की खाँसी के लिये फायदेमन्द है। जिस खाँसी में खून आता हो तथा खाँसते-खाँसते दाह, प्यास, मूर्च्छा हो जाती हो, उस हालत में इस दवा का अच्छा असर होता है। यदि जीर्णज्वर के साथ खाँसी आती हो और मन्दाग्नि, श्वास आदि की भी शिकायत हो तो इस दवा का प्रयोग करना चाहिये।

मात्रा—एक एक गोली सुबह-शाम दिन में दो बार।

लाभकारी अनुपान—पित्त की खाँसी में रक्तोत्पल ( लालगुन्दि ) या नीलोफर के रस से। कफ की खाँसी में अदरख रस और मधु से। जीर्णज्वर में पीपल चूर्ण और मधु से।

नोट—इस दवा को चाटने के बाद अडूसा, गिलोय, भार्गी, नागरमोथा, छोटी कंटकारी इन दवाओं का काढ़ा पीना चाहिये।

**चन्द्रांशु रस**
(रसचण्डांशु)

यह सब प्रकार के गर्भाशय के दोष, योनिशूल, योनि में पीड़ा एवं दाह का होना तथा योनि की स्थानभ्रष्टता एवं स्राव का चलना, स्मारोन्माद (हिस्टेरिया) आदि विकारों को शीघ्र दूर करता है। इससे गर्भाशय बलवान् होकर सन्तानोत्पादक-शक्ति पैदा होती है।

मात्रा और अनुपान—एक-एक गोली दिन में दो बार जीरा-क्वाथ, दूध, जटामांसी काढ़ा या रोगानुसार।

**चिंतामणि रस**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह सब प्रकार के हृदय रोग हृदयशूल और हृद्द्रव (हृदय के स्पन्दनाधिक्य) में अत्यन्त लाभदायक है। वातवाहिनियों की निर्बलता, हिस्टीरिया आदि में इसका प्रयोग उत्तम है।

हृद्रोग के साथ यकृत् शोथ और उदर रोग हो तो इसके साथ आरोग्यवर्द्धिनी मिलाकर देने से अच्छा लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—एक-एक गोली सुबह-शाम या रोगानुसार मधु या वरियारा का क्वाथ या दशमूल क्वाथ के साथ।

**चिंतामणि चतुर्मुख रस**
(भैषज्यरत्नावली)

प्रधान गुण—चतुर्मुख रस की अपेक्षा यह विशेष लाभदायक है। मात्रा और अनुपान तदनुकूल ही है।

**जयमङ्गल रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, लौह, ताम्र और वंग जैसे प्रधान उपादान के कारण यह रस बहुत प्रसिद्ध है। पुराने बुखार की तो यह सर्वविदित महौषध है। यह त्रिदोषघ्न है और ज्वर तथा सेन्द्रिय विष के विकार को शरीर से बाहर निकालकर दिल और दिमाग में शान्ति देता है। हृदय, मस्तिष्क, फुफ्फुस, मूत्रपिंड आदि सभी शरीर-रोगों पर इसका अच्छा प्रभाव होता है। सभी प्रकार के पुराने बुखार, विगड़े हुये ज्वर, धातुगत ज्वर और ज्वरों के उपद्रव इससे शांत हो जाते हैं। अनुपान भेद से सभी विकारों में इस रसायन का प्रयोग किया जा सकता है। यह बल-वीर्य की वृद्धि करता, शरीर को पुष्ट करता और नये जीवाणुओं की रचना करता है। किसी रोग के कारण हुई कमजोरी में इसे जरूर देना चाहिये।

मात्रा—१-१ गोली सुबह-शाम या दिन में एक बार।

लाभकारी अनुपान—जीर्णज्वर में गुडूची रस और शहद के साथ। बल-वीर्य के लिये मलाई या दूध से।

**जलोदरारि रस**
(भैषज्यरत्नावली)

कज्जली, मनःशिला और जमालगोटे के प्रधान योग के कारण यह रस परम संशोधक और तीव्र रेचक है। जलोदर में संचित जल को यह रस बाहर भी निकालता है और सुखाता भी है तथा उस कारण को भी नष्ट कर देता है जिससे जल संचय होता है। यकृत्-विकार और उदर-रोगों में इसका अच्छा प्रभाव होता है।

मात्रा—१-१ गोली, सुबह-शाम दिन में दो बार।

**ज्वरारिअभ्र रस** (भैषज्यरत्नावली) वात, पित्त, कफ के प्रकोप से या इन तीनों के प्रकोप से होने वाले ज्वर मे यह दवा बहुत फायदेमन्द है। किन्तु जीर्णज्वर (पुराना बुखार), धातुगत ज्वर और विषमज्वर में इस दवा का प्रभाव आश्चर्यजनक होता है। तिल्ली, लीवर, मन्दाग्नि, सूजन और श्वास, खाँसी में भी इसके सेवन से लाभ होता है।

मात्रा—१-१ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार या चार-चार घन्टे के बाद।

लाभकारी अनुपान—जीर्णज्वर और विषमज्वर मे हरसिंगार के पत्तों का रस और मधु, तुलसी के पत्तों का रस और मधु या गिलोय के रस और मधु से। तिल्ली, लीवर में शरपुँखा (भोजह) की जड़ की छाल के काढ़े से। मन्दाग्नि मे नीबू का रस मिलाये हुये जल से। शोथ में पुनर्नवा रस और मधु से। श्वास, कास में वासा (अडूसा) रस और मधु से।

**ज्वर शूलहर रस** (भैषज्यरत्नावली) यह रस सब प्रकार के ज्वरों मे लाभदायक है। चातुर्थिक आदि समस्त विषमज्वर, नूतन ज्वर, सन्निपातज्वर आदि इसके सेवन से अच्छे होते हैं। बुखार के लक्षण प्रकट होते ही अगर इस रस का सेवन किया जाय तो उपद्रव शान्त होकर बुखार होने का डर नहीं रहता है।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती से ३ रत्ती तक। दिन-रात में ३ से ४ बार तक पान का रस और मधु से।

**ज्वरसंहार रस** (सिद्धयोगसंग्रह) यह रस अनुपानविशेष से सब प्रकार के ज्वरों में विशेषतः कफ और वातज्वर में लाभ करता है। इसको गोजिह्वादि क्वाथ के अनुपान के साथ देने से श्लेष्मज्वर में कफ पककर ज्वर शीघ्र अच्छा होता है और प्रतिश्याय (जुकाम) तथा खाँसी भी जल्दी अच्छी होती है। कफज्वर में पार्श्वशूल हो तो इसके साथ २ से ६ रत्ती मृगश्रृङ्ग भस्म ( हरिण या साँभर के सींग की भस्म ) और श्वसनक ज्वर (न्यूमोनिया) हो तो श्रृङ्ग भस्म २-६ रत्ती तथा अभ्रक भस्म १ रत्ती मिलाकर देना और ऊपर से गोजिह्वादि कषाय या भार्ग्यादि कषाय, नौसादर और यवक्षार का प्रतीवाप देकर देना। ज्वरसंहार रस का तरुण और जीर्ण दोनों प्रकार के ज्वर मे प्रयोग कर सकते हैं।

मात्रा और अनुपान – २-३ रत्ती केवल या एक माशा गोदन्ती भस्म के साथ मिलाकर जल या किसी ज्वरघ्न कषाय के अनुपान से दे।

**तारकेश्वर रस**
(भैषज्यरत्नावली)

बहुमूत्र की बीमारी में जब पेशाब बहुत अधिक होने लगता है अथवा पेशाब के साथ चीनी या धातु जाने लगता है, उस समय तारकेश्वर रस के सेवन से जल्दी लाभ होता है। यह दवा वङ्ग, लौह आदि के योग से बनाई जाती है, इसलिये वीर्य को पुष्ट करती है तथा पेशाब की थैली की शिकायतों को दूर करती है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सवेरे और शाम जामुनगुठली चूर्ण और मधु से अथवा गूलर का चूर्ण २ माशा और मधु से चाटना।

**तालकेश्वर रस**
(भावप्रकाश)

यह रस सब प्रकार के कुष्ठ रोग की महौषध है। कुष्ठ जैसी वीभत्स बीमारी में जल्दी कोई दवा असर नहीं करती, अतः जल्दबाजी न कर लगातार कुछ दिनों तक औषधि सेवन करने से लाभ होता है। इस रोग में केवल औषधि सेवन से पूर्ण लाभ नहीं होता, क्योंकि इस रोग का मूल कारण नाना प्रकार के विरुद्ध पदार्थों का सेवन तथा पूर्वजन्म कृत महापापादि दुष्कर्मों का फल है। इसलिये औषधि-सेवन के साथ २ आहार-विहार का पालन करना तथा देवोपासक होना अत्यावश्यक है। उपरोक्त नियम का पालन करते हुये अगर तालकेश्वर रस का सेवन किया जाय तो निःसंदेह कुष्ठ रोग से छुटकारा मिल सकता है।

मात्रा और अनुपान—२-३ रत्ती सुबह-शाम। बाकुची चूर्ण और विषम भाग घी और मधु में मिलाकर चाटना। ऊपर से खैर काठ का काढ़ा या मंजिष्ठादि क्वाथ पीना चाहिये।

**त्रिभुवनकीर्ति रस**
(योगरत्नाकर)

यह उष्ण वीर्य और ज्वरघ्न रस सम्पूर्ण तरुण ज्वरों में विशेषतः वात तथा कफज ज्वरों के लिये अच्छी औषधि है। यों तो वात कफ के सभी विकारों में इसका प्रयोग हो सकता है, लेकिन बुखार उतारने के लिये ही इसका ज्यादा प्रयोग होता है। बढ़े हुये तापमान को कम करके हृदय और नाड़ी की तेजी को कम करता और पसीना लाकर बुखार को उतार देता है। पित्त प्राधान्य प्रकृति वाले को इसको

ज्यादा मात्रा नहीं देनी चाहिये। अत्यन्त आवश्यकता होने पर किसी सौम्य एवं हृदय को बल देने वाली प्रवाल पिष्टी, अभ्रक, माक्षिक जैसी चीज इसके साथ मिलाकर देनी चाहिये। शरीर में संचित विकार को भी यह निकालता है।

**मात्रा और अनुपान**—चार-चार घन्टे के फासले से दिनभर में २ से ४ गोली तक शहद और अदरख के रस के साथ।

**त्रिविक्रम रस** (रसेन्द्रसारसंग्रह) पथरी की बीमारी हो जाने से पेशाब करते समय तकलीफ होती है तथा गुर्दों में दर्द होने लगता है। ऐसी हालत में त्रिविक्रम रस के सेवन करने से पथरी गलकर नष्ट हो जाती है तथा गुर्दों का दर्द ठीक हो जाता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से ३ रत्ती तक सवेरे और शाम। हजरुल यहूद भस्म ३ रत्ती और मधु से चाटकर ऊपर से बिजोरा नीबू की जड़ आधा तोला, दस तोला पानी में पीसकर पीना।

**त्रैलोक्यचिन्तामणि रस** (भैषज्यरत्नावली) हीरा, स्वर्ण, मोती, लौह आदि बहुमूल्य औषधियों के संयोग से निर्मित यह त्रिदोषनाशक, बल-वीर्यवर्द्धक एवं पौष्टिक रसायन है। सब प्रकार के नये पुराने गठिया रोग, लकवा, पक्षाघात, धनुष्टङ्कार, लङ्गड़ापन, अङ्गों का जकड़ना, छाती और कमर का दर्द, स्नायविक दुर्बलता, पागलपन, बुढ़ापे की शिथिलता आदि रोग इसके सेवन से अच्छे होते हैं। यह अग्नि को बढ़ाकर सप्त धातुओं का पोषण करता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली, सुबह-शाम। वातरोग, गठिया, लकवा, पक्षाघात आदि में रास्नादि क्वाथ या दशमूल के क्वाथ और मधु से। कफ विकारों में आदी का रस और मधु से। पित्तविकारों में मिश्री और घी के साथ। स्नायविक दुर्बलता एवं कमरदर्द में असगन्ध, चोपचीनी का काढ़ा और मधु से।

**दन्तोद्भेदगदान्तक रस** (भैषज्यरत्नावली) बच्चों को दाँत उठने के समय बहुत तरह की तकलीफें हो जाया करती हैं, जैसे हरे, पीले या पतले दस्त होना, दूध की उल्टी होना, रोना, चिल्लाना, पेटदर्द, अपच, अरुचि, ज्वर आदि। इस रस के सेवन से सारी तक-

लीफें दूर होती हैं, विना किसी प्रकार की तकलीफ के दाँत आराम से निकल आते हैं।

प्रयोग विधि—१-१ गोली माता के दूध या जल के साथ देना तथा चन्दन की तरह घिसकर दाँत निकलने के स्थान पर लगाना भी चाहिये।

**दुर्जलजेता रस** (योगरत्नाकर) दूषित जल पीने से उत्पन्न विकारों में, वायु के दूषित हो जाने से पैदा होने वाले रोगों में तथा मौसम परिवर्तन के समय उत्पन्न विकारों में इस रस का प्रयोग किया जाता है। सर्दी, ज्वर, अजीर्ण, आफरा, कब्ज, शूल, श्वास, खाँसी आदि रोगों में भी फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक, सुबह-शाम या आवश्यकतानुसार। पान या अदरख का रस अथवा गरम पानी से।

**नव ज्वरेभसिंह रस** (भैषज्यरत्नावली) प्रायः सभी ज्वरों में इसका प्रयोग लाभदायक। परन्तु विशेषकर नये ज्वर में प्रयोग करना उत्तम है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक आदी रस और मधु के साथ।

**नष्टपुष्पान्तक रस** (रसयोगसागर) यह रस उग्र और उष्णवीर्य है। जब मासिकधर्म रुक गया हो या दर्द के साथ थोड़ा-थोड़ा होता हो अथवा पूर्ण उम्र होने पर भी रजोदर्शन नहीं हुआ हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये। रक्तगुल्म में भी यह फायदा पहुंचाता है।

मात्रा और अनुपान—एक-एक गोली, सुबह-शाम दिन में दो बार तिल और गुड़ के क्वाथ से।

**नृपतिवल्लभ रस** (भैषज्यरत्नावली) यह संग्रहणी रोग की उत्तम औषधि है। इसके सेवन से मन्दाग्नि, ज्वर, आँव के दस्त, अतिसार (पतले दस्त होना) हृदय का दर्द, बवासीर आदि रोगों में लाभ होता है। कमजोर हुई ग्रहणीकला को फिर से सबल बनाकर उसकी क्रिया को ठीक करने के लिये यह दवा बहुत ही अच्छी है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ गोली तक सुबह-शाम। संग्रहणी में भुना हुआ जीरा और मधु के साथ। आँव के दस्तों में नागरमोथा का रस और मधु के साथ। अतिसार (पतले दस्तों) में जायफल को पानी में घिसकर मधु के साथ। मन्दाग्नि में नीबू का रस और ताजे जल के साथ।

**नाराच रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह रस गुल्म, कब्ज, प्लीहा आदि उदरविकारों में विरेचन के लिये अच्छा है। जमालगोटे का मिश्रण होने के कारण यह एक तेज जुलाब है। यह पेट में जमे हुये दूषित मल को निकालकर पेट को साफ करता है। गर्भवती स्त्रियां और बच्चों को देने के पहले उनकी शारीरिक अवस्था देखकर या वैद्य से सलाह लेकर इसका सेवन करना चाहिये।

**मात्रा और अनुपान**—१ गोली से ३ गोली तक चावल के धोवन के साथ सुबह ४ बजे लेना चाहिये। दवा लेने के पहले रात में घी के साथ मूंग की खिचड़ी खाकर कोठा मुलायम कर लेना चाहिये। दस्त हो जाने के बाद हल्का भोजन या मूंग की (बिना घी डाली) खिचड़ी खानी चाहिये।

**नागार्जुनाभ्र रस**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

यह दवा सहस्रपुटी अभ्रक भस्म में अर्जुन के छाल के काढ़े की अनेक भावनायें देकर बनाई जाती है। यह हृदय रोग का बड़ी अच्छी औषधि है। इससे हृदय की कमजोरी, हृदय की धड़कन (heart pulpitation) और हृदय में दर्द होना आदि हृद्रोग अच्छे होते हैं। हृदय की अनियमित गति को नियमित करने के लिये इसका सेवन लाभदायक है। मन्दाग्नि, सूजन, अम्लपित्त, रक्तपित्त और विषमज्वर आदि रोगों में भी यह औषधि अच्छा काम करती है। बल, वीर्य, कान्ति और शक्ति बढ़ाने में भी इसका अच्छा प्रभाव होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली सुबह-शाम मधु के साथ।

**नित्यानन्द रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह श्लीपद (फीलपांव) की सर्वोत्तम औषधि है। इसके अलावा कफ और वातजनित रोग अर्बुद (देर से बढ़ने तथा न पकने वाली मांस की गाँठ), गण्डमाला, दारुण, वातरक्त, अन्त्रवृद्धि (आँत उतरना) आदि रोगों में भी यह फायदेमन्द है। फीलपाँव की यह खास दवा है, इसलिये रस रोग में इसका विशेष प्रयोग होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार गोमूत्र या गर्म जल से।

**पंचवक्त्र रस**
**(रसयोगसागर)**

वात, कफ प्राधान्य ज्वर, अजीर्ण ज्वर, सन्निपात ज्वर, इन्फ्लुएञ्जा, तन्द्रा, आलस्य, सर्वाङ्ग में पीड़ा होना आदि में अत्यन्त उपयोगी है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम या आवश्यकतानुसार। सन्निपात ज्वर और कफसंयुक्त ज्वर में अदरख का रस और शहद से। अजीर्ण, ज्वर में नीबू रस से।

**प्रतापलंकेश्वर रस**
**(योगरत्नाकर)**

यह प्रसूत रोग की सबसे अच्छी औषधि है। इसके सेवन से प्रसूत रोग और उससे पैदा होने वाली तरह-तरह की शिकायतें मिटती हैं। प्रसूति ज्वर, खाँसी, धनुर्वात, दन्तबन्ध (दाँत लगना), उन्माद, घोर सन्निपात, अतिसार, संग्रहणी आदि रोग और उपद्रवों में इस रस का प्रयोग लाभदायक है। इसके प्रयोग से गर्भाशय में संचित दूषित रक्त का स्राव होकर गर्भाशय शुद्ध होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली या १ से ३ रत्ती तक सुबह-शाम अदरख रस और मधु के साथ।

**प्रदरान्तक रस**
**(भैषज्यरत्नावली)**

स्त्रियों के नये या पुराने सफेद, लाल या नीले रंग के प्रदर स्राव को बन्द कर दुर्बल, शक्तिहीन, रोगिणी स्त्रियों को यह रस सबल, स्वस्थ और नीरोग करता है। इससे प्रदर रोग और उससे उत्पन्न हुई शिकायतें जैसे कमर, पेड़ू में दर्द होना, हाथ-पैर के तलुवे और आंखों में जलन होना, मन्द-मन्द ज्वर का रहना, भूख का मारा जाना आदि समस्त शिकायतें मिटती हैं। गर्भाशय की कमजोरी दूर होती है और गर्भ धारण करने की शक्ति प्राप्त होती है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम दूब के रस या आँवला स्वरस और मधु के साथ अथवा गुड़हल (जवा फूल) के सात फूल को पावभर पानी में रात में भिगोकर सुबह मसल-छानकर उस पानी के साथ मिश्री मिलाकर लेना।

**प्रदररिपु रस**
(योगरत्नाकर)

प्रदर में, जिस समय रक्त का प्रवाह जोरों से हो उस समय इस रस का प्रयोग करना चाहिये।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली सुबह-शाम खून खराबा १ माशा और मधु से चाटकर, चावलों का पानी, अशोक-छाल का काथ या अडूसे का रस पीना चाहिये।

**प्रवालपंचामृत रस**
(योगरत्नाकर)

पित्ताशय, क्लोम, यकृत् और प्लीहा के कार्यों पर इस रस का खास असर होता है। यह उष्णवीर्य है, अतः वात, कफ के विकारों में इससे जल्दी लाभ होता है। पित्त-विकारों में इसके साथ कोई सौम्य औषधि होनी चाहिये। गुल्म, उदर रोग, प्लीहा, मन्दाग्नि, प्रमेह मूत्ररोग, अश्मरी, हृद्रोग, अजीर्ण, खाँसी, श्वास, वात, कफ-विकार और वालग्रहों पर इसका अच्छा प्रभाव होता है। पित्तनिर्माण की क्रिया को यह ठीक करता है और पित्त की खराबी से होने वाले उपद्रवों—अन्त्रदाह, खट्टी डकारें, गले में जलन, जलनदार दस्त, आँव से पैदा हुई संग्रहणी आदि को जल्दी नष्ट कर देता है। हृदय और मस्तिष्क को वल मिलता है तथा फुफ्फुस में रुके हुये दोष निकल जाते हैं।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ रत्ती तक। गुल्म तथा उदररोग में पुनर्नवादि क्वाथ के साथ। पित्तविकारों में सितोपलादि चूर्ण और मधु अथवा गुलकन्द या आँवला मुरब्बा के साथ। कास-श्वास में आदी का रस और मधु के साथ।

**पांडु पंचानन रस**
(भैषज्यरत्नावली)

पांडु, कामला, हलीमक आदि रोगों के पैदा होने पर इसका व्यवहार अत्यन्त लाभदायक है। इसमे यकृत्-विकार, तिल्ली का वढ़ना, स्थायी कब्ज आदि रोग नाश होकर पाचकाग्नि की वृद्धि होती है। कुछ दिनों तक सेवन करने से पाण्डुजनित समूचे शरीर का शोथ और पीलापन दूर होकर रक्त, वल, वीर्य तथा कान्ति की वृद्धि होती है।

**मात्रा और अनुपान**—२-४ रत्ती सुबह-शाम गोमूत्र या गरम जल से।

**पाशुपत रस**
(योगतरङ्गिणी)

यह रस समस्त उदरविकारों के लिये रामबाण तुल्य है। इसके सेवन से अग्नि प्रदीप्त होकर खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह हजम हो जाता है। अनुपान भेद से यह उदररोग, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी, अतिसार, बवासीर आदि को नष्ट करता है। हैजे में भी इसका प्रयोग लाभदायक है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली सुबह-शाम या रोगानुसार। अजीर्ण, मन्दाग्नि, उदरविकारों में तालमूली का रस या नीबू का रस अथवा गर्म जल से। अतिसार, संग्रहणी, बवासीर में मट्ठा और सेन्धा नमक से। वातविकार, शूल में सोंठ, पीपल चूर्ण और संचर नमक से।

**पियूषवल्ली रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह रस कठिन से कठिन संग्रहणी, प्रबल अतिसार, बवासीर आमशूल रोगों को नाश करता है। पेट में संचित आंव तथा काला, पीला, रक्तमिश्रित दस्तों में लाभदायक है। तिल्ली, गुल्म, पाण्डु रोग, कामला, भोजन में अरुचि, जलन, प्यास की अधिकता, वमन (उल्टी) आदि रोगों मे अनुपान भेद से यह फायदेमन्द है। संग्रहणी और घोर अतिसार की प्रबलता में इस रस का प्रयोग सर्वथा सफलीभूत होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार। अतिसार, संग्रहणी और बवासीर में इसबगोल के लुआब या भुना हुआ बेल और समान भाग गुड़ के साथ अथवा भुना हुआ जीरा और मधु के साथ। आंव, गुल्म तिल्ली, पांडु, कामला आदि में कुमारी रस या धान्यपंचक के काढ़ा से। जलन, प्यास, वमन आदि में धनियां और लौंग का औंटाया जल से अथवा अनार के रस से।

**पुष्पधन्वा रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह रस अत्यन्त कामोत्तेजक, बल, वीर्य एवं शक्तिवर्द्धक और उत्तम वाजीकरण है। इसके नियमित सेवन से वीर्य-स्राव, रजः स्राव, निर्बलता, वीर्यविकार, ध्वजभंग, वन्ध्यत्व आदि रोग नष्ट होते हैं। यह रस स्त्रियों के गर्भाशय के दोष निकाल न होने से उत्पन्न वंध्यत्व और पुरुषों के शुक्राणु की दुर्बलता से पैदा हुई नपुंसकता को नष्ट करता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुवह-शाम औटाया हुआ दूध, मक्खन, मिश्री आदि से।

**पूर्णचन्द्र रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह अत्यन्त वल, वीर्यवर्द्धक और पौष्टिक रसायन है। इसके सेवन से समस्त धातुरोग निर्मूल होकर शरीर में नया खून और नया जोश उत्पन्न होता है। दिल-दिमाग में ताकत आती है, स्तम्भकशक्ति और कामशक्ति की वृद्धि होती है। वाजीकरण के लिये इसका प्रयोग विशेष लाभदायक है। प्रायः इसके गुण और अनुपान वृहत् पूर्णचन्द्र रस से मिलते-जुलते हैं।

मात्रा और अनुपान—१ गोली सुवह और १ गोली रात को सोने के पहले मक्खन, मलाई या मिश्री मिले गरम दूध से।

**पूर्णचन्द्र रस वृहत्**
(भैषज्यरत्नावली)

यह सभी कठिन रोगों में फलप्रद होता है, किन्तु इसका ज्यादा प्रयोग प्रमेह, नपुँसकता तथा जननेन्द्रिय विकारों में होता है। यह रस शुक्राणुओं की नवीन रचना करता है तथा रजाणुओं की उत्पत्ति का क्रम ठीक करता है। अति मैथुन, हस्त मैथुन से थके हुये पुरुषों में यह फिर से ताकत लाता है। शुक्रस्राव, वहुमूत्र, श्वेत प्रदर को यह जल्दी ठीक करता है, मस्तिष्क में धारणाशक्ति वढ़ती है, हृदय को वल मिलता है तथा वीर्यवाहिनी नाड़ियों में चेतना आती है। किसी भी रोग के वाद की कमजोरी इससे दूर होती है। सन्निपात, क्षय, संग्रहणी आदि की कठिन दशा में इसका मिश्रण हृदय को शक्ति देता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुवह-शाम मधु, मक्खन, मिश्री, मलाई और दूध से। क्षय, संग्रहणी आदि रोगों मे उनके अनुपान के साथ।

**वसन्तकुसुमाकर रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह हृद्य, वल्य, उत्तेजक, वृष्य और रसायन है। स्वर्ण, मोती, अभ्रक, रससिन्दूर आदि वलवर्द्धक और रोगनाशक द्रव्यों के संयोग से वनने के कारण यह सभी रोगों के लिये वहुत फायदेमन्द है। स्त्री-पुरुषों की जननेन्द्रिय सम्वन्धी शिकायतों पर इसका वहुत अच्छा और तात्कालिक प्रभाव होता है। मधुमेह, वहुमूत्र

और हर तरह के प्रमेह, नामर्दी, सोनरोग, श्वेतप्रदर, योनि तथा गर्भाशय की खराबी, वीर्य का पतला होना या गिरना तथा वीर्य-सम्बन्धी शिकायतों को जल्दी नष्ट करता है और शरीर में नया यौवन लाता है। वीर्य की कमी से होने वाले क्षयरोग की यह बड़ी उत्तम दवा है। हृदय और फेफड़ों को इससे बल मिलता है। हृदय की कमजोरी, शूल तथा मस्तिष्क की निर्बलता, भ्रम, याददाश्त की कमी, नींद न आना आदि शिकायतों को दूर करता है। पुराने रक्तपित्त, कफ, खाँसी, श्वास, संग्रहणी, क्षय, रक्तप्रदर, खून की कमी और बुढ़ापे तथा रोग की कमजोरी में इस रसायन का प्रयोग बड़ा लाभदायक है। अनुपान भेद से यह सभी रोगों में फायदेमन्द है। मधुमेह रोग की प्रसिद्ध महौषधि है।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली सुबह-शाम। नपुंसकता, वीर्यस्राव में धारोष्ण दूध से। मस्तिष्क विकारों में आँवले के मुरब्बे से। रक्तपित्त, रक्तप्रदर में वासा रस और मधु के साथ। कास, श्वास, क्षय में चौंसठ प्रहरी पीपल और शहद के साथ। अम्लपित्त में कुष्मांडावलेह के साथ। हृदय रोगों में अर्जुन-छाल के क्वाथ से। प्रमेह में गुडूची रस और मधु के साथ। मधुमेह में जामुन-गुठली चूर्ण और शिलाजीत के साथ।

## वसन्त तिलक रस
(भैषज्यरत्नावली)

लौह, वंग, स्वर्ण, मोती आदि बहुमूल्य द्रव्य और धातु-पौष्टिक औषधियों के योग से बना हुआ यह रस सब तरह के प्रमेह रोगों को नष्ट करता है। यह वाजीकरण और वीर्यवर्द्धक है। बहुमूत्र और चीनी की बीमारी (डायबिटीज) में इसका अच्छा प्रभाव होता है। राजयक्ष्मा, अश्मरी (पथरी) और वातव्याधि में यह फायदेमंद है।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली सुबह-शाम, शतावरी या गिलोय का रस और मधु के साथ।

## बहुमूत्रान्तक रस
(भैषज्यरत्नावली)

बहुमूत्र, मधुमेह (पेशाब में चीनी आना) रोग की उत्तम दवा है। स्त्रियों का सोम रोग, पुरुषों का प्रमेह, शीघ्र पतन, वीर्य की कमी, नपुंसकता, नामर्दी आदि में भी इसका प्रयोग लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दिन में दो वार। सोम रोग, मधुमेह, बहुमूत्र में जामुनगुठली और गुड़मार का चूर्ण १-१ माशा, गूलर का रस और मधु से। प्रमेह में गिलोय रस और मधु से। नपुंसकता, नामर्दी, शीघ्रपतन मे मिश्री मिला खूब औंटाया हुआ दूध से।

**वड़वानल रस**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

यह अजीर्ण, मन्दाग्नि, गुल्म, शूल आदि के लिये उत्तम है। इसके सेवन से खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह हजम होकर अग्नि की वृद्धि होती है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक रोगानुसार। नीबू का रस जल में मिलाकर उसके साथ या सौंफ अथवा अजवायन अर्क के साथ।

**वंगेश्वर रस वृहत्**
(भैषज्यरत्नावली)

वंग भस्म, स्वर्ण भस्म, मोती भस्म, चाँदी भस्म, अभ्रक भस्म, पारद और गन्धक की कज्जली आदि के योग से यह महारसायन तैयार होता है। इसके सेवन से नये और पुराने, साध्य और असाध्य २० प्रकार के प्रमेह अच्छे होते हैं। मूत्रकृच्छ्र, बहुमूत्र, मूत्रमेह, मूत्रातिसार, वीर्य की क्षीणता, स्तम्भनाभाव, टट्टी और पेशाव के रास्ते से वीर्य का जाना, स्वप्नदोष और शुक्रक्षय से उत्पन्न मन्दाग्नि, आमदोष, अरुचि, हलीमक, रक्तपित्त, ग्रहणीदोष तथा मूत्र और वीर्य सम्बन्धी सभी रोग नष्ट होते हैं। यह वाजीकरण और आयु, वल, वीर्य, कान्ति, शक्तिवर्द्धक और दुर्वलता-नाशक है।

**वंगेश्वर रस (स्वल्प)**
(भैषज्यरत्नावली)

यह वृहत् वंगेश्वर रस से गुणों में न्यून है। मात्रा, अनुपान आदि तदनुकूल है।

**वृहत् वातचिंतामणि रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह आयुर्वेद में वातरोग की सुप्रसिद्ध औषधि है। इसके सेवन से वात और पित्त रोग नष्ट होते हैं। नींद न आना, मस्तिष्क की ज्ञानवाहिनी नाड़ियो के दोष से पैदा होने वाली बीमारी (स्नायविक दुर्वलता) और हिस्टीरिया आदि में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम, मधु के साथ। ऊपर से रोगानुसार रास्नादि या दशमूल क्वाथ तथा जटामांसी और जवासा के क्वाथ को पीना चाहिये।

**वातकुलान्तक रस**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

अपस्मार, मूर्च्छा, हिस्टीरिया, आक्षेपक (लकवा) आदि वातविकारों की यह सर्वश्रेष्ठ महौषधि है।

मात्रा और अनुपान — १-१ गोली दिन में ३-४ बार ब्राह्मी, शंखपुष्पी, लौंग और जटामांसी क्वाथ के साथ।

**वातगजांकुश रस**
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

यह कफानुबन्धी वातविकारों में बड़ा अच्छा काम करता है। गृध्रसी, हनुस्तम्भ आदि वातविकारों में इस रस से बहुत जल्दी लाभ होता है। मेदस्वी पुरुषों के वात रोगों के लिये तो बड़ी अच्छी चीज है, वातविकारों के साथ ही यह मेद को भी छांटता है।

मात्रा और अनुपान—१ से ३ गोली सुबह-शाम, रास्नादि या दशमूल क्वाथ से।

**वातरक्तान्तक रस**
(रसयोगसागर)

इस रस के सेवन से अत्यन्त कठिन और सभी तरह का वातरक्त रोग नष्ट होता है। वातरक्त रोग की किसी भी अवस्था में इस रस का प्रयोग किया जा सकता है। रक्त के दूषित हो जाने से शरीर में खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सी हो जाने पर भी इससे लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक सुबह शाम, नीम की छाल, पत्ता, फूल का चूर्ण ४ माशा विषमभाग घी और शहद से चाटना।

**वातारि रस**
(बृ० निघंटुरत्नाकर)

सभी तरह के तीव्र वातविकारों में तथा धनुर्वात में इस रस का उपयोग करना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली सुबह-शाम, गरम जल या गरम दूध अथवा रास्ना पंचक आदि वातनाशक क्वाथ से।

**वातविध्वंस रस**
(रसराजसुन्दर)

इस रस के सेवन से सन्निपात, वायु और कफ के विकार, सर्दी के लग जाने से होने वाले विकार और मन्दाग्नि, श्वास, कास आदि रोगों में लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली, सुबह-शाम या आवश्यकतानुसार दिन में ३-४ बार तक।

**बालरोगान्तक रस** (भैषज्यरत्नावली) बालरोगों की यह बड़ी अच्छी दवा है। इससे बच्चों का त्रिदोषज्वर, आम दोष, पेट की खराबी से होने वाले दस्त, खाँसी, सर्दी, जुकाम, पसली चलना तथा दाँत निकलने के समय के उपद्रव आदि सभी रोग आराम होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली चार घन्टे के अन्तर से माता के दूध में घिसकर चटाना या अदरख के रस और मधु के साथ।

**बालार्क रस** (सिद्धयोगसंग्रह) यह बालकों के वात और कफ के विकार, अतिसार, कृमि-विकार, ज्वर, वमन और आक्षेपक में अत्यन्त फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली दिन में २-३ बार शहद या जल से अथवा रोगानुसार।

**विद्याधराभ्र रस** (भैषज्यरत्नावली) यह रस पेट सम्बन्धी बीमारियों के लिये बड़ा गुणकारी है। इसके सेवन से परिणामशूल (भोजन पचने के समय पेट में दर्द होना), पेट का साधारण दर्द, बहुत दिनों की मंदाग्नि, अम्लपित्त, संग्रहणी आदि रोग आराम होते हैं। जीर्णज्वर, रक्तपित्त और राजयक्ष्मा में भी इसके सेवन से लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली सुबह-शाम गाय के दूध या ताजे ठंडे जल के साथ।

**विश्वतापहरण रस** (रसराजसुन्दर) यह सर्व सामान्यज्वर, नवीन ज्वर, वातजनित ज्वर और विष्टम्भ से पैदा होने वाले ज्वर तथा उदर रोगों में विरेचन के लिये उत्तम है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम, अदरख रस और मधु या मिश्री मिला जल से।

**वेताल रस** (रसेन्द्रसारसंग्रह) विषमज्वर और घोर सन्निपात ज्वर में इस रस का प्रयोग किया जाता है। रोगी की मृतप्राय अवस्था में भी इस रस से लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली रोगी की अवस्थानुसार अदरख रस और शहद के साथ।

**बोलवद्ध रस** (वृ० निघंटुरत्नाकर) अम्लपित्त, रक्तप्रदर, रक्तपित्त, खूनी बवासीर, रक्त प्रमेह, वातरक्त, विद्रधि, भगन्दर तथा पित्तजनित विकारों में फायदेमन्द है। नाक, मुँह, गुदा, योनिमार्ग आदि किसी भी भाग से गिरता हुआ खून इसके प्रयोग से बन्द होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली या ३ से ६ रत्ती तक सुबह-शाम मधु से चाटना।

**मन्मथ रस** (रसेन्द्रसारसंग्रह) इसके सेवन से नपुँसकता-नामर्दी, शीघ्रपतन आदि नष्ट होकर प्रचुर कामशक्ति की वृद्धि होती है। इसमें अफीम जैसी मादक द्रव्य नहीं है, अतः सबके लिये इसका प्रयोग हितकर है। विलासी पुरुषों के लिये जो हमेशा शीघ्रपतन (रुकावट) आदि दवाओं की खोज में रहते हैं, इस निर्मादक रसायन का सेवन लाभदायक है। यह बलप्रद, पौष्टिक रसायन है, वाजीकरण के लिये इसका प्रयोग सर्वोत्तम है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली सुबह-शाम। वाजीकरण के लिये धारोष्ण या मिश्री मिला-गर्म दूध से। विलासी पुरुषों के लिये संभोग से १-२ घंटा पहले १-२ गोली तक मिश्री मिला खूब औटाया हुआ यथेष्ट दूध के साथ।

**महागंधक रस** (भैषज्यरत्नावली) यह महारसायन स्त्री, पुरुष और बालक सबके लिये हितकारी है। इससे ज्वर, अधिक पतले दस्त, कठिन ग्रहणी, खूनी बवासीर, स्त्रियों का सूतिका और प्रदर रोग आराम होता है। यह बच्चों के हरे-पीले और पतले दस्त होना, ज्वर आना आदि रोगों को नष्ट करता है। रक्तप्रदर में मौलसिरी छाल के चूर्ण ६ माशा या २ तोला काढ़े के साथ देने से यह निश्चित लाभ करता है।

मात्रा और अनुपान—१ गोली पूरी उम्र वालों को और आधी गोली बच्चों को, सुबह-शाम भुना हुआ जीरा और मधु के साथ।

**महाज्वरांकुश रस**
(रसयोगसागर)

विषमज्वर, बारी से आने वाले बुखार तथा जीर्णज्वर में इसका उपयोग किया जाता है। किसी भी दवा से ज्वर न छूटता हो तो इस रस का प्रयोग करना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—१ गोली सुबह-शाम या ४-४ घन्टे के फासले से दिन में ३-४ बार, बुखार आने के पहले अदरख रस और मधु में।

**महामृत्युञ्जय रस**
(रसयोगसागर)

इस रस का उपयोग नये पुराने ग्रन्थिक सन्निपातिक ज्वर तथा विषमज्वर में किया जाता है। यह हृदय को उत्तेजना देता है, ग्रन्थियों एवं रक्त में रहे कीटाणुओं को नष्ट कर प्लेग को दूर करता है, आम और कफ का शोषण करता है एवं मल-मूत्रावरोध को दूर करता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली दिन में ३-४ बार, ४-४ घन्टे बाद अदरख का रस, मधु या तुलसी के पत्तों का रस और मधु से।

**महालक्ष्मीविलास रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, मोती, अभ्रक, लौह आदि उत्तम और मूल्यवान् द्रव्यों से बना हुआ यह शक्तिवर्द्धक रस अपने गुण-धर्म के कारण कठिन रोगों में बड़ा अच्छा काम करता है। यह हृदय को बल देता, पाचक रस को बढ़ाता तथा यकृत् क्रिया को ठीक करके रंजक पित्त को उचित मात्रा में पैदा करता है। संग्रहणी और क्षय की खराब हालत में इस रसायन का अच्छा प्रभाव होता है। आँतों में इकट्ठे हुये विषदोष और कीटाणुओं को नष्ट करके यह आँतों को बलवान् बनाता है। सन्निपात ज्वर में भी यह बहुत अच्छा फायदा पहुँचाता है। सूजन, वीर्यनाश, बवासीर, शूल, कुष्ठ, मन्दाग्नि, सन्निपात, श्वास, खाँसी, प्रमेह, नामर्दी, वातव्याधि तथा त्रिदोषज विकारों में महालक्ष्मीविलास रस का प्रयोग उत्तम होता है। बल, बुद्धि कांति और ओज वृद्धि के लिये यह परम रसायन है। अन्य औषधियों को भी इसका मिश्रण सबल बना देता है।

फुफ्फुसों में संचित कफ को बलात् बाहर निकालकर तथा हृदय, यकृत, मूत्राशय, शुक्राशय आदि शरीर रोगों को स्वस्थ बनाकर यह नया यौवन प्रदान करता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली सुबह-शाम। क्षय रोग में चौसठ पहरी पीपल और मधु के साथ। हृदय रोग में अर्जुन क्वाथ से। प्रमेह, नपुँसकता, शुक्रस्राव और श्वेत प्रदर में दो रत्ती शिलाजीत और दूध के साथ। सन्निपात में पान के रस के साथ। वातव्याधियों में रास्नादि क्वाथ के साथ। संग्रहणी, प्रवाहिका, जीर्णातिसार में सोंठ के चूर्ण और मधु के साथ। उदरविकारों में पुनर्नवा के रस से। बल, वीर्य-वृद्धि के लिये मक्खन मिश्री से। अजीर्ण, मन्दाग्नि में भुना हुआ जीरा और मधु के साथ।

**मुक्तापञ्चामृत रस** (योगरत्नाकर) यह जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, क्षययुक्त कास और अन्यान्य राजयक्ष्मा के उपद्रवों में लाभदायक है। इसके साथ १ रत्ती का आठवां भाग स्वर्ण भस्म मिलाकर प्रयोग करने से और भी अधिक फायदा होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ रत्ती तक ३-४ रत्ती छोटी पीपल के चूर्ण के साथ मिलाकर ३-४ मास की व्यायी (प्रसूता) गाय के धारोष्ण दूध के साथ।

**मूर्च्छान्तक रस** (भैषज्यरत्नावली) **प्रधान गुण**—सब प्रकार के मूर्च्छा, अपस्मार, उन्माद, हिस्टीरिया आदि रोगों में यह अत्यन्त लाभदायक है। **मात्रा**—१-१ गोली सुबह शाम।

**लाभकारी अनुपान**—ब्राह्मी घृत, गोदुग्ध अथवा ब्राह्मी, शङ्खपुष्पी, जटामासी, लौंग और जवासा के समान भाग मिश्रित २ तोला क्वाथ के साथ।

**मृगाङ्क रस** (भैषज्यरत्नावली) यह राजयक्ष्मा की बड़ी अच्छी और मशहूर दवा है। इसके सेवन से जीर्ण (पुराना) ज्वर, पुरानी खांसी, श्वास और हृदय के रोग में बहुत लाभ होता है। यह फुफ्फुस और श्वास यन्त्रों की खराबी को दूर कर उनकी क्रिया को ठीक और नियमित करता है। क्षय के कीटाणु इसके सेवन से नष्ट होते हैं तथा फेफड़े और हृदय को बल मिलता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती तक, सुबह-शाम छोटी पीपल का दो आना भर चूर्ण और मधु के साथ या गोल मिर्च के दो आना भर चूर्ण और मधु के साथ।

**मृत्युञ्जय रस**
(भैषज्यरत्नावली)

पित्तज्वरों को छोड़कर यह सभी ज्वरों में लाभ करता है। पेट के पेचिश विकार को पचाकर और पसीना लाकर यह बुखार को दूर करता है। अतिसार में भी इससे लाभ होता है और सुजाक की चीस (कड़क) भी कम होती है।

मात्रा और अनुपान— १-१ गोली ४-४ घण्टे बाद। ज्वर में केवल मधु या अदरख के रस और मधु के साथ। अतिसार में सोंठ चूर्ण के साथ। सुजाक में दही के पानी के साथ।

**याकूती**
(सिद्धयोगसंग्रह)

हृदय की दुर्बलता, सन्निपातज्वर आदि में नाड़ी की क्षीणता और शरीर ठंडा पड़ना, स्वेदाधिक्य, हृदय की दुर्बलता से थोड़ा सा चलने से दम भर जाना और हृदय का स्पन्दन बढ़ना आदि लक्षणों में इसका प्रयोग करने से अच्छा लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली पोदीने के स्वरस में मिलाकर देवें।

**योगेन्द्र रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह वात-पित्तज रोग, उन्माद, मूर्च्छा, हिस्टीरिया, पक्षाघात, शरीरेन्द्रियों की दुर्बलता आदि के लिये बड़ी मुफीद दवा है। स्वर्ण, कान्त लौह, अभ्रक और मोती, बंग आदि उत्तम धातु भस्म के योग से बना हुआ यह रस हृदय, प्रमेह, शूल, अम्लपित्त और राजयक्ष्मा के लिये भी बहुत उपकारी है। यह बल-वीर्य और स्मृतिवर्द्धक तथा अनेक रोग-नाशक है। बीमारी के बाद की कमजोरी को दूर करने और साधारण कमजोरी में बल बढ़ाने के लिये वैद्यगण इसका प्रयोग करते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम दिन में एक या दो बार। पित्त के विकारों में मिश्री मिले हुये त्रिफला के जल से। हिस्टीरिया में मिश्री मिले हुये जटामांसी के जल से हृदयरोग में अर्जुन छाल के काढ़े के साथ। ताकत के लिये दूध के साथ।

**रत्नगर्भपोट्टली रस**
(भैषज्यरत्नावली)

हीरा, स्वर्ण, मोती, रौप्य-पारद, गन्धक कज्जली आदि बहुमूल्य औषधियों से बनने वाला यह रस क्षय, राजयक्ष्मा (थाइसिस), सब प्रकार की खाँसी, श्वास (दम्मा) संग्रहणी आदि भयंकर रोगों को नाश करता है। यह त्रिदोषघ्न एवं दीपन, पाचन तथा अनन्त शक्तिवर्द्धक रसायन है। वातव्याधि अश्मरी (पथरी), कोढ़, प्रमेह, उदररोग, भगन्दर, बवासीर आदि संसारव्यापी महारोगों मे इसका सेवन अत्यन्त लाभदायक है। ज्वर, अतिसार, सन्निपातादि रोगों में नाड़ी की गति क्षीण हो जाने पर यह अपना अद्भुत गुण दिखलाता है। यह क्षीण रस रक्त, बल, वीर्य आदि सब धातुओं का पोषण कर शरीर को सबल एवं कांतियुक्त बनाने मे श्रेष्ठ है।

माना और अनुपान—आधी से १ रत्ती तक। क्षय, खाँसी, श्वास मे चौसठ प्रहरी पीपल और मधु से। अतिसार, संग्रहणी में भुना हुआ जीरा चूर्ण और मधु से। वातव्याधि में रास्नादि क्वाथ से। अश्मरी-प्रमेह में गोखरू जल से। भगन्दर, कुष्ठ रोग मे खदिर का काढ़ा या मंजिष्ठादि काढ़ा और मधु से। बवासीर मे आंवला-जल या जमीकन्द चूर्ण और मधु से। क्षीण धातुओं को पुष्ट बनाने में अन्य रसायन या च्यवनप्राश के साथ।

**रत्नगिरि रस**
(भैषज्यरत्नावली)

पारा, गन्धक, अभ्रक, स्वर्ण, ताम्र, लौह, वैक्रान्त आदि उत्तम भस्मों के योग से बना हुआ यह रत्नगिरि रस नये बुखार को उतारने में बड़ा अच्छा काम करता है। वात-पित्त और कफ किसी भी दोष से उत्पन्न हुआ नया ज्वर इसके सेवन से छूट जाता है। बलकारक भस्मों के योग के कारण यह बुखार से पैदा हुई दुर्बलता को नष्ट करके रोगी को पूरी शक्ति प्रदान करता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती सुबह-शाम या ज्वर की अवस्थानुसार पीपल और धनियाँ के चूर्ण के साथ मधु मे मिलाकर देना चाहिये।

**रसपीपरी**
(प्रचलित)

यह औषधि बच्चों के लिये अमृततुल्य गुणकारी है। अनुपान भेद से इससे बच्चों के अनेक रोग आराम होते हैं। सर्दी, जुकाम, कफ, खांसी, बुखार, कमजोरी, उल्टी, दस्त आदि बालरोगों में यह अच्छा काम करती है। यह औषधि माता की तरह बच्चों की रक्षा करती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती चार-चार घन्टे बाद। सर्दी, जुकाम, खांसी में अदरख का रस और मधु से। पतले दस्तों में जायफल को पानी में घिसकर उसके साथ देना चाहिये।

**रस माणिक्य**
(भैषज्यरत्नावली)

यह खून विकारों की प्रसिद्ध औषधि है। इसके सेवन से खून की खराबी से पैदा होने वाले वातरक्त, खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी, शरीर में चकत्ते होना आदि बीमारियां अच्छी होती हैं। नासूर, उपदंश और बीची (इकजिमा) में इसके सेवन से लाभ होता है। वात और कफ के दोष से पैदा होने वाले बुखार में भी यह फायदेमन्द है। मवाद वाले फोड़ा-फुन्सी के लिये यह विशेष उपकारी है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ रत्ती तक सुबह शाम, चार आना भर मधु और एक आना भर घी के साथ।

**रसराज रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह शक्तिदायक और त्रिदोषनाशक रसायन है। सब प्रकार के वातरोगों में विशेषतः पक्षाघात, अर्दित, अपतन्त्रक, आक्षेपक, कान में आवाज होना, सिर में चक्कर आना आदि कठिन से कठिन वात रोग में यह रामबाण की तरह अचूक काम करता है। रक्त प्रसादन गुण के कारण यह ब्लडप्रेसर में भी अच्छा काम करता है। हृदय तथा मस्तिष्क के सभी विकारों तथा स्त्री-पुरुषों के जननेन्द्रिय रोगों में और फुफ्फुस की खराबी में इस रसायन से उत्तम लाभ होता है। प्रमेह, नपुंसकता तथा गुर्दे की कमजोरी को दूर करके यह नई शक्ति पैदा करता है। ज्यादा विषयभोग के कारण पैदा हुये सभी विकारों में इसका प्रयोग करना चाहिये। यह हृदय को बलवान बनाकर बल, बुद्धि और कांति बढ़ाने के लिये बहुत अच्छी औषधि है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। पक्षाघात आदि वात विकारों में रास्नादि क्वाथ और मधु से। प्रमेह, नपुँसकता, नामर्दी, गुर्दे की निर्बलता में मक्खन, मिश्री या मलाई से।

**रसादि रस**
(योगरत्नाकर)

बुखार का तापमान जब बहुत बढ़ जाता है, तब बुखार वाले रोगी को बड़े जोर की प्यास और दाह सताने लगती है। ऐसी अवस्था में इस रस की एक-दो गोली देने से तृषा, दाह और

बेचैनी मिट जाती है तथा ज्वर का तापमान घट जाता है। तृषा और दाह की यह खास दवा है। रक्तपित्त की बीमारी में भी इसके सेवन से लाभ होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से ४ गोली तक आवश्यकतानुसार एक-एक गोली मुंह में रखकर चूसना चाहिये।

**रामबाण रस** (भैषज्यरत्नावली) यह पाचक, स्वेदक और मूत्रल है। मूत्र और पसीने के साथ विकार निकलता है। आमवात, अतिसार, आमानुबन्ध, संग्रहणी, कास, श्वास और ज्वर में इससे अच्छा लाभ होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली सुबह-शाम। ज्वर में मधु के साथ। आमविकारों में उष्ण जल या मट्ठे के साथ। कास-श्वास में अदरख का रस और मधु के साथ।

**लक्ष्मीविलास रस** (रसेन्द्रसारसंग्रह) यह वातरोग, श्रम, पाडु, अरुचि, मन्दाग्नि, ग्रहणी, ज्वर तथा वातश्लेष्मज रोगों की उत्तम दवा है।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली सुबह-शाम। पान के रस और मधु के साथ या रोगानुसार।

**लघुमालिनी वसन्त** (रसराजसुन्दर) जीर्ण ज्वर (पुराना बुखार), विषमज्वर, धातुगतज्वर, रक्तातिसार, धातुक्षीणता, स्त्रियों के प्रदर रोग, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी आदि रोगों में विशेष उपयोगी है। रक्त और पित्तजनित विकारों में भी इसका उपयोग किया जाता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ रत्ती तक सुबह-शाम। विषमज्वर, जीर्णज्वर, श्वास, खांसी, मन्दाग्नि में पीपल का चूर्ण १ रत्ती और मधु से। धातुक्षीणता में शहद से चाटकर ऊपर से दूध पीना। रक्तातिसार और प्रदर में हरी दूब के रस से।

नोट—जो वृहत् मालिनी वसन्त न खरीद सकें उन्हें लघुमालिनी वसन्त सेवन कर लाभ उठाना चाहिये।

**लवङ्गाभ्रक योग** (भैषज्यरत्नावली) यह योग ग्राही, दीपन, पाचन, एवं स्तम्भक है। सब प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, प्रवाहिका (पेचिश), अम्लपित्त आदि रोग इसके से नष्ट होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक दिन में ३-४ बार सौंफ अर्क या जल के साथ।

**लक्ष्मीनारायण रस** (वैद्यकसारसंग्रह) वातव्याधि, ज्वर, स्त्रियों का सूतिका रोग, बालकों का कमेड़ा (हाथ-पैर की ऐंठन), दस्त, अपस्मार (मृगी), मूर्च्छा आदि वायुजनित विकारों में लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम, आदि रस और मधु या रोगानुसार।

**लक्ष्मीविलास रस (नारदीय)** (भैषज्यरत्नावली) यह नये और पुराने सब तरह के ज्वर तथा सूखी और गीली दोनों प्रकार की खाँसी की मशहूर दवा है। इसके सेवन से सर्दी, जुकाम से पैदा हुई खाँसी और बुखार, सिर दर्द, सारे बदन में दर्द होना, लार घोटने में तकलीफ होना आदि सभी शिकायतें मिट जाती हैं। यह जीर्णज्वर, विषमज्वर और निराम ज्वर की भी बड़ी अच्छी दवा है। मियादी बुखार में इसके प्रयोग से ज्वर पचकर उतर जाता है तथा किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होने पाता।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली ४-४ घन्टे बाद तीन-चार बार पान का रस और मधु के साथ।

**लक्ष्मीविलास रस** (रसेन्द्रसारसंग्रह) यह सब प्रकार की क्षय, खाँसी, श्वास, पांडु, शोथ, शूल, प्रमेह, बवासीर आदि रोगों को नष्ट कर शरीर को बलवान् बनाता है। इसके सेवनकाल में मछली, मांस, दूध, स्निग्ध भोजन पथ्य है। शाक, खटाई, भुने चने तथा अग्नि का सेवन मना है। नये सर्दी, जुकाम, खाँसी में विशेष फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली दिन में दो-तीन बार, ठण्डा पानी या रोगानुसार।

**लीलाविलास रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह रस पित्त की तीव्रता और खटाई को कम करके अम्ल-पित्त रोग में अच्छा लाभ करता है। तृषा, वमन, हृदय-दाह, कृमि, पांडु, प्रदाह, मूत्रकृच्छ्रता और नेत्रदाह के लिये उत्तम है। गुण धर्म के हिसाब से यह रस उदर और यकृत् की किया को ठीक-ठीक करके पाचक रस को बढ़ाता है और शरीर में बल की वृद्धि करता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम मधु, कुष्मांडावलेह या बकरी के दूध के साथ।

**लोकनाथ रस**
(शार्गंधरसंहिता)

यह राजयक्ष्मा, अतिसार, संग्रहणी, अरुचि, मन्दाग्नि, गुल्म, यकृत्, प्लीहा विकार एवं कास, श्वास में लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—२-४ रत्ती सुबह-शाम। काली मिर्च चूर्ण और मधु से अथवा रोगानुसार अनुपान द्वारा।

**लोकनाथ रस (वृ०)**
(भैषज्यरत्नावली)

यह यकृत्-प्लीहा की परमोपयोगी औषधि है। यकृत् प्लीहा की खराबी से उत्पन्न समस्त विकार इसके सेवन से नष्ट होते हैं। मन्दाग्नि, उदर रोग, शूल, शोथ आदि में इसके सेवन से बड़ा उपकार होता है।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती से ३ रत्ती तक सुबह-शाम मधु और पीपल चूर्ण के साथ चाटकर ऊपर से ६ तोला गोमूत्र पीना चाहिये अथवा गुड़ और हरड़ के चूर्ण के साथ सेवन करना चाहिये। गुड़ और जीरा चूर्ण समान भाग मिलाकर उसके साथ भी सेवन किया जाता है।

**लौह रसायन**
(शार्गंधरसंहिता)

इसके सेवन से रस, बल, वीर्य आदि की वृद्धि होकर शरीर की कान्ति बढ़ती है। नियमित सेवन से वलीपलित-शरीर में सिकुड़न पड़ना तथा बालों का पकना, गिरना आदि रोग आराम होते हैं। यह पांडु, मन्दाग्नि, श्वास, कास, वात-कफजन्य रोग, संग्रहणी, बवासीर, अण्ड कोष का बढ़ना आदि समस्त रोगों को नष्ट कर शरीर को लौह जैसा पुष्ट बनाता है।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती से छः रत्ती तक। शरीर का सिकुड़न, बालों का पकना, झरना आदि में विषम भाग घृत और शहद से चाटकर ऊपर से त्रिफला का काढ़ा पीना। मन्दाग्नि, श्वास, कास, पांडु, कफ तथा वातविकारों में

पीपल चूर्ण और शहद से। वातरक्त, मूत्रदोष, संग्रहणी, बवासीर, अण्डकोष-वृद्धि में गिलोय रस और शहद से।

नोट—लौह रसायन सेवन करने वालों को कुम्हड़ा, तिल तैल, उड़द की बनी चीजें, राई, मद्य, खटाई और मसूर की दाल नहीं खाना चाहिये।

**शक्रवल्लभ रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, रौप्य, लौह, पारद, गन्धक, कज्जली आदि अनेक बहुमूल्य उत्तम औषधियों के मिश्रण से प्रस्तुत यह रस समस्त वीर्य-विकारजन्य रोगों के लिये अमृततुल्य गुणकारी है। अप्राकृतिक मैथुन (हस्त मैथुन) आदि दुष्कर्म अथवा विषयभोग की अधिकता से जिन पुरुषों की इन्द्रिय (लिंगेन्द्रिय) मे शिथिलता—सुस्ती आ गई हो तथा शरीर के बल का ह्रास हो गया हो, उनके लिये इस रस का सेवन परमोपयोगी है। शीघ्र-पतन, नपुंसकता, नामर्दी आदि वीर्य की कमी से पैदा होने वाले रोग इसके सेवन से नष्ट होते हैं तथा शरीर मे पुनः यौवनशक्ति पैदा होती है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक, सुबह-शाम मिश्री मिला हुआ गर्म दूध से।

**शंखोदर रस**
(योगरत्नाकर)

अतिसार (पतले दस्त लगना) और आमातिसार (दस्तों के साथ आँव का जाना) में तथा आमजनित शूल मे इसका उपयोग किया जाता है। इसके सेवन से अजीर्ण के विकार भी नष्ट होते हैं।

मात्रा और अनुमान—१-१ गोली मक्खन मे मिलाकर चाटना।

**शशिशेखर रस**
(भैषज्यरत्नावली)

इस औषधि के सेवन से सब प्रकार के अण्डकोषों का बढ़ना आराम होता है। शल्य-चिकित्सा (चीर-फाड़-अपरेशन) के बिना यह रोग आराम नहीं होता, यह लोगों का भ्रम है; रोग के शुरू होते ही पथ्य-परहेज से अगर इस औषधि का सेवन किया जाय तो निःसन्देह अन्त्रवृद्धि (आँतों का उतरना—हार्नियां आदि) तथा अण्डकोषों के सब प्रकार की सूजन, बढ़ना आदि रोग अच्छे हो जाते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-१ बटी सुबह-शाम दो बार। एरण्डमूल का काढ़ा और सोंठ चूर्ण अथवा बड़ी हर्रे का काढ़ा और शहद से।

**शृङ्गाराभ्र रस**
(भैषज्यरत्नावली)

इस दवा से फुफ्फुस और श्वासयन्त्रों की बीमारी में बहुत लाभ होता है। श्वास, कफ, खांसी, छाती या पसली में दर्द होना, ज्वर, शोथ (सूजन) आदि बीमारियां इसके सेवन से नष्ट होती हैं। अभ्रक का मिश्रण होने से यह अम्लपित्त, पांडु और आमवात में भी लाभदायक है। वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषों की विकृति में इसका अच्छा प्रभाव होता है। यह बल्य, वृष्य रसायन होने के कारण नवयौवन की शक्ति प्रदान करता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। श्वास, खांसी, कफ और पसली के दर्द में अदरख के रस और मधु के साथ। अम्लपित्त में परवल के पत्तों का रस या आमले के पानी से। ज्वर और मन्दाग्नि में पान के रस और मधु के साथ। ताकत के लिये मधु के साथ चाटकर ऊपर से दूध पीना चाहिये।

**श्वासकुठार रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह खाने और सूंघने दोनों ही कामों में आता है। बेहोशी, मूर्छा, हिस्टीरिया और सन्निपात में इसके सूंघाने से रोगी को चैतन्य लाभ हो जाता है। पित्तज कास, श्वास को छोड़कर यह सभी प्रकार के कास-श्वास में लाभ करता है। शिरोरोग में यदि उनका संबंध वात और कफ से है, तो यह अच्छा लाभ पहुंचाता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली चार-चार घण्टा बाद। कास-श्वास में अदरख का रस या पीपल चूर्ण और शहद के साथ। शिरोरोग में दूध या पान के रस और मधु से।

**श्वासचिन्तामणि रस (बृ०)**
(भैषज्यरत्नावली)

यह हृद्य, बल्य, शक्तिवर्द्धक और रसायन है। फेफड़ों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव होता है। संचित विकार को निकालना, फेफड़े को सबल बनाना इसका खास कार्य है। नये पुराने सभी प्रकार के श्वास रोग में इससे बहुत लाभ होता है। दमे के जिन रोगियों को रात-दिन परेशानी रहती है, उन्हें इसका सेवन करना चाहिये। कठिन और जीर्ण कास तथा क्षय में इसका सफल प्रयोग होता है। यह आंत, यकृत, मूत्राशय तथा हृदय की क्रिया को ठीक करता तथा वीर्य को पुष्ट करता है। गुण धर्म के हिसाब से इस रस का प्रभाव

पित्त और विदग्ध पित्त की खराबियाँ, पित्तातिसार, प्रदाह, अम्लपित्त, रक्त-प्रदर, शिरोभ्रम, अंशुघात, नेत्रदाह, प्रवाहिका और रक्तस्राव सम्बन्धी रोग इससे ठीक होते हैं। प्रसूतातिसार और प्रसूत की संग्रहणी मे इसका योग लाभप्रद होता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ रत्ती या १-२ गोली सुबह-शाम। बच्चों को इसकी चौथाई मात्रा। बच्चों के लिये माता के दूध या मधु के साथ। रक्तस्राव सम्बन्धी विकारों में वासा रस और मधु के साथ। अतिसार-संग्रहणी में सोंठ चूर्ण और मधु के साथ। रक्तप्रदर में मौलसरी छाल के क्वाथ के साथ देने से यह सत्वर रक्तस्राव बन्द करता है।

**स्वच्छन्दभैरव रस**
(भैषज्यरत्नावली)

इसके सेवन से सब प्रकार के नवीन ज्वर नष्ट होते हैं। सन्निपातादि ज्वरों में भी लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली तक अवस्थानुसार अदरख के रस, मधु या रोगानुसार।

**स्वर्ण वसन्तमालती**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण और मुक्ता के योग से बनने वाली यह महौषधि शरीर के सभी अंगों और विकारों पर अपना खास असर दिखलाती है। जीर्ण ज्वर, क्षय, कास, श्वास, प्रमेह, पाचनविकार, धातुक्षीणता, हृदय रोग, श्वेतप्रदर, वीर्यस्राव, बहुमूत्र, पांडु, अशक्ति आदि में यह अच्छा लाभ करती है। मस्तिष्क में स्फूर्ति और बल पैदा करना इसका ख़ास कार्य है। सभी प्रकार के स्त्री-पुरुषों, बालकों को सभी ऋतुओं में यह माफिक पड़ती है और निश्चय ही अपना प्रभाव दिखलाती है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ रत्ती तक। जीर्ण ज्वर, कास-श्वास और क्षय में चौंसठ प्रहरी पीपल और मधु अथवा च्यवनप्राश के साथ। धातु-क्षीणता, प्रमेह, प्रदर, बहुमूत्र, सोम रोग में १ रत्ती वसन्तमालती और २ रत्ती शिलाजीत धारोष्ण दूध के साथ। पाचन विकार में भुने हुये जीरे और शहद के साथ।

**स्मृतिसागर रस**
(रसयोगसागर)

स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये यह परमोपयोगी है। इसके सेवन से स्नायविक दुर्बलता मिटती है। मस्तिष्क की कम-जोरी से पैदा होने वाले रोग मूर्च्छा, उन्माद, मृगी,

हिस्टीरिया आदि में इसका प्रयोग बड़ा सुन्दर काम करता है। ज्ञानवाहिनी नाड़ियों को इसके सेवन से बल और चेतना प्राप्त होती है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम मधु के साथ चाटना चाहिये।

**सिद्धप्राणेश्वर रस** (भैषज्यरत्नावली) यह ज्वरातिसार (बुखार की हालत में पतले दस्त होना) की अच्छी दवा है। इसके सेवन से अतिसार की प्रबलता प्रहणी, वातरोग, शूल, परिणाम शूल, साधारण ज्वर, त्रिदोष ज्वर आदि में बड़ा उपकार होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली करके चार-चार घन्टे बाद दिन में चार बार पान के रस और मधु के साथ चाटकर ऊपर से गरम जल पीना चाहिये।

**सुधानिधि रस (शोथ)** (भैषज्यरत्नावली) किसी भी कारण से पैदा हुये नये पुराने सब प्रकार के शोथ (सूजन) रोग की अव्यर्थ दवा है। नमक छोड़कर केवल मट्ठे के साथ व्यवहार करने से कुछ ही दिन में शोथ (सूजन) रोग जड़ से निर्मूल हो जाता है। खासकर पांडु, कामला, जीर्णज्वर तथा संग्रहणी से उत्पन्न शोथ में अत्यन्त लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—२ रत्ती से ४ रत्ती तक सुबह-शाम दिन में दो बार मट्ठा या भांगरे का रस।

**सुधानिधि रस (रक्तपित्त)** (योगरत्नाकर) यह रक्तपित्त की प्रसिद्ध महौषधि है। नाक, मुँह, गुदा या मूत्रेन्द्रिय कहीं से रक्त गिरता हो उसमें बहुत लाभ करता है। खास करके जिन लोगों को नाक से खून गिरता है जिसको नकसीर कहते हैं, उसके लिये बहुत लाभदायक है। इसके सेवन के समय गोदुग्ध को लौहपात्र में गरम कर रात्रि में लेना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। दुर्वा रस या कमल-पत्र के रस १ तोला और मधु एक तोला अथवा उशीरासव २ तोला के साथ।

**सुवर्ण मालिनीवसन्त (वृहत्)**
(रसयोगसागर)

जीर्ण ज्वर (पुराना बुखार), विषमज्वर, धातुक्षीणता, श्वास, कास, प्रदर आदि रोगों में विशेष उपयोगी है। ज्वर के बाद अथवा किसी भी कारण से पैदा हुई दुर्बलता में इस महोपयोगी रसायन का उत्तम प्रभाव होता है। इसमें सुवर्ण, मोती आदि उत्तम औषधियों का योग होने से यक्ष्मा जैसा भयानक रोग और हृदय की दुर्बलता के लिये फायदेमन्द है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से २ रत्ती तक सुबह-शाम। जीर्ण ज्वर और श्वास, कास में पीपल का चूर्ण और मधु से। क्षय में मक्खन और मिश्री के साथ। हृदय के रोगों में मधु से चाटकर अर्जुन छाल का क्वाथ पीना। दुर्बलता अथवा साधारण रोगों में मधु से चाटकर दूध पीना।

**सुवर्ण मालिनीवसंत**
(रसयोगसागर)

वृहत् सुवर्ण मालिनी बसन्त से किंचित् न्यून गुणयुक्त पौष्टिक रसायन है।

**मात्रा और अनुपान**—वृहत् सुवर्ण मालिनी-बसन्त के समान ही है।

**सूतशेखर रस (सुवर्णयुक्त) नं० १**
(योगरत्नाकर)

अम्लपित्त, वमन (कै), अतिसार, उदरशूल, गुल्म, खाँसी, संग्रहणी, मन्दाग्नि, उदरावर्त (पेट फूलना), हिक्का (हिचकी) आदि अनेक रोगों में फायदेमन्द है। श्वास रोग तथा राजयक्ष्मा में भी इसका प्रयोग किया जाता है। रोगानुसार अनुपान से अनेक रोगों में लाभ होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से ३ रत्ती तक सुबह-शाम। अम्लपित्त, उदरशूल, गुल्म, उदावर्त में—१॥ माशा घी, ३ माशा शहद के साथ। पित्त विकार में शक्कर की चासनी या आमला के मुरब्बा से। विशेष रोगों में विशेष रोगानुपान से।

नोट—अनुपान में घी और मधु समान भाग (बराबर) नहीं लेना चाहिये अर्थात् घी कम लेना और शहद ज्यादा लेना चाहिये।

## सूतशेखर रस (सुवर्णरहित) नं० २
(रसयोगसागर)

उपरोक्त नं० १ से गुणों में न्यून है। अम्लपित्त, भ्रमरोग और मूत्रकृच्छ्र रोग के लिये विशेष फायदेमन्द है। मात्रा और अनुपान—नं० १ के मुताबिक है तथा मूत्रकृच्छ्र में गोखरू के क्वाथ के साथ।

## सूतिकारि रस
(भैषज्यरत्नावली)

स्त्रियों को बच्चा पैदा होने के बाद ज्वर, हाथ-पांव में जलन, खांसी, प्यास की अधिकता, भोजन में अरुचि, शोथ (सूजन) मूत्रमार्ग से सफेद जैसा धातु पदार्थ का निरन्तर बहना आदि तरह-तरह के उपद्रव पैदा हो जाते हैं, जिससे स्त्रियां बिल्कुल कमजोर और शक्तिहीन हो जाती हैं और उनका दूध पीने से बच्चों को भी नाना प्रकार के रोग आ घेरते हैं। इस रस के सेवन से प्रसूता के सब प्रकार के रोग नाश होकर अग्नि तथा बल की वृद्धि होती है। यह प्रसूत रोग की अच्छी औषधि है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। आदी रस और मधु अथवा दशमूल क्वाथ और मधु से।

## सूतिकाविनोद रस (बृ०)
(भैषज्यरत्नावली)

प्रसूत विकारों की प्रसिद्ध दवा है। इसके सेवन से प्रसूता के ज्वर, शूल, विष्टम्भ, अजीर्ण आदि समस्त रोग नष्ट होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक सुबह-शाम। दशमूल काढ़ा और शहद।

## सोमनाथ रस
(रसयोगसागर)

यह स्त्रियों के सोम रोग की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। इस बीमारी में सफेद रंग का ठंडा, दुर्गन्धरहित, निर्मल पेशाब बार-बार होता है। शरीर धारण करने वाली धातुएं पेशाब के साथ निकलती रहती हैं, जिससे स्त्रियों की शक्ति का ह्रास होता रहता है, शरीर अत्यन्त दुर्बल हो जाता है, हमेशा तृषा बनी रहती है, मस्तिष्क सूना हो जाने के कारण मूर्च्छा, प्रलाप आदि उपद्रव पैदा हो जाते हैं। इस रस के सेवन से सोम रोग और उससे पैदा होने वाली सभी शिकायतें दूर होती हैं। इसके अलावा सब तरह के प्रदर, योनि का दर्द, पुराना शूल, बहुमूत्र आदि रोग इसके प्रयोग से आराम होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। मधु के साथ चाटकर ऊपर से बकरी का दूध पीना चाहिये।

**सोमनाथ रस (बृ०)**
(भैषज्यरत्नावली)

यह गुणों में सोमनाथ रस की तरह ही फायदेमन्द है, किन्तु इसमें स्वर्ण, वंग, अभ्र और रौप्य भस्म आदि का मिश्रण होन के कारण यह २० प्रकार के प्रमेह, मूत्र-कृच्छ्र, बहुमूत्र, स्त्रियों के सोम रोग और मूत्र सम्बन्धी सभी रोगों के लिये विशेष लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम, मधु के साथ चाटकर ऊपर से बकरी या गाय का दूध पीना चाहिये।

**सोमेश्वर रस**
(रसराजसुन्दर, मथुरा)

यह स्त्रियों के सोम रोग में बहुत फायदा करता है। सोम रोग के अलावा सब तरह के प्रमेहों में भी लाभ-कारी है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। काला तिल या पका केला अथवा आमला स्वरस और मधु। बकरी का दूध और नारियल का जल भी अनुपान मे दिया जाता है।

**हृदयार्णव रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह हृदय रोग की सर्वोत्तम दवा है। इससे हृदय की कमजोरी हृदय का अधिक धड़कना, हृदय का दर्द, छाती का दर्द आदि रोग अच्छे होते हैं। इसके सेवन से हृदय की गति नियमित होती है और हृदय को बल मिलता है।

**हिंगुलेश्वर रस**
(भैषज्यरत्नावली)

यह वातज्वर और नये बुखार के लिये उत्तम है। यह बुखार चढ़े रहने की हालत में भी दिया जा सकता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली। शहद के साथ।

**हेमनाथ रस**
(भैषज्यरत्नावली)

स्वर्ण, लौह आदि प्रधान भस्मों के योग से बना हुआ यह रस प्रमेह की अचूक औषधि है। मूत्राशय, वृक्क और वीर्यवाहिनी नाड़ियों की दुर्बलता को दूर कर उनकी क्रिया को ठीक करता है। पेशाब में जाने वाला वीर्य बन्द हो जाता है, स्त्रियों का सोम रोग और श्वेत प्रदर इससे जल्दी ठीक हो जाता है। बहुमूत्र, प्रमेह, नपुँसकता, शीघ्रपतन, वीर्य

का पतलापन, कमर का दर्द, पैरों की फड़कन, स्वप्नदोष, मधुमेह और अशक्ति पर इस रस का बड़ा अच्छा प्रभाव होता है। यह रस कुछ कब्ज करता है, अतः इसके सेवन के समय दूध और फलों की मात्रा बढ़ा देनी चाहिये।

**मात्रा और अनुपान**—१-१ गोली सुबह-शाम। सोम रोग, प्रदर, वीर्य-विकार एवं प्रमेह में गुड़ूची का रस और मधु के साथ। मधुमेह में जामुन गुठली चूर्ण और मधु से।

**हेमगर्भपोट्टली रस**
(शार्ङ्गधरसंहिता)

यह सोने की पोट्टली दीपन, पाचन तथा त्रिदोष नाशक एवं अत्यन्त शक्तिवर्द्धक है। इसके सेवन से राजयक्ष्मा (थाइसिस), संग्रहणी, हृद्रोग, श्वास-कास आदि कठिन से कठिन अनेकों रोग अच्छे होते हैं। वात-कफ के विकार, जीर्णातिसार, पांडु, सूजन आदि रोगों में भी इसका बहुत अच्छा प्रभाव होता है। यह शरीर की जीवनी शक्ति को बढ़ाती एवं पुष्ट करती है। शीतांग की दशा में यह गर्मी लाती और सन्निपात के उपद्रवों में रामबाण की तरह काम करती है। संग्रहणी की खराब से खराब दशा में इसका प्रयोग किया जाता है। रस, रक्त, वीर्य एवं बल को बढ़ाने और शरीर को नीरोग रखने के लिये यह पुष्टिकारक रसायन है। राजयक्ष्मा की प्रसिद्ध महौषधि है।

**मात्रा और अनुपान**—चौथाई से १ रत्ती तक। कफ, खाँसी, श्वास और क्षय में पीपल चूर्ण और शहद के साथ। संग्रहणी में भुना हुआ जीरा और शहद के साथ। बल, वीर्य आदि के लिये मलाई के साथ।

## लौह-मण्डूर

आयुर्वेद शास्त्र में लौह मिश्रित दवाओं का बहुत महत्व है; क्योंकि लौह भस्म से बनी हुई दवा खून बढ़ाने में और अग्नि वृद्धि में अद्वितीय होती है। मण्डूर भी लौह का मैल है। इसकी सुबह और शाम या रोगानुसार एक-एक खुराक मधु, गोमूत्र या मट्ठा (छाछ) के साथ लेनी चाहिये। बच्चों को चौथाई मात्रा देनी चाहिये।

**अग्निमुख लौह**
**(भैषज्यरत्नावली)**

बादी बवासीर में अग्निमुख लौह के सेवन से बहुत जल्दी लाभ होने लगता है। क्योंकि इसके प्रयोग से अग्नि प्रदीप्त होती है और मस्से सूखने लगते हैं। पीलिया, सूजन, तिल्ली बढ़ जाना, आमवात और मन्दाग्नि में भी इस दवा का अच्छा प्रभाव होता है। मन्दाग्नि से होने वाले रोग इसके सेवन से जरूर अच्छे होते हैं।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ रत्ती, दिन में दो बार। बवासीर में जमीकन्द या निम्बोली के चूर्ण के साथ। मन्दाग्नि में गरम जल और नीबू के रस से। सूजन, पीलिया में पुनर्नवा रस और मधु से। कुपथ्य—कांजी, करीर (टेंट), कोहड़ा, ककड़ी, करेला आदि नहीं खाना चाहिये।

**अष्टादशाङ्ग लौह**
**(भावप्रकाश)**

यह पांडु (पीलिया), कामला, हलीमक, शोथ ( सूजन ) आदि की अव्यर्थ महौषधि है। अनेक कटु, तिक्त ओषधियों के साथ लौह का योग होने से श्वास, खाँसी, रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी, आमवात, गुल्म, सब प्रकार के घाव, कुष्ठ, कफ के विकार आदि भी इसके सेवन से आराम होते हैं। तक्र (मट्ठा) के साथ इस दवा का व्यवहार पांडु रोग को समूल नष्ट करता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम मधु से चाटकर ऊपर से गोमूत्र या कुटकी का काढ़ा पीना चाहिये।

नोट—इसके सेवन के समय जौ, गेहूं की रोटी, पुराना शाली चावल, जङ्गली जीवों का मांस, मूंग, अरहर, मसूर की दाल खाना अत्यन्त लाभदायक है।

**अम्लपित्तान्तकलौह**
**(भैषज्यरत्नावली)**

यकृत् और पित्ताशय की विकृति को ठीक करके विदग्ध पित्त को नष्ट करना इसका खास कार्य है। अम्लपित्त, पित्त सम्बन्धी शूल तथा अन्य पित्त-विकारों में भी इसका अच्छा कार्य होता है। यकृत्, शूल, पिपासा, मूत्रदाह, उदरशूल, पतले दस्त और बच्चों को दूध की उल्टी होना, गर्भवती स्त्री की वमन इससे ठीक हो जाती है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक। अम्लपित्त में धनियां, हर्रे और सौंफ के क्वाथ से।

**कालमेघ नवायस** (सिद्धयोगसंग्रह) जीर्ण ज्वर, विषमज्वर (मलेरिया), ज्वर के बाद की कमजोरी, पांडु (पीलिया) और लीवर की वृद्धि होने पर इसका प्रयोग उत्तम है।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ रत्ती तक, सुबह-शाम। मधु, जल या रोगानुसार।

**कार्श्यहर लौह** (रसेन्द्रसारसंग्रह) यह बल, वीर्यवर्द्धक, अग्निदीपक, वृष्य एवं रसायन है। इसके सेवन से शरीर में नया खून पैदा होता तथा कृषता-दुर्बलता, कमजोरी आदि नष्ट होकर शरीर स्वस्थ, सुन्दर, कान्तियुक्त, पुष्ट एवं बलवान होजाता है। दुबले-पतले, कमजोर इसके सेवन से मोटे-ताजे होजाते हैं।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ रत्ती तक, सुबह-शाम। विषम भाग घी और मधु से चाटकर गर्म दूध पीना अथवा केवल दूध से।

**गुडूच्यादि लौह** (भैषज्यरत्नावली) इस लौह के सेवन से वातरक्त तथा शरीर में फोड़े-फुन्सी होना आदि रोग आराम होते हैं। लौह की प्रधानता से रक्त शुद्ध होकर रक्त की वृद्धि होती है। पित्तजन्य विकारों में लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-१ वटी सुबह-शाम। गिलोय का काढ़ा या धनियां और परवल के पत्ते के काढ़ा से।

**चंदनादि लौह** (भैषज्यरत्नावली) लौह का यह सौम्य योग है। बार-बार आने वाले तथा विषम और जीर्णज्वर में इसका अच्छा असर होता है। यह पाचन-विकार को ठीक करके रक्तगति को नियमित करता है। नेत्र-दाह, शिरोवेदना, प्रदाह और पित्तज विकारों में इसका सौम्य गुण खास लाभ करता है। प्रमेह और प्रदर रोगों में भी लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार। ज्वर में गुडूची-आमला और मधु से। नेत्रों की जलन, शिर के दर्द में मिश्री और मक्खन से।

**चन्द्रामृत लौह** (रसेन्द्रसारसंग्रह) चन्द्रामृत लौह के गुण और अनुपान चन्द्रामृत रस के समान ही हैं। किन्तु चन्द्रामृत लौह में मनःशिला के योग से पुट दी हुई लौह भस्म की मात्रा अधिक है, इसलिए थोड़ी मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

**तारा मण्डूर** (भैषज्यरत्नावली) पंक्तिशूल (भोजन पचने के समय पेट में जोरों से दर्द होना), पांडु (पीलिया), कामला, हाथ-पैरों या सारे शरीर से सूजन होना, अग्नि मन्द होना, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म और अम्लपित्त आदि रोगों में इस दवा के सेवन से अच्छा लाभ होता है। परिणामशूल में भी फायदेमन्द है।

**मात्रा और अनुपान**—एक गोली भोजन के पहले, एक गोली भोजन के बीच में (आधा भोजन कर लेने पर) और एक गोली भोजन के बाद ताजा पानी के साथ। दिन-रात में दो बार भोजन के समय सेवन करना चाहिये।

परहेज—सूखे साग, खटाई, चरपरी चीजें, गरम मसाला आदि विदाही पदार्थ तथा मावा, मैदा, बेसन आदि से बना हुआ भारी भोजन नहीं खाना चाहिये।

**त्र्यूषणादि मण्डूर** (भैषज्यरत्नावली) इसके प्रयोग से पांडु, कामला, हलीमक, शोथ, यकृत्, प्लीहा विकार, कुष्ठ, अर्श, ग्रहणी आदि रोग समूल नष्ट होते हैं। इससे शरीर में नये खून की खूब वृद्धि होती है।

**मात्रा और अनुपान**—२-४ रत्ती दिन में दो बार मधु और गोमूत्र से।

**त्रिफला मंडूर** (भैषज्यरत्नावली) यह अम्लपित्त से उत्पन्न शूल रोग की खास दवा है। इसके सेवन से पांडु, कामला, कब्ज आदि पेट सम्बन्धी रोग अच्छे होते हैं। लीवर की क्रिया को यह ठीक करता है।

**मात्रा और अनुपान**—एक गोली सुबह, एक गोली शाम को घी और मधु से।

नोट—घी और मधु की तादाद बराबर नहीं होनी चाहिये, बराबर होने से जहर हो जाता है।

**धात्री लौह** (भैषज्यरत्नावली) यह परिणामशूल (खाने के बाद पेट में दर्द होना), पंक्तिशूल (भोजन पचने के समय पेट में दर्द होना), अजीर्ण, अम्लपित्त, अम्लशूल, कब्ज, गले में जलन होना, खट्टी डकारों का आना आदि रोगों की परीक्षित दवा है। इसके सेवन से पाचन क्रिया पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इससे नेत्रों की ज्योति बढ़ती है और यह बालों के लिये भी हितकर है।

**मात्रा और अनुपान**—भोजन के पहले, बीच में और अन्त में एक-एक गोली घी और मधु के साथ, भोजन के बाद दोनों समय सेवन करना चाहिये।

**नवायस मंडूर**
**(रसयोगसागर)**

पांडु, कामला, मन्दाग्नि, लीवर के दोष से या पेट की खराबी से होने वाले बुखार में इस दवा से अच्छा लाभ होता है। इसके सेवन से अग्नि तेज होती तथा लीवर की क्रिया ठीक होती है। बच्चों को प्रायः लीवर की बीमारी ज्यादा होती है, जिसमे बच्चा सूखने लगता है, हाथ-पैर पतले हो जाते हैं तथा पेट बढ़ जाता है। ऐसी हालत में नवायस मंडूर का सेवन कराकर लाभ उठाना चाहिये। यह पूल बढ़ाने में भी उत्तम है।

मात्रा और अनुपान—६ रत्ती, बच्चे को १ से ३ रत्ती तक। मधु से चाटकर ऊपर से गोमूत्र १ तोला से ५ तोला तक पीना चाहिये।

**नवायस लौह**
**(भैषज्यरत्नावली)**

यह लौहकल्प पाचक, दीपक, रसायन और रक्तवर्द्धक है। इसके सेवन से रक्ताणुओं की वृद्धि जल्दी हो जाती है और रक्तगति का का कार्य भी ठीक होने लगता है। शोथ, पांडु, मन्दाग्नि, अर्श, कृमि, भगन्दर, हृदय और उदर रोग पर इसका अच्छा प्रभाव होता है। इसके सेवन से यकृत् की क्रिया ठीक होकर पाचक और रंजक पित्त की निर्माण क्रिया नियमित होने लगती है। अतः शोथ और रक्ताल्पता में यह चमत्कारी लाभ करता है।

मात्रा और अनुपान—२ से ४ रत्ती तक, सुबह-शाम दिन में दो बार। शोथ में गोमूत्र के साथ। रक्ताल्पता में धारोष्ण दूध से। कृमि रोग में विडङ्ग चूर्ण और मधु से। हृद्रोगों में अर्जुन क्वाथ से। पांडु रोग में पुनर्नवा रस और मधुसे।

**प्रदरारि लौह**
**(भैषज्यरत्नावली)**

केवल लौह ही प्रदर के रक्तस्राव को रोकता है और इस औषध में तो उसकी शक्ति और भी बढ़ गई है। सभी प्रकार के प्रदर रोग इससे अच्छे होते हैं। खूनी बवासीर और रक्तपित्त में भी इससे लाभ होता है। रक्तस्राव के कारण हुई निर्बलता, अरुचि आदि विकार भी इससे ठीक हो जाते हैं। रक्ताणुओं को बढ़ाना भी इसका गुण है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। सभी प्रकार के प्रदर रोगों में अशोक छाल के क्वाथ से। रक्तार्श और रक्तपित्त में मक्खन, मिश्री या बासा रस से।

**प्रदरान्तक लौह**
(रसयोगसागर)

यह सब प्रकार के नीले, रक्त, श्वेत प्रदर, कुक्षि, कटि एवं योनिशूल, अरुचि, मन्दाग्नि आदि को नष्ट कर मासिकधर्म साफ लाता है। सब प्रकार के जीर्ण एवं असाध्य प्रदर भी इसके सेवन से नष्ट होते हैं। गर्भाशय एवं बीजकोप की शिथिलता में इसका प्रयोग सुन्दर कार्य करता है।

**मात्रा और अनुपान**—३-४ रत्ती, दिन में दो बार। मिश्री और घृत १-१ माशा तथा शहद ३ माशा के साथ।

**पिप्पल्यादि लौह**
(भैषज्यरत्नावली)

यह कास, श्वास, हिक्का (हिचकी), वमन आदि की सर्वोत्कृष्ट दवा है। छाती एवं कण्ठ में कफ जम जाने पर बहुत खाँसने पर थोड़ासा कफ निकलता है और रोगी को बड़ी परेशानी होती है। ऐसी अवस्था में इसकी १-२ मात्रा से ही तत्काल लाभ नजर आता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली, दिन में २-३ बार। शहद और बहेड़ामींगी चूर्ण के साथ।

**पुनर्नवा मंडूर**
(भैषज्यरत्नावली)

मण्डूर और पुनर्नवा का यह रसायनिक योग शरीर में खून बढ़ाता है और सूजन को नष्ट करता है। आँतों को बलवान बनाकर रक्ताणुओं में घुसे हुये विषदोष को निकालता है और समूचे शरीर की सूजन को नष्ट कर देता है। इसके प्रयोग से टट्टी और पेशाब की क्रिया ठीक होती है और रक्त की गति नियमित होकर शरीर में नया रक्त बढ़ता है। सूजन, पेट के रोग, प्लीहा, बवासीर, कृमि, वातरक्त, कफ, खाँसी और आन्त्रिक क्षय में इससे अच्छा लाभ होता है। शोथ में महोपकारी योग है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली सुबह-शाम। शोथ रोग में गोमूत्र के साथ। पांडु में पुनर्नवा रस के साथ। उदर रोगों में जल से।

**वरुणाद्य लौह**
(भैषज्यरत्नावली)

अश्मरी (पथरी), मूत्रकृच्छ्र, गनोरिया (सूजाक) आदि रोगों में पेशाब न होने के कारण असह्य वेदना पैदा होती है और रोगी कष्ट से चिल्लाने लगता है। उस समय इस दवा के सेवन से लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ माशा तक अवस्थानुसार। पथरी रोगों में कुलथी का काढ़ा और यवक्षार ≈) भर के साथ। मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र में गोखरू क्वाथ या तृणपञ्चमूल क्वाथ से। सूजाक में दूध या दही की लस्सी अथवा डाभ (नारियल) के पानी से।

**विडङ्ग लौह** (रसेन्द्रसारसंग्रह) इसके सेवन से उदरकृमि, अर्श, अरुचि, मन्दाग्नि, विसूचिका, शोथ, शूल, ज्वर, हिक्का, कास और श्वास का नाश होता है। कृमि रोग की प्रसिद्ध दवा।

मात्रा और अनुपान—२-४ रत्ती सुबह-शाम। खुरासानी अजवायन का काढ़ा या प्याज-रस के साथ या जल से।

**विषमज्वरान्तक लौह (पुटपक्व)** (भैषज्यरत्नावली) यह ज्वर मात्र की उत्तम औषधि है। खासकर विषमज्वर की यह अचूक दवा है। वात, पित्त और कफ से पैदा होने वाले ८ प्रकार के ज्वर तथा एकतरा, तिजारी, चौथिया, पारी का बुखार आदि सभी बुखार आराम होते हैं। यह कामला, पांडु, शोथ, प्रमेह, ग्रहणी, आमदोष, कफ, खांसी, श्वास, मूत्रकृच्छ्र और अतिसार आदि की भी अच्छी दवा है।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती। पीपल चूर्ण, भुनी हुई हींग और सेंधा नमक के साथ, ऊपर से गर्म जल पीना चाहिये अथवा रोगानुसार अनुपान से।

**मण्डूर वटक** (शार्ङ्गधरसंहिता) यह पांडु, कामला, यकृत्, प्लीहा वृद्धि, शोथ, प्रमेह, अर्श (बवासीर), कफविकार, अजीर्ण आदि की श्रेष्ठ महौषधि है। इससे रक्त की वृद्धि होकर शरीर बलवान होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। मट्ठा या गोमूत्र से।

**यकृत्प्लीहारि लौह** (भैषज्यरत्नावली) मनुष्य के शरीर में यकृत् और प्लीहा (तिल्ली) दो मुख्य यन्त्र हैं। इनमें किसी तरह का विकार उत्पन्न होजाने से अन्न का परिपाक अच्छी तरह से नहीं होता। जिसके कारण रस, रक्त, वीर्य आदि शरीर-पोषक सप्त धातुओं के उचित परिमाण में न बनने के कारण शरीर सूख जाता है, हाथ-पांव पतले हो जाते हैं, पेट निकल आता है, शरीर की कांति नष्ट होकर शरीर पीला पड़ जाता है। इस अवस्था में

इस औषधि का सेवन निश्चय फायदा करता है। इसके अतिरिक्त सब प्रकार के उदर रोग, ज्वर, आफरा, पांडु रोग, कामला, हलीमक, सूजन, मन्दाग्नि, अरुचि आदि रोग भी आराम होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। गोमूत्र या जल से।

**यकृदरि लौह**
(भैषज्यरत्नावली)

यह यकृत्, प्लीहा की मशहूर दवा है। यकृत्-प्लीहा के बढ़ जाने या विकृत हो जाने पर अन्न अच्छी तरह से हजम नहीं होता, पाचनक्रिया खराब हो जाती है, जिससे रस, रक्त, वीर्य आदि उचित परिमाण में नहीं बनता, बुखार आने लगता है और रोगी का शरीर सूखकर कांटा हो जाता है। हाथ-पैर सूज जाते हैं और पेट बढ़ जाता है तथा चेहरा पीला पड़ जाता है। ऐसी हालत में इसके सेवन से बहुत फायदा होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम, जल या गोमूत्र के साथ।

**यक्ष्मारि लौह**
(भैषज्यरत्नावली)

यह राजयक्ष्मा रोग की उत्तम दवा है। पथ्य-पूर्वक इसका व्यवहार करने से राजयक्ष्मा और उसके उपद्रव समूल नष्ट होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली दिन में दो बार। धारोष्ण बकरी का दूध या वासक रस और मधु से।

**रक्तपित्तान्तक लौह**
(भैषज्यरत्नावली)

लौह का यह सौम्य कल्प रक्त की गर्मी को शान्त करके मुख, गुदा, नाक आदि से गिरने वाले रक्त को जल्दी बन्द कर देता है तथा रक्तस्राव से उत्पन्न निर्बलता और रक्ताल्पता आदि विकार भी इससे ठीक हो जाते हैं। विदग्ध पित्त की खराबी भी इससे ठीक होती तथा अम्लपित्त में भी इससे लाभ होता है। रक्तपित्त की सर्वोत्तम दवा है।

मात्रा और अनुपान—२-४ रत्ती सुबह-शाम। वासा क्वाथ या हरी दूब के रस के साथ।

**रोहितक लौह**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यकृत् और प्लीहा की वृद्धि, पांडु, शोथ और जीर्णज्वर में अच्छा फायदा करता है।

मात्रा और अनुपान—२-३ रत्ती, दिन में दो बार। दूध या छाछ के साथ।

**शोथारि मंडूर** (भैषज्यरत्नावली) किसी भी कारण से शरीर के किसी एक अङ्ग में या समूचे शरीर में शोथ हो जाने पर इस दवा के सेवन से निश्चित रूप से फायदा होता है। मण्डूर का मिश्रण होने के कारण यह यकृत् की खराबी और पांडु रोग के लिये भी लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। पुनर्नवा का रस या गोमूत्र तथा दशमूल के काढ़ा के साथ।

**शोथारि लौह** (भैषज्यरत्नावली) शरीर के किसी भाग में शोथ पैदा होने पर इस औषधि के सेवन से बहुत फायदा होता है। नमक छोड़कर अगर नियमित रूप से इस दवा का व्यवहार किया जाय तो सब प्रकार की सूजन अवश्य नष्ट होती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। त्रिफला क्वाथ या गर्म जल अथवा गोमूत्र से।

**शोथोदरारि लौह** (भैषज्यरत्नावली) सब प्रकार के शोथ की यह मशहूर दवा है। इसके सेवन से पुराना से पुराना शोथ रोग आराम होता है। स्वर्णमाक्षिक, अभ्रक और ताम्र भस्म का मिश्रण होने के कारण यह उदर रोग, पांडु और कामला के लिये भी बहुत उपकारी है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम पुनर्नवा के रस या काढ़े के साथ।

**सप्तामृत लौह** (भैषज्यरत्नावली) यह सब प्रकार के नेत्र रोगों की खास दवा है। इसके नियमित सेवन से दृष्टिशक्ति की कमी, आंखों की लाली, आँखों से पानी गिरना, धुन्ध, मोंड़ा, जाला, रतौंधी, आँखों का दर्द, सूजन, आँखों में खाज होना, आँखों के आगे अन्धेरा छा जाना आदि सभी विकार और नेत्ररोग आराम होते हैं। इससे दस्त साफ आता है, अग्नि प्रदीप्त होती तथा आंखों की दृष्टिशक्ति बढ़ती है। लौह का प्रधान मिश्रण होने के कारण यह औषधि खून को भी बढ़ाती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली, रोगानुसार १ माशा घी और ३ माशा मधु मिला कर चाटना और ऊपर से गौ या बकरी का दूध पीना चाहिये।

**सर्वज्वरहर लौह**
(भैषज्यरत्नावली)

यह सब तरह के ज्वरों की परमोपयोगी औषधि है। इससे वात, पित्त और कफ के नये या पुराने ज्वर, सन्निपात, विषमज्वर, धातुस्थज्वर, जाड़ा देकर आने वाला ज्वर आदि बुखार आराम होते हैं। इसमें लौह का प्रधान मिश्रण होने के कारण यह मन्दाग्नि, अतिसार, प्लीहा, यकृत्, गुल्म, आमवात, अजीर्ण, ग्रहणी, पांडु, शोथ, दुर्बलता आदि रोगों के लिये बहुत ही फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम हरसिंगार की पत्ती का रस और मधु के साथ।

**सर्वज्वरहर लौह (बृहत्)**
(भैषज्यरत्नावली)

इसका यथा नाम तथा गुण है। इससे शरीर में घुसे हुये सभी प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं। इसका रक्तप्रसादन और कीटाणुनाशक गुण जीर्ण ज्वर, मलेरिया तथा अन्य ज्वरों के विष को बलात् नष्ट करता है। जो ज्वर अन्य औषधियों से नहीं जाते, वे इससे चले जाते हैं। प्रारम्भिक क्षय में भी इसका अच्छा प्रभाव होता है। जीर्ण ज्वर वाले रोगी की शक्ति को बनाये रखने का विशेष गुण इसमें मौजूद है तथा ज्वर से कास, श्वास, अतिसार आदि उपद्रव भी इससे नष्ट हो जाते हैं। यह हृदय तथा आँतों को बल देता तथा शरीर में संचित विकारी द्रव्यों को जल्दी निकाल देता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। जीर्ण ज्वरों में सुदर्शन अर्क के साथ। विषमज्वरों में तुलसी रस और मधु के साथ। क्षय में पीपल का चूर्ण और मधु के साथ। वातज्वरों में अदरख का रस और मधु के साथ। पित्तज्वरों में सितोपलादि चूर्ण के साथ। कफज्वर में पान के रस और मधु के साथ।

# वटी-गोलियाँ

स्वादिष्ट हाजमा करने वाली गोलियां भोजन के बाद और रोगनाशक गोलियां सुबह और शाम उचित अनुपान के साथ लेनी चाहिये। जिन वटियों में कुचला या अफीम हो उनकी खुराक १ गोली से ज्यादे नहीं है। स्वादिष्ट वटियाँ

बिना अनुपान के भी चूसकर खाई जाती हैं। मात्रा प्रत्येक औषधि के साथ लिखी गई है। बच्चों को उसकी चौथाई मात्रा देनी चाहिये।

**अग्निवर्द्धक वटी**
(सिद्धभैषजमणिमाला)

यह अत्यन्त स्वादिष्ट और पाचक वटी है। इससे भोजन पचकर खूब भूख लगती है। एक-दो गोली खाते ही मुँह का बिगड़ा स्वाद तुरन्त ठीक हो जाता है। मंदाग्नि में यह अग्नि को चैतन्य कर भूख को जगा देती है। दिन-रात में ४-५ वटी तक चूसना चाहिये। जिन्हें बराबर भूख की शिकायत रहती हो उन्हें इस वटी का जरूर सेवन करना चाहिये।

**अपतन्त्रकारि वटी**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) रोग की अत्युत्तम शीघ्र फलप्रद महौषध है। अन्यान्य वातविकारों में भी लाभप्रद है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली करके दिन में तीन-चार बार जटामांसी, असगन्द और खुरासानी अजवायन के क्वाथ के साथ देना चाहिये।

**अर्शोघ्नी वटी**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह खूनी और बादी दोनों तरह की बवासीर की उत्तम दवा है। बवासीर से जब जोरों का रक्तस्राव होता हो तो इसका प्रयोग बहुत जल्द खून को रोक देता है। नियमित सेवन से यह बवासीर को जड़ से मिटा देती है। बढ़े हुये मस्से इसके सेवन से सूख जाते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली दिन में तीन-चार बार मट्ठा या ठंडे जल के साथ।

**एलादि वटी**
(योगचिन्तामणि)

सूखी खाँसी, क्षय की खाँसी, रक्तपित्त, मुँह से खून गिरना, बुखार, वमन, मूर्च्छा, प्यास, जी घबड़ाना, स्वरभेद और पित्त के विकारों में इस वटी से बहुत लाभ होता है। यह गोली तर्पण और वृष्य है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली मुँह में डालकर दिनभर में १ से ८ गोली तक चूसना चाहिये।

**कर्पूरादि वटिका** (अनुभूत) — मुँह में छाले पड़ना या मुँह से बदबू आना, दांतों से पीप निकलना, मसूड़े फूल जाना तथा अन्य मुखरोगों मे भी फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—दिनभर में ४ से ६ गोली तक एक-एक करके मुँह मे डालकर चूसना चाहिये।

**कृमिघातिनी वटी** (भैषज्यरत्नावली) — कृमि रोग प्रायः बच्चों को होता है जिससे बच्चा सूखने लगता है, टट्टी बदरंग होने लगती है तथा बच्चे का खाना पीना भी कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में कृमिघातिनी गुटिका का सेवन कराने से कृमि नष्ट हो जाते हैं तथा और कृमि पैदा नहीं होते। कृमि रोग बड़े आदमी को हो या बच्चे को हो सभी मे इससे फायदा होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली, बच्चे को आधी या चौथाई गोली ताजे जल से। सुबह-शाम दिन में दो बार। प्यास लगे तब नागरमोथा का काढ़ा या मूषाकर्णी का काढ़ा चीनी मिलाकर पीना चाहिये।

**कुटजघन वटी** (सिद्धयोगसंग्रह) — अतिसार, संग्रहणी और ज्वर में जब पतले दस्त होते हों तब इसके प्रयोग से अच्छा लाभ होता है। खूनी बवासीर में भी इससे लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—२-४ गोली, दिन में तीन-चार बार सौंफ अर्क या ठंडे जल के साथ।

**कांकायन वटी (गुल्म)** (भैषज्यरत्नावली) — सभी प्रकार के गुल्म रोग की यह प्रसिद्ध और अनुभूत दवा है। कृमि रोग और हृदय के रोगों में इसके सेवन से लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१ गोली से ३ गोली तक सवेरे-शाम वायु के गुल्म में मद्य अथवा जामुन के सिरका आदि से। पित्त के गुल्म मे गाय के दूध से। कफ के गुल्म में गोमूत्र से। स्त्रियों के रक्तगुल्म में ऊँटनी के दूध से। साधारणतया गरम जल के साथ देना चाहिये।

**कांकायन वटी(अर्श)**
(योगचिन्तामणि)

खून और बादी बवासीर की यह बड़ी अच्छी दवा है। इसके सेवन से बवासीर के मस्से सूख जाते हैं और बवासीर में कब्जी रहने के कारण टट्टी के समय जो तकलीफ होती है, वह मिट जाती है। अग्निमांद्य, संग्रहणी तथा पांडु रोग में भी इसका अच्छा असर होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली, सुबह-शाम छाछ के साथ।

**खदिरादि वटी**
(भैषज्यरत्नावली)

मुँह में छाले पड़ना तथा मुख के पक जाने पर इस वटी को मुँह में रखकर धीरे धीरे चूसना चाहिये। स्वरभंग में भी इसके चूसने से लाभ होता है। इसके अलावे सब प्रकार के दन्त तथा ओष्ठ रोग, जिह्वाविकार और तालु आदि के रोगों मे फायदेमन्द है। इसको मुख में रखने से मुख की कान्ति बढ़ती है। खाँसी में भी लाभदायक है।
मात्रा—एक-एक वटी करके दिन-रातभर में ४-५ वटी तक चूसना चाहिये।

**चन्दनादि वटी**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह पेशाब की जलन और पेशाब में मवाद जाने की उत्तम दवा है। सूजाक या मूत्रकृच्छ्र हो जाने पर पेशाब में भयंकर जलन, कड़क एवं वेदना होती है और मूत्रमार्ग से मवाद आने लगता है। ऐसी अवस्था में इसके प्रयोग से सब उपद्रव दूर होकर पेशाब साफ आता है और गिरता हुआ मवाद रुक जाता है।

मात्रा और अनुपान—२-४ गोली, दिन में ३-४ बार। नारियल-जल या ठण्डा पानी से।

**चन्द्रप्रभा वटी**
(भैषज्यरत्नावली)

लौह, शिलाजीत और गुग्गुल के प्रधान योग से बनने वाली यह वटी मूत्रेन्द्रिय और वीर्यविकारों के लिये सुप्रसिद्ध औषध है। यह बल को बढ़ाती है और शरीर का पोषण करने की शक्ति भी रखती है। सब तरह के प्रमेहों और उनसे पैदा हुये उपद्रवों पर इसका धीरे-धीरे स्थायी प्रभाव होता है। सूजाक, आतशक आदि के कारण मूत्र और वीर्य में जो विकार पैदा होते हैं, उन्हें यह नष्ट कर देती है। टट्टी-पेशाब के साथ वीर्य का गिरना, बहुमूत्र, श्वेतप्रदर, वीर्यदोष, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी, भगंदर, अण्डवृद्धि, पांडु, अर्श, कटिशूल, नेत्ररोग तथा स्त्री-पुरुषों के जननेन्द्रिय विकारों

में चन्द्रप्रभा वटी से बहुत लाभ होता है। पेशाब में जाने वाला 'एलब्यूमिन' इससे जल्दी बन्द हो जाता है। पेशाब की जलन, रुक-रुक कर देर में होना तथा पेशाब में चीनी आना (मधुमेह), मूत्राशय की सूजन और लिंगेन्द्रिय की कमजोरी इससे ठीक हो जाती है। यह नवीन शुक्र-कीटों को उत्पन्न करती है तथा रजाणुओं का शोधन और निर्माण करती है। थके हुये नौजवानों को इसका सेवन जरूर करना चाहिये।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली, सुबह-शाम। धारोष्ण दूध, गुडूची काढ़ा, दारुहल्दी का रस, बिल्वपत्र-रस, गोखरू का काढ़ा या केवल मधु से।

**चित्रकादि वटी**
(भैषज्यरत्नावली)

आमाशय के बिगड़ जाने पर अन्न ठीक से हजम नहीं होता। खाये हुये पदार्थ का अच्छी तरह से परिपाक न होनेपर आंव-युक्त कच्चा मल दस्त के साथ निकलता है। जल्दी इलाज न करने से अन्त में संग्रहणी जैसी कठिन बीमारी हो जाती है। सुबह-शाम जल के साथ इसकी १-२ गोली सेवन करने से अग्नि तेज हो जाती है और भूख खुलकर लगती है। अन्न का अच्छी तरह से परिपाक होने पर आंव का बनना बिल्कुल बन्द हो जाता है और हाजमा-शक्ति दुरुस्त हो जाती है। आँव, पेचिश, मरोड़, संग्रहणी और मन्दाग्नि में यह बहुत लाभदायक है।

**मात्रा और अनुपान**—१ से ३ वटी, सुबह-शाम, जल के साथ अथवा ३-४ वटी दिन-रात में चूसना चाहिये।

**जातिफलादि वटी (संग्रहणी)**
(भैषज्यरत्नावली)

यह दवा संग्रहणी और अतिसार (पतले दस्त लगना) रोग में फायदेमन्द है। दस्तों के साथ आँव जाता हो या खून जाता हो अथवा दस्त जाने के समय पेट में दर्द हो, ऐसी सभी अवस्थाओं में इसका प्रयोग किया जाता है।

**मात्रा और अनुपान**—दिनभर में १ से ३ गोली तक, मधु के साथ। पथ्य—दही-भात खाना।

## जातिफलादि वटी (स्तम्भक)
(स्वनिर्मित)

उत्तम-उत्तम पौष्टिक औषधियों द्वारा, यह वटी बनाई जाती है। इसके सेवन से बल-वीर्य आदि की वृद्धि होकर पूर्ण स्तम्भन-शक्ति पैदा होती है। इस दवा को खाकर ऊपर से इच्छानुसार भैंस का गर्म दूध मिश्री मिला हुआ पीना चाहिये। जो लोग स्तम्भक औषधियों का व्यवहार करते हैं वे एक बार इसका भी प्रयोग कर लाभ उठावें। अवश्य लाभ होगा।

मात्रा और अनुपान—१ से २ वटी तक, आवश्यकतानुसार स्त्री-संभोग से १ घंटा पूर्व। खूब औंटा और मीठा मिला हुआ गरम दूध पीना चाहिये।

## दुग्ध वटी (शोथ)
(भैषज्यरत्नावली)

शोथ (सूजन) की बीमारी में जब किसी दवा से आराम न होता हो तब दुग्ध वटी का सेवन कराना चाहिये। संग्रहणी, मन्दाग्नि, पांडु रोग और विषमज्वर में भी इस दवा से लाभ होता है। जब तक रोग आराम न हो तब तक नमक नहीं खाना चाहिये तथा जल नहीं पीना चाहिये। केवल दूध पीना चाहिये या भोजन में दूध का भाग अधिक रखना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम दूध या रोगानुसार।

## दुग्ध वटी (संग्रहणी)
(रसयोगसागर)

यह स्तम्भक, ग्राही, आमपाचक और शोथघ्न दवा है। आंत्र सम्बन्धी विकार, प्रवाहिका, आमातिसार और संग्रहणी में इससे लाभ होता है। आँतों के शोथ को दूर करके उनमें ग्राही शक्ति पैदा करती है। संग्रहणी के साथ शोथ वाले रोगों पर इसका अच्छा प्रभाव होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। दूध, मट्ठा, जल या मधु से।

## पंचतिक्तघन वटी
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह विषमज्वर के लिये अच्छी दवा है। इसके प्रयोग से बुखार दूर होता है और कुनाइन की तरह कोई उपद्रव नहीं पैदा होता।

मात्रा और अनुपान—२-२ गोली ठंडा जल से ३-३ घंटा बाद लेना चाहिये।

**प्राणदा गुटिका** (भैषज्यरत्नावली)

यह वादी, खूनी और प्रकृति दोष आदि किसी कारण से उत्पन्न हुई बवासीर की उत्तम महौषधि है। इसके नियमित सेवन से बवासीर से खून गिरना बन्द हो जाता है और बवासीर के मस्से सूखने लगते हैं। पांडु, कृमि, गुल्म, पेटदर्द, श्वास, खाँसी आदि रोगों में इस औषधि से अच्छा उपकार होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली सुबह-शाम भोजन के पहले दूध या ताजे पानी के साथ सेवन करना चाहिये।

**प्लीहारि वटी** (भैषज्यरत्नावली)

यह प्लीहा (तिल्ली) की सर्वश्रेष्ठ दवा है। इसके सेवन से पेट की बढ़ी हुई तिल्ली कट जाती है और तिल्ली के बढ़ जाने से होने वाले ज्वर, खाँसी, सूजन, मन्दाग्नि आदि रोग और उपद्रव अच्छे हो जाते हैं। यकृत्विकार (लीवर का बढ़ जाना और ठीक से लीवर का कार्य न करना), गुल्म, मन्दाग्नि, सूजन आदि में भी यह औषधि अच्छा काम करती है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली सूर्यास्त के पहले ताजे जल के साथ।

**व्योषादि वटी** (शार्ङ्गधरसंहिता)

यह सब प्रकार की सूखी एवं तर-खाँसी की उत्तम दवा है। सर्दी, जुकाम, खाँसी, श्वास, स्वरभंग (गला बैठना) आदि में इससे अत्यन्त लाभ होता है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली दिन में २-३ बार गर्म जल से या केवल चूसना।

**वृद्धिवाधिका वटी** (भावप्रकाश)

यह नये पुराने सब प्रकार के साध्य और असाध्य अंडवृद्धि रोग को दूर करती है। अन्त्रवृद्धि (हार्निया) में भी इस वटी से लाभ होता है। अण्डकोष में वायु का भरना, दर्द होना एवं नये दूषित रस का उतरना, रक्त एवं जल भरना आदि सभी प्रकार के अण्डकोष के विकार इससे नष्ट होते हैं।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली दिन में दो बार। ताजा जल या बड़ी हरीतकी क्वाथ से।

**ब्राह्मी वटी (स्वर्णघटित)**
(सिद्धयोगसंग्रह)

स्नायविक दुर्बलता को दूर करने तथा स्मरणशक्ति और बुद्धि बढ़ाने के लिये आयुर्वेद में ब्राह्मी वटी सर्वश्रेष्ठ है। यह वटी ब्राह्मी, कस्तूरी, अम्बर, मुक्ता, चन्द्रोदय आदि उत्तम उपादानों से तैयार की गई है। इसके प्रयोग से ज्ञान-वाहिनी नाड़ियों की शक्ति बढ़ती है। शीतांग सन्निपात में बेहोशी और नाड़ी की गति क्षीण हो जाने पर इससे बड़ा लाभ होता है। दिमाग की कमजोरी, हृदय-दुर्बलता, अनिद्रा, हिस्टीरिया, मूर्च्छा, पागलपन, स्मरणशक्ति का अभाव आदि मस्तिष्क विकारों में यह वटी बहुत फायदेमन्द है। मोतीझरा और मियादी बुखार की बेचैनी, प्रलाप आदि में वैद्यगण इसका प्रयोग करते हैं और लाभ भी होता है। ताप के पीछे की निर्बलता भी इससे बहुत जल्द दूर होकर ताकत पैदा होती है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली आवश्यकतानुसार मक्खन, मलाई, दूध आदि से। शीतांग सन्निपात में दो-दो घंटा बाद या यथावश्यक, पान रस या मधु से। मियादी बुखार में पान रस या मधु से। मूर्च्छा, पागलपन आदि वात-विकारों में दशमूल क्वाथ के साथ। अनिद्रा में जटामांसी क्वाथ से।

**ब्राह्मी वटी**
(प्रचलित)

उपरोक्त ब्राह्मी वटी से किंचित न्यून गुण इसमें हैं। जो स्वर्ण-घटित ब्राह्मी वटी का प्रयोग न कर सकें उनके लिये यह वटी हितावह है। मात्रा और अनुपान आदि तदनुकूल है।

**विषमुष्टयादि वटी**
(सिद्धभैषज्यमणिमाला)

यह ज्वरघ्न, दीपन, पाचन और पेट के दर्द को मिटाने वाली है। पानी से आने वाला बुखार (मलेरिया) में इसका प्रयोग लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली ३-३ घण्टा बाद, जल के साथ।

**भागोत्तर गुटिका**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह सब प्रकार के खाँसी, दमा की उत्तम दवा है। मात्रा और अनुपान—१-२ गोली यथावश्यक दिन में २-३ बार। मधु से चाटकर ऊपर से गोजिह्वादि क्वाथ, वासारिष्ट या शर्बत जूफा पीना चाहिये।

**मकरध्वज गुटिका**
**(भैषज्यरत्नावली)**

यह अत्यन्त वाजीकरण एवं बल-वीर्यवर्द्धक पौष्टिक रसायन है। इसके सेवन से क्षीण धातु पुष्ट होकर निश्चितरूप से शरीर का वजन बढ़ता है। बिना नशीली वस्तु के स्तम्भनशक्ति पैदा करती है। शीघ्रपतन की निश्चित दवा है। ढलती उम्र में सम्भोगशक्ति बनाये रखने के लिये इसका प्रयोग उत्तम है। सुनिद्रा और मानसिक बल के लिये अत्यन्त उपयोगी महौषधि है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह और सोते समय रात में खूब औंटाया हुआ मिश्री मिला दूध के साथ।

नोट—इसके सेवनकाल में घृत, दूध, मॉस, ताजे फल तथा पौष्टिक भोजन विशेष हितकारी हैं।

**मकरध्वज वटी**
**(भैषज्यरत्नावली)**

यह दिल, दिमाग-पुष्टिकारक, शीघ्रपतननाशक, स्तम्भक, शक्तिवर्द्धक एवं नपुंसकता, नामर्दी को मिटाकर बल, वीर्य बढ़ाने में श्रेष्ठ है। वाजीकरण के लिये इसका प्रयोग उत्तम है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली। मक्खन, मिश्री, मलाई अथवा पान रस और मधु के साथ खाकर ऊपर से यथेष्ट दूध पीना।

**मरिचादि वटी**
**(शार्ङ्गधरसंहिता)**

यह खाँसी की बड़ी मशहूर दवा है। इससे सूखी और गीली दोनों तरह की खाँसी में फायदा होता है। यह स्वरभंग, गले की खराबी और सर्दी, जुकाम, खाँसी आदि में अच्छा फायदा पहुंचाती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली मुँह में रखकर दिन-रात में ५-६ गोली तक चूसना चाहिये। सर्दी, जुकाम में सुबह और शाम को गरम जल के साथ लेना चाहिये।

**महाशङ्ख वटी**
**(भैषज्यरत्नावली)**

अजीर्ण और वायु के कारण उत्पन्न हुये पेटदर्द और परिणामशूल की यह रामबाण दवा है। इसके सेवन से अजीर्ण की शिकायत मिटती है भोजन का परिपाक बहुत अच्छी तरह से होता है। मन्दाग्नि की समस्त शिकायतों को नष्ट कर यह जठराग्नि को प्रदीप्त

करती है। भूख खुलकर लगती है। व्यर्थ की निद्रा, आलस्य, अरुचि आदि शिकायतें मिटती हैं। अधिक भोजन करने पर और किसी गरिष्ठ चीज के खा लेने पर जो अचानक अजीर्ण हो जाता है, उसको मिटाने के लिये यह बहुत ही फायदेमन्द दवा है।

मात्रा और अनुपान—१ से ३ गोली तक। गरम जल या अजवायन के अर्क के साथ भोजन के बाद या यथावश्यक।

**मुक्तादि वटी**
(सिद्धयोगसंग्रह)

बालकों का जीर्णज्वर, बालशोथ (सूखा), पांडु, दूध न पचकर दस्त या उल्टी होना, खांसी आदि रोगों में इसके सेवन से रोग दूर होकर बालक हृष्ट-पुष्ट एवं बलवान होता है।

**मेहमुद्गर वटी**
(भैषज्यरत्नावली)

इसके सेवन से बीसों प्रकार के प्रमेह अच्छे होते हैं। टट्टी और पेशाब के मार्ग से वीर्य का जाना, स्वप्नदोष आदि वीर्य-सम्बन्धी सभी शिकायतें मिटती हैं। मूत्रकृच्छ्र, (जलन और तकलीफ के साथ रुक-रुक कर पेशाब होना), पेशाब का रुक जाना, पथरी आदि मूत्राशय सम्बन्धी रोगों के लिये भी बहुत फायदेमन्द है। कामला और पांडु रोग भी इसके सेवन से अच्छा हो जाता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। बकरी के दूध या ताजे जल के साथ।

**रजःप्रवर्तिनी वटी**
(अनुभूत)

स्त्रियों के मासिक-धर्म के रुक जाने पर कमर, पेडू में दर्द होना, हाथ-पैर के तलुओं और आँखों में जलन होना, ज्वर की सी हरारत रहना आदि तरह-तरह की शिकायतें पैदा हो जाती हैं। यह दवा रुके हुये मासिक-धर्म को खोलने के लिये बड़ी मुफीद है। इसके सेवन से मासिक-धर्म खुलकर होने लगता है और मासिक-धर्म की रुकावट से पैदा हुये सभी उपद्रव दूर होते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम, मासिक-धर्म होने के समय से ५-७ दिन पहले गरम जल के साथ। इसे मासिक-धर्म शुद्ध होने के समय तक बराबर लेना चाहिये।

**राजवटी (गन्धक वटी)**
(योगचिन्तामणि)

यह गोली अजीर्ण का नाश करने के लिये मशहूर है। भोजन के बाद २-३ गोली खा लेने से अन्न अच्छी तरह पचकर दस्त साफ होता है। अरुचि, अजीर्ण, पेटदर्द, पेट में वायु का जमा होना, आँव की शिकायतें, कब्जियत, रक्तविकार, अम्लपित्त आदि रोगों में यह वटी बहुत फायदेमन्द है। जो लोग भोजन अच्छी तरह पचने के लिये सोडावाटर का व्यवहार करते हैं, उनके लिये ये गोलियाँ सोडावाटर से विशेष लाभदायक हैं। इसमें भोजन अच्छी तरह पचकर भूख खुलकर लगेगी और चित्त हमेशा प्रसन्न रहेगा। इसके नियमित सेवन से किसी देश के जलवायु का बुरा प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ता, यह इसमें खूबी है। अमीर, गरीब सभी के सेवन लायक सस्ती और गुणकारी दवा है।

**मात्रा और अनुपान**—१-२ गोली करके दिन-रात में ४-५ गोली ठंडे जल के साथ खाना चाहिये अथवा मुँह में डालकर चूसना चाहिये।

**लवङ्गादि वटी**
(वैद्यजीवन)

यह सूखी और गीली सभी तरह की खाँसी के लिये बड़ी मशहूर दवा है। इसकी १-१ गोली करके मुँह में रखकर चूसने से गले की खराबी से पैदा हुई खाँसी में बड़ा फायदा होता है। मुँह में छाले हो जाने पर भी इससे बहुत उपकार होता है।

**मात्रा और अनुपान**—खाँसी का वेग आने पर १-२ गोली मुँह में रखकर ५-७ गोली तक दिनभर में चूसना चाहिये।

**लसुनादि वटी**
(वैद्यजीवन)

यह पेट की वायु के लिये उत्तम दवा है। इसके सेवन से मंदाग्नि, अजीर्ण, विसूचिका (हैजा) आदि उदर रोगों में बहुत फायदा होता है। अजीर्ण के कारण पेट में वायु पैदा होती है जिससे पेट में दर्द और डकारें आने लगती हैं, इसके लिये यह वटी बहुत उत्तम है।

**मात्रा और अनुपान**—३ से ४ वटी तक दिन-रात में चूसना चाहिये। अथवा भोजन के बाद गर्म जल से खाना चाहिये।

**शङ्ख वटी**
(भैषज्यरत्नावली)

यह वटी अजीर्ण, वायु आदि किसी प्रकार से पैदा हुये शूल के लिये बहुत फायदेमन्द है। जठराग्नि को प्रदीप्त कर मन्दाग्नि को नष्ट करती है, भूख खुलकर लगती है, भोजन का परिपाक

अच्छी तरह होता है। सब प्रकार के गुल्म, शूल और उदर-वायु नष्ट होती है। कंठपर्यन्त भोजन करने पर भी इस वटी के खाने से वह तत्क्षण अन्न को पचाकर फिर भूख लगा देती है। मन्दाग्नि, उदरशूल की तो अव्यर्थ दवा है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ वटी भोजन के बाद गर्म जल से या केवल चूसना।

**शिलाजित्वादि वटी** (भैषज्यरत्नावली)

शुद्ध शिलाजीत और स्वर्ण, अभ्रक, लौह आदि भस्मों के योग से बनी हुई यह सब तरह के प्रमेह रोग की बड़ी फायदेमन्द और मशहूर औषधि है। इसके सेवन से वीर्य का पतलापन, इन्द्रिय शिथिलता, स्वप्नदोष, टट्टी और पेशाब के साथ वीर्य का जाना, याददाश्त की कमी, स्नायविक दुर्बलता आदि शुक्र सम्बन्धी समस्त रोग नष्ट होते हैं। पेशाब के साथ एलब्यूमिन और सूगर (चीनी) तथा फास्फोरस का जाना, मूत्रकृच्छ्र, बहुमूत्र, पथरी आदि मूत्र-सम्बन्धी समस्त रोगों में यह अचूक लाभ पहुँचाती है। इसके नियमित सेवन से बल, वीर्य, कान्ति एवं शक्ति बढ़ती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम, प्रमेहहर क्वाथ या दूध से।

**शुक्रमातृका वटी** (भैषज्यरत्नावली)

इसके सेवन से वीर्यस्राव, सब प्रकार के वातज, पित्तज तथा कफज प्रमेह, स्वप्नदोष, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी आदि रोग शमन होकर वीर्य शुद्ध और गाढ़ा होता है। यह रक्ताणुओं की वृद्धि करती तथा मांसग्रन्थियों को सुदृढ़ बनाती है। मानसिकशक्ति भी इससे बढ़ती है। प्रमेह की अच्छी दवा है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली दिन में दो बार। बकरी-दूध या मीठा अनार रस के साथ।

**शूलगजिनी वटी** (भैषज्यरत्नावली)

शूल की यह मशहूर दवा है। इससे ८ प्रकार के शूल नष्ट होते हैं। प्लीहा, गुल्म, मन्दाग्नि आदि उदर रोगों के लिये भी यह फायदेमन्द है। आमवात, पांडु, कामला और शोथ रोग में भी यह अच्छा फायदा करती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह और शाम, आवश्यकतानुसार अजवायन के अर्क या गरम जल के साथ। शूल (पेटदर्द) में एक-एक या दो दो घण्टे बाद लेना चाहिये।

**सर्पगन्धाघन वटी** (सिद्धयोगसंग्रह) अनिद्रा, अपतन्त्रक (हिस्टीरिया), उन्माद, अपस्मार आदि में इस वटी का प्रयोग अत्यन्त लाभदायक है। इसके सेवन से नींद अच्छी तरह आती है।

मात्रा और अनुपान—२-३ गोली आवश्यकतानुसार या रात्रि में सोने के समय। दूध या जल के साथ।

**संजीवनी वटी** (शार्ङ्गधरसंहिता) यह अजीर्ण और विसूचिका (हैजा) की प्रारम्भिक अवस्था में बड़ा अच्छा प्रभाव दिखलाती है। गुल्म और सन्निपात-ज्वर, पेट में वायु का संचय, पेट-दर्द, पतले दस्त, हाथ पैरों की ऐंठन आदि रोग इससे मिट जाते हैं।

मात्रा और अनुपान—१ से ४ गोली तक, अदरख के रस या लौंग के औटाये हुये जल के साथ रोगानुसार देना चाहिये।

**संशमनी वटी** (प्रचलित) धातुक्षीणता, सभी तरह की कमजोरी, पांडु रोग, हृदय के रोग और पुराने बुखार के पीछे की निर्बलता में अच्छा लाभ होता है। इसके सेवन से हृदय को बल मिलता और दुर्बलता दूर होती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार दूध के साथ।

**सारिवादि वटी** (रसयोगसागर) यह वटी कान का बहना, कान का गूंजना या कम सुनना आदि को दूर करती है। किसी भी कारण से मस्तिष्क में रुग्णता पहुंचने पर अथवा वातवाहिनियों में विकृति होने से कर्ण-बधिरता या कान में दर्द होता हो, इसके सेवन से दूर होता है। धमनी-विकार या हृदय-दौर्बल्य से कम सुनना या कान गूंजना आदि उपद्रव उत्पन्न हुये हों तो यह रसायन हृदय और धमनी को बनाकर कर्ण रोगों को दूर करता है। कर्ण रोग की उत्तम दवा है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली दिन में दो बार। धारोष्ण दूध, चन्दन अर्क अथवा शतावरी के क्वाथ के साथ।

**सूरण वटक**
(शार्ङ्गधरसंहिता)

यह बवासीर की प्रसिद्ध दवा है। जठराग्नि के मन्द हो जाने पर इसके प्रयोग करने से अग्नि प्रदीप्त होकर बवासीर दूर होती है। खासकर बादी-बवासीर में विशेष लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली यथावश्यक। गर्म दूध या जल के साथ।

**सौभाग्य वटी**
(प्रचलित)

समस्त प्रसूतविकारों की प्रसिद्ध दवा है। इससे सब प्रकार के प्रसूत रोग नष्ट होकर पुनः पूर्ववत् शक्ति आ जाती है। बच्चा पैदा होने के बाद ही अगर इसका प्रयोग आरम्भ कर दे तो भविष्य में कोई भी प्रसूतजन्य उपद्रव नहीं पैदा होता। बिहार प्रान्त में इसका विशेष प्रचार है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली यथावश्यक। दशमूल क्वाथ और शहद से।

**हिंगुकर्पूरादि वटी**
(औषधिसंग्रह)

ज्वर में सन्निपात के लक्षण देखते ही इस वटी का प्रयोग करें। इससे नाड़ी की गति सुधरती है और हाथ-पाव कांपना, कपड़े का फेंकना, उठ-बैठ करना, बकना आदि लक्षण कम होते हैं। श्वसनक ज्वर (निमोनिया) में इससे कफ पतला होकर निकलने लगता है। कफ की दुर्गन्ध नष्ट होती है और कफ के अन्दर के रोग-जन्तुओं (कीटाणुओं) का नाश होता है। हृत्कम्प और दमे में हिंगुकर्पूरादि वटी से लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली आवश्यकतानुसार। ठंडे जल के साथ।

नोट—यदि रोगी गोली निगलने में असमर्थ हो तो गोली को शहद या थोड़े अदरख के रस में मिलाकर जीभ पर लगा दें।

**क्षुधाकारी वटी**
(सिद्धभैषजमणिमाला)

ये वटियां भूख जगाने वाली आयुर्वेदीय दवाओं से तैयार की गई हैं। भोजन के बाद १-२ गोली चूसने से चित्त प्रसन्न हो जाता है। भूख खुलकर लगती है। जी का मिचलाना, मुँह का स्वाद खराब होना, कब्जियत, अनपच और अरुचि के लिये

ये वटियां बहुत फायदेमन्द हैं। स्वाद में इतनी अच्छी और जायकेदार हैं कि अमीर लोग वैसे भी बड़े चाव से इन्हें सेवन करते हैं।

मात्रा—१-१ वटी करके दिन में ३-४ वटी तक चूसना।

# गुग्गुलु

आयुर्वेद शास्त्र में गुग्गुलु का बड़ा महत्व है। खासकर समस्त वायुरोगों में इसका विशेष प्रयोग होता है। लेकिन इससे पूर्ण उत्तम लाभ तभी सम्भव है जब कि यह उत्तम गुग्गुलु का शास्त्रोक्त विधि से पूर्ण रूप से शोधन कर खूब कुटाई के बाद तैयार किया गया हो। बाजारू सड़े-गले सस्ते गुग्गुलु द्वारा बनाई जाने वाली दवाओं में यह शक्ति नहीं पाई जाती है। हमारे यहां उत्तमोत्तम गुग्गुलु द्वारा पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से ये औषधियां तैयार की जाती हैं, जिससे पूर्ण लाभ निश्चित है।

**कांचनार गुग्गुलु**
(योगरत्नाकर)

गलगण्ड, गण्डमाला ( गले में कण्ठवेल होना ) तथा अपची, अर्बुद, भगन्दर आदि बीमारियों में कांचनार गुग्गुलु से अच्छा लाभ होता है।

इसके सेवन से कण्ठवेल की कच्ची गाँठें बैठ जाती हैं तथा अधपकी गाँठें पककर मवाद साफ होकर सूखने लगती हैं।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार गोरखमुण्डी खैरकाठ या हर्रे का काढ़ा बनाकर पीना चाहिये।

**कैशोर गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

वातरक्त, खून की खराबी से शरीर में फोड़ा-फुन्सी या चकत्ते होना, कुष्ठ, प्रमेहपीड़िका तथा पांडु, प्रमेह, गुल्म, सूजन और नेत्ररोगों में कैशोर गुग्गुलु के सेवन का अच्छा असर होता है। यह खून को साफ करने तथा वातरक्त रोग की सर्वोत्तम दवा है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार मंजिष्ठादि क्वाथ, दूध या गरम जल के साथ। नेत्ररोगों में वासा (अडूसा) का रस या

क्वाथ से। गुल्म रोग में वरुण छाल के क्वाथ से। फोड़ा-फुन्सी और कुष्ठ रोग में खदिर (खैर) के क्वाथ से।

**गोक्षुरादि गुग्गुलु**
(शार्ङ्गधरसंहिता)

इसके सेवन से प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र ( रुक-रुक कर पेशाब होना ), मूत्राघात, पथरी, प्रदर रोग, वातरक्त, शुक्रदोष और मूत्राशयगत समस्त विकारों में लाभ होता है। वातव्याधि में भी फायदेमन्द है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम दूध, गोखरू का क्वाथ या रोगानुसार।

**त्रयोदशांग गुग्गुलु**
(भावप्रकाश)

इसके सेवन से सब प्रकार के वातशूल, गठिया, पक्षाघात, लकवा, गृध्रसीवात, अस्थि, सन्धि, मज्जागत तथा स्नायु एवं कोष्ठस्थित तमाम वातव्याधियां नष्ट होती हैं। इसके नियमित सेवन से लूले-लंगड़े, पंगुले तक अच्छे हो जाते हैं। वातघ्न अनुपान से यह समस्त वातविकारों को दूर करता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम गरम जल, मद्य, मांस या रोगानुसार।

**त्रिफला गुग्गुलु**
(शार्ङ्गधरसंहिता)

भगन्दर, गुल्म, सूजन और बवासीर में इस दवा से अच्छा लाभ होता है। भगन्दर और बवासीर में कब्जियत की शिकायत हो जाने से तकलीफ ज्यादा बढ़ जाती है किन्तु त्रिफला गुग्गुलु के सेवन से कब्ज नहीं होने पाता बल्कि पुराना कब्ज भी दूर हो जाता है, इसलिये विशेष लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम त्रिफला के काढ़ा या दूध के साथ लेना चाहिये।

**त्रिफला गुग्गुलु**
(स्वनिर्मित)

यह उपरोक्त त्रिफला गुग्गुलु से विशेष फायदेमन्द है। मात्रा अनुपान आदि तदनुसार ही है।

**पंचतिक्तघृत गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

इसके प्रयोग से सब प्रकार के वातरोग, अस्थि, सन्धि और मज्जागत कुष्ठ, नाड़ीव्रण, भगन्दर, गण्डमाला, विद्रधि, वातरक्त, अस्थिक्षय आदि रोग समूहों का नाश होता है। गर्मी या अन्य रक्तविकारों से पैदा होने वाले नये-पुराने घाव, फोड़ा-फुन्सी, चकते, अपरस आदि रोगों में इसका सेवन लाभकारी है। यह खून को शुद्ध करने के लिये परमोत्कृष्ट औषधि है।

मात्रा और अनुपान—आधा से १ तोला तक—एक पाव गाय के गर्म दूध में मिलाकर सवेरे पीना चाहिये।

**पंचामृतलौह गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

इसके सेवन से गृध्रसी, अवबाहुक, कमर और घुटने का दर्द तथा स्नायुओं में होने वाले वात रोगों मे अच्छा लाभ होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम रास्नादि या दशमूल काढ़ा अथवा चोबचीनी, असगन्ध, एरण्डमूल, उसवा, सोंठ और कडुवे सुरंजान के काढ़ा के साथ।

**महायोगराज गुग्गुलु**
(शार्ङ्गधरसंहिता)

यह त्रिदोषघ्न रसायन सभी प्रकार के वातव्याधि, आमवात, अपस्मार, पक्षाघात, सन्धिवात, वातरक्त, उदावर्त, मेदवृद्धि, हृदय का जकड़ना, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, पुरुषों के वीर्यदोष एवं स्त्रियों के रजोदोष और शोथ, पांडु, कामला, कुष्ठ, नेत्ररोग आदि अनेक रोगों में अत्यन्त लाभदायक है। असाध्य वातविकारों में भी इसका सफल प्रयोग होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सुबह-शाम। समस्त वायुविकारों मे रास्नादि क्वाथ से, वातरक्त में गिलोय के क्वाथ से, मेदोवृद्धि में शहद से, पांडु रोग में गोमूत्र से, कुष्ठ रोग में नीम की छाल के क्वाथ से, शोथ और शूल में पीपल के क्वाथ से, नेत्ररोगों में त्रिफला क्वाथ से, उदर रोगों मे पुनर्नवा क्वाथ से।

**योगराज गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

यह योगवाही रसायन धातुओं का पोषण करता, वात और आम रस को नष्ट करता तथा अग्नि को प्रदीप्त करता है। अनुपान भेद से प्रायः सभी रोगों में इसका

प्रयोग होता है। वात-विकारों के लिये तो सर्वप्रसिद्ध औषधि है। आमवात, गठिया, वातरक्त, भगन्दर, अरुचि, स्त्री-पुरुषों के जननेन्द्रिय विकार, कास, श्वास, धातुक्षीणता, बहुमूत्र, प्रमेह, अर्श और शिरोरोग को नष्ट करने में यह औषधि सफल सिद्ध होती है। स्थायी कब्जी और स्त्रियों के प्रसव-विकारों में इससे अच्छा लाभ पहुंचता है। वातवाहिनियों के क्षोभ तथा रक्तवाहिनियों में संचित विष को निकालने में योगराज का सुन्दर कार्य होता है। बुड्ढों का तो परम मित्र है। जिनके पेट में वायु के चक्कर उठने हों, उन्हें इसका सेवन करना चाहिये। यह दूषित विष के विकार को नष्ट कर बल और स्मृति की वृद्धि करता है। यह धातु-गर्भित होने से ज्यादा फायदेमन्द होता है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम। वात-विकारों में रास्नादि या दशमूल क्वाथ से। बलवृद्धि आदि में धारोष्ण दूध के साथ। वातरक्त में गिलोय-रस, गोमूत्र और मधु के साथ। उदर-विकारों में पुनर्नवादि क्वाथ के साथ। शिरोरोग में गरम दूध से। मेदोरोग में केवल मधु से। पित्तविकारों में गिलोय या अष्टवर्ग के क्वाथ से। कफ-दोषों में अश्वगन्धादि क्वाथ या पीपल क्वाथ से।

**योगराज गुग्गुल (धातुगर्भित)**
(शार्ङ्गधरसंहिता)

यह धातुगर्भित होने के कारण साधारण योगराज गुग्गुल से विशेष फायदेमन्द होता है। मात्रा और अनुपान आदि तदनुकूल ही समझना चाहिये।

**रास्नादि गुग्गुलु**
(योगरत्नाकर)

गृध्रसी, आमवात, गठिया, सन्धिवात आदि अनेक वात-विकारों में इसका उपयोग किया जाता है। कर्ण रोग, शिरोरोग, नाड़ीव्रण, नासूर, भगन्दर में भी गुणकारी है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दशमूल या रास्नादि क्वाथ अथवा गर्म जल से।

**लाक्षा गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

अस्थि (हड्डी) के विकारों की यह सर्वश्रेष्ठ औषधि है। इसके सेवन से शरीर के किसी भाग की हड्डी में चोट लगना, दर्द होना, टूट जाना आदि में बहुत फायदा होता है। टूटी हुई हड्डी को जोड़ने में यह औषधि अच्छा काम करती है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम अर्जुन छाल के काढ़े के साथ या दूध के साथ।

**सप्तविंशति गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

यह भगन्दर, बवासीर, नासूर, नाड़ीव्रण, दुष्टव्रण आदि में विशेष फायदेमन्द है। हृदय और पसली का शूल, कुक्षि, वस्ति; गुदामार्ग और मूत्रनली के विकार में इसके सेवन से लाभ होता है। अन्त्रवृद्धि, श्लीपद, उन्माद, शोथ, कृमि, कुष्ठादि चर्म रोगों में भी उत्तम फलदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम दिन में दो बार मधु में मिलाकर चाटना ऊपर से मंजिष्ठादि काढ़ा पीना।

**सिंहनाद गुग्गुलु**
(भैषज्यरत्नावली)

इसके प्रयोग से वातरक्त, गुल्म, शूल उदर रोग, कुष्ठ तथा कठिन से कठिन आमवात रोग दूर होता है। नियमित रूप से इस गुग्गुलु का व्यवहार करने से वली-पलित (असमय में बालों का पकना, गिरना) आदि रोग आराम होते हैं। आम-वात की श्रेष्ठ महौषधि है। इस औषधि के सेवनकाल में तैल, घी, शाली और सांठी धानों का भात खाना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सुबह-शाम गर्म जल या गर्म दूध के साथ लेना चाहिये।

# पर्पटी

रसायन कल्प मे पर्पटी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। जब अन्य चिकित्सा से लाभ नहीं होता उस समय पर्पटी कल्प से आशाजनक लाभ होता है। परन्तु पर्पटी कल्प से तभी पूर्ण लाभ निश्चित है, जब वह संस्कारित शुद्ध पारद और गन्धक द्वारा शास्त्रीय विधि से बनाई गई हों। हमारे यहाँ विशु-द्धता का खास ख्याल रखकर पर्पटियाँ तैयार की जाती हैं अतः पूर्ण लाभ निश्चित है।

**गगन पर्पटी** (सिद्धयोगसंग्रह) यह मन्दाग्नि, पांडु, राजयक्ष्मा, खाँसी, दमा और पुरानी संग्रहणी में लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१ से ३ रत्ती, दिन में २-३ बार। शहद, दूध, मट्ठा, मीठा अनार रस आदि किसी के साथ।

**ताम्र पर्पटी** (योगरत्नाकर) यह सब प्रकार के नये-पुराने अतिसार, संग्रहणी, यकृत्-प्लीहा-विकार की प्रसिद्ध महौषधि है। उदरविकार, प्रमेह, शूल, कुष्ठ, दाद, पांडु, अम्लपित्त आदि में भी यह सुन्दर कार्य करती है।

मात्रा और अनुपान—१ से ३ रत्ती तक। संग्रहणी, अतिसार में भुना जीरा, छोटी इलायची चूर्ण और शहद से। पांडु, प्रमेह में त्रिफला चूर्ण और शहद से। समस्त शूलों मे एरण्ड तेल के साथ। कुष्ठ आदि में बाकुची चूर्ण और शहद से। अम्लपित्त में रसादि वटी और जहरमोहरा पिष्टी के साथ या द्राक्षादि चूर्ण से।

**पंचामृत पर्पटी** (भैषज्यरत्नावली) यह संग्रहणी रोग की प्रसिद्ध महौषधि है। इसके अलावा सब प्रकार के अतिसार, पांडु, अरुचि, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, शूल और दमा में भी यह खूब लाभ करती है। संग्रहणी में अग्नि मन्द हो जाने पर इसका प्रयोग अग्नि को चैतन्य कर क्षुधा की वृद्धि करता है। संग्रहणी की बीमारी में अन्न का परिपाक अच्छी तरह नहीं होता, रोगी के शरीर मे नया खून नहीं पैदा होता, शरीर रक्तहीन होकर अत्यन्त दुर्बल हो जाता है, भूख मारी जाती है। कमजोरी के कारण मन्द-मन्द ज्वर भी आने लगता है और शरीर क्रमशः क्षीण होने से अन्त मे यक्ष्मा (थाइसिस) तक हो जाता है। ऐसी अवस्था में पंचामृत पर्पटी का सेवन अमृत की तरह लाभ करता है। कठिन संग्रहणी में केवल दूध या मट्ठे के आधार पर पर्पटी सेवन कराई जाती है। साधारण संग्रहणी या आँव के दस्तों में हल्के अन्न का भोजन, मीठे फलों के रस, दूध, दही, मट्ठा आदि का भोजन करते हुये भी पर्पटी सेवन की जा सकती है।

मात्रा और अनुपान—१ से ३ रत्ती यथावश्यक दिन में २-३ बार। भुना जीरा चूर्ण और शहद से चाटकर मट्ठा या मीठे अनार का रस पिलावे।

पेट की वायु बिगड़ जाने पर शंख भस्म और भुनी हींग का भी मिश्रण किया जा सकता है।

पथ्यापथ्य—रस पर्पटी में लिखे मुताबिक करना चाहिये।

**विजय पर्पटी**
(भैषज्यरत्नावली)

यह सब प्रकार की कष्टसाध्य ग्रहणी, अतिसार रोग, यक्ष्मा, विषमज्वर, पांडु, प्लीहा, जलोदर, शोथ, परिणाम शूल, अम्ल-पित्त, हृद्रोग आदि की सर्वोत्कृष्ट महौषध है। इसके प्रयोग से शरीर पुष्ट एवं बलवान होता है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ रत्ती दिन में २-३ बार। मधु, दूध, मट्ठा, मीठे दाड़िम एवं अंगूर के रस या मौसम्बी आदि किसी के रस के साथ।

पथ्यापथ्य—रस पर्पटी में लिखे मुताबिक समझें।

**बोल पर्पटी**
(रसराजसुन्दर)

रक्तप्रदर, रक्तपित्त (मुँह, गुदा आदि से खून गिरना), खूनी बवासीर और खून के प्रवाह के समय इसका प्रयोग करना चाहिये। इसके सेवन से शरीर के किसी भी अङ्ग से बहता हुआ खून तत्काल बन्द हो जाता है।

मात्रा और अनुपान—४ से ६ रत्ती तक सुबह-शाम या आवश्यकता-नुसार दिन में २ से ४ बार तक। मिश्री मिलाकर मक्खन से चाटना या हरी दूब के रस से लेना चाहिये।

**मण्डूर पर्पटी**
(सिद्धयोगसंग्रह)

यह पांडु, तिल्ली और यकृत् के विकार, मन्दाग्नि, शोथ, संग्रहणी आदि में अत्यन्त लाभदायक है।

मात्रा और अनुपान—१-३ रत्ती दिन में २-३ बार। मधु, भुना जीरा चूर्ण, मट्ठा, दूध या फलों का रस आदि रोगानुसार।

**रस पर्पटी**
(भैषज्यरत्नावली)

पारद गन्धक की कज्जली का यह पर्पटी कल्प पाचक, दीपक, जन्तुघ्न, शोधक और परम रसायन है। मन्दाग्नि, संग्रहणी, रक्ताल्पता, जीर्ण अतिसार, पांडु, अर्श तथा पेट के सभी विकारों में रस पर्पटी का चमत्कारी प्रभाव होता है। यकृत्विकार को ठीक करके यह पाचक रस को ठीक मात्रा में पैदा करती है। आँतों के व्रण को भरने और उसमें

संचित विष को बाहर निकालने में पर्पटी सबसे अच्छी दवा है। ग्रहणीकला की दुर्बलता इससे ठीक होती और आंतों में पचाने की शक्ति बढ़ती है तथा इतनी बढ़ती है कि एक पाव दूध भी हजम न करने वाला आदमी १०-१५ सेर दूध पचा जाता है। विदग्ध पित्त के उपद्रव इससे ठीक होते हैं। रक्तप्रसादन और रक्त शोधन दोनों कार्य इससे होते हैं। अतः शोथ, कुष्ठ, रक्ताल्पता और जलोदर में इसका अच्छा प्रभाव होता है।

रस पर्पटी पित्तवर्द्धक होने के कारण पित्तप्रधान विकारों में कम देनी चाहिये, यहां मंडूर या लौह पर्पटी ठीक रहती है।

पथ्यापथ्य—सब पर्पटियों के सेवन के समय आहार-विहार की बहुत सावधानी रखनी पड़ती है और जरासी भी असावधानी भारी अनर्थ कर देती है। अगर पर्पटी सेवनकाल में, विरेचन (दस्त), वमन, दाह, जलन, शरीर में पीड़ा, झनझनाहट आदि उपद्रव पैदा हो जायें तो कच्चे नारियल का पानी या दूध पिलाना चाहिये।

मन्दाग्नि, संग्रहणी, रक्ताल्पता, पांडु, क्षय, शोथ आदि रोगों में पर्पटी कल्प के समय केवल दूध या तक्र का ही आहार रखना चाहिये और यही है भी ज्यादा हितकर। दूध या तक्र का चुनाव रोग और रोगी की स्थिति के अनुसार करना चाहिये। तक्र या दूध के अलावा सभी चीजें बन्द कर देनी चाहियें। ज्यादा प्यास की बेचैनी में नारियल का पानी देना चाहिये। अनार और सन्तरे का रस भी दिया जा सकता है। जब-जब भूख और प्यास लगे तभी दूध पीना चाहिये। विकारों की शुद्धि परमावश्यक है। ब्रह्मचर्य तो इतना आवश्यक है कि पर्पटी कल्प के समय रोगी के पास स्त्री का रखना तक निषिद्ध बतलाया गया है। मनोवृत्तियां शुद्ध और शान्त रखनी चाहियें। कामधन्धे की चिन्ता, काम, क्रोध, भय आदि सभी चीजों से रोगी को मुक्त रखना चाहिये।

वायु, धूप, आग के पास बैठना, व्यायाम, श्रम, स्नान, स्त्री-प्रसंग, क्रोध और चिन्ताओं से बचना चाहिये तथा मितभाषी होना चाहिये। आयुर्वेद में पर्पटी सेवनकाल में हितकारक आहार—पुराने शाली चावल का भात, काले बैंगन, पाढ़ के पत्तों का शाक, बथुआ, मूंग, केले के पत्ते, परवल, सुपारी, अदरख, मकोय

के पत्तों का शाक, घी, जीरा, धनियां, सेंधा नमक, काली मिर्च, जलसिद्ध दूध, लवा, बतख, तीतर, मोर, रोहित और काली मछली। इनके अलावा सभी चीजें अपथ्य हैं। भूख लगे तब दूध ले लेना चाहिये, वर्ना खराबी होती है।

मात्रा और अनुपान—१ से ३ रत्ती तक सुबह-शाम। (१) भुना हुआ जीरे का चूर्ण और मधु, (२) सोंठ चूर्ण और मधु, (३) केवल दूध।

**लौह पर्पटी**
(भैषज्यरत्नावली)

संग्रहणी, अम्लपित्त, मन्दाग्नि, पांडु रोग तथा यकृत् की बीमारी में और खून की कमी में लौह पर्पटी से बहुत लाभ होता है। संग्रहणी और आंव के दस्तों की तो यह रामबाण दवा है। पुराने अतिसार और घोर संग्रहणी में इसके कल्प से आशाजनक फायदा होता है। वैद्यगण केवल दूध या मट्ठे के आहार पर इसका कल्प कराते हैं।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती से आरम्भ करके रोगी की अवस्थानुसार ५-७ दिन के अन्तर से एक-एक रत्ती बढ़ाते हुये छः रत्ती तक की मात्रा में सुबह और शाम भुना हुआ जीरा, शंख भस्म और १ रत्ती हींग और मधु के साथ।

नोट—विशेष जानकारी के लिये रस पर्पटी का पथ्यापथ्य देखें।

**श्वेत पर्पटी**
(स्वनिर्मित)

सूजाक, मूत्रकृच्छ्र, हैजा आदि में पेशाब के रुक जाने पर भयंकर वेदना पैदा होती है और रोगी बेहोश हो जाता है। उस समय इसके सेवन से पेशाब खुलकर हो जाता है और रोगी को शान्ति मिल जाती है। पेशाब की जलन और कड़क के लिये यह बहुत उपयोगी है।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ माशा तक। कच्चे नारियल का पानी या दूध, दही आदि की लस्सी अथवा केवल ठंडा जल।

**स्वर्ण पर्पटी**
(भैषज्यरत्नावली)

इसमें स्वर्ण कज्जली का रासायनिक संस्कार होता है, अतः स्वर्ण पर्पटी में स्वर्ण भस्म के सारे गुण रहते हैं। यह परम पाचक, दीपक, रस-रक्तादि धातुवर्द्धक, वृष्य, योगवाही, जन्तुघ्न, त्रिदोषनाशक और बल-वीर्यवर्द्धक उत्तम रसायन है। संग्रहणी और क्षय के अस्थि-चर्मावशेष रोगी इससे अच्छे हो जाते हैं। संग्रहणी की कठिन दशा में इसके द्वारा

आंतों को बल मिलता, पाचक रस अधिक बनता और हृदय को ताकत मिलती है। इसका प्रभाव सारे अंगों पर होता है। आंतों की शुद्धि होकर दिल और दिमाग में नवीन स्फूर्ति पैदा होती है। नष्ट हुये जीवाणुओं की पुनर्रचना इससे बहुत जल्दी होती है और शरीर का एक नया ही कल्प हो जाता है। पांडु, प्रमेह और दमे में भी उत्तम लाभ करती है।

मात्रा और अनुपान—१ से २ रत्ती, सवेरे-शाम। भुना हुआ जीरा और मधु के साथ। क्षय में चौंसठप्रहरी पीपल और शहद, विशेषकर बकरी के दूध के साथ।

नोट—सभी पर्पटियों का आहार-विहार एकसा ही है, अतः रस पर्पटी में उल्लिखित खान-पान का पूरी सावधानी से ध्यान रखना चाहिये।

विशेष वक्तव्य—संग्रहणी की प्रबल अवस्था में जब शरीर बिल्कुल क्षीण हो गया हो उस समय पर्पटी का असर विशेष रूप से होता है। ऐसे तो रोगानुसार अन्य औषधियों के साथ भी पर्पटी का सेवन होता है, परन्तु विशेष रूप से केवल पर्पटी का प्रयोग करना हो तो नीचे लिखे मुताबिक करना उत्तम है ;—

अवस्थानुसार १ रत्ती से प्रारम्भ कर प्रति दिन १-१ रत्ती बढ़ाते हुये दश रत्ती तक रोग और रोगी का बलाबल देखकर देना चाहिये। रोग अच्छा होजाने तक वही मात्रा देता रहे। रोगमुक्त हो जाने पर प्रतिदिन १-१ रत्ती की मात्रा घटाते हुये प्रारम्भ की मात्रा तक आ जाने पर औषध खाना बन्द करा दे। सामान्यतः २१ दिन से ४५ दिन तक पर्पटी का प्रयोग किया जाता है। पथ्य में रोगानुसार दूध या माठा दही, पके मीठे बीजू आम आदि जितना हजम हो, देना चाहिये। इस तरह प्रयोग करने से जीर्ण और शक्तिहीन शरीर पुनः सबल, स्वस्थ और रक्त, मांस एवं बल, वीर्य से परिपूर्ण हो जाता है। शरीर की कांति और सुन्दरता बढ़ती है। परन्तु यह कल्प अच्छे अनुभवी वैद्य की देख-रेख में करना चाहिये। साधारण अवस्था में बिना वैद्य की सहायता से भी सेवन की जा सकती है।

# विविध

रस-रसायन के अतिरिक्त कुछ अन्यान्य औषधियां जो रस-रसायन के अनुपान मे तथा स्वतन्त्र प्रयोग में आती हैं वे निम्नलिखित हैं जिनकी कि विशुद्धता की पूर्ण गारण्टी है :—

| | |
|---|---|
| आंवले का मुरब्बा | गुलाब जल |
| आंवले का मुरब्बा बड़ी साइज | चन्द्रोदयावर्ति |
| ,, ,, बहुत बड़ी साइज | चौसठप्रहरी पीपल |
| उदुम्बरसार | जन्मघूंटी |
| गिलोय सत्व | पुराना गुड़ |
| गुलकन्द साधारण | ममीरे का सुरमा |
| गुलकन्द सर्वोत्तम | महाशंखद्राव, शंखद्राव |

# उपयोगी द्रव्य समूह

आयुर्वेदीय दवाओं के निर्माण मे नीचे लिखे द्रव्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वत्र बाजार मे इनका विशुद्ध रूप से मिलना कठिन है। इसलिये हम इन द्रव्यों का काफी स्टाक अपने यहाँ रखते हैं और वाजिब मूल्य पर ग्राहक-अनुग्राहकों को देते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| अम्बर (असली | केशर काश्मीरी | असली मधु |
| कस्तूरी नेपाली (असली) | गोरोचन (असली) | सर्वश्रेष्ठ हिमालय मधु |
| कस्तूरी भूटानी ,, | | |

# वैद्यनाथ जवाहरमोहरा

इसमें सुवर्ण, अम्बर, कस्तूरी, मोती, पन्ना, माणिक्य आदि बहुमूल्य वस्तुएँ डाली जाती हैं। यह वीर्यवर्द्धक, वाजीकरण, बुढ़ापानाशक, आयुवर्द्धक तथा शक्तिदायक है। यह हृदय को बल देने वाला उत्तम योग है। पुराने रोग जैसे—दमा, खाँसी, राजयक्ष्मा, कमजोरी, दिल की घबड़ाहट आदि में बहुत ही फायदेमन्द है। दिल-दिमाग और ताक़त के लिये मशहूर है। हम जोर देकर कह सकते हैं कि "वैद्यनाथ जवाहरमोहरा" वास्तव में जवाहरमोहरा है।

# वैद्यनाथ अतुलशक्तिदाता संन्यासी प्रयोग

इतिहास—कलाती पहाड़ी के रत्नगरी नाम के संन्यासी से यह प्रयोग प्रकट हुआ और एक ग्वाले के सेवन करने पर इसके जौहर मशहूर हुये। शोहरत सुनकर नवाब बहावलपुर के श्वसुर साहब ने संन्यासीजी से यह योग प्राप्त किया। इनसे पं० ठाकुरदत्तजी शर्मा को मिला और सर्वसाधारण में प्रचलित हुआ।

गुण तथा उपयोग—इसके सेवन से चेहरा लाल हो जाता है, वजन बढ़ता है, कमजोरी और नपुंसकता नष्ट होती है। यह जिगर और मेदे को ताकत देता है, भूख बढ़ाता है, हाजमा की ताकत बढ़ जाती है तथा खून की कमी, पांडु, हृदय रोग, कफ, खांसी, नजला आदि को नष्ट करता है।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध संखिया १ तोला, कपूर १॥ माशा को घृतकुमारी के रस में घोंटकर मिट्टी के कुंजे में बन्द करके ५ सेर कण्डों में फूंके। ठंडा होने पर १ तोला तपकिया हरताल, १॥ माशा कपूर मिलाकर तीसरी बार आमलासार गंधक १ तोला, कपूर १॥ माशा, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा में ऊपर की भांति घोंटकर आँच दे। इस क्रम से १६ बार फूंके। यही अतुलशक्तिदाता संन्यासी प्रयोग है।

सेवनविधि और पथ्य—आधी रत्ती दवा मक्खन या मलाई के साथ सुबह-शाम खाकर ऊपर से दूध, घी, बादाम, मिश्री आदि का सेवन करें। भोजन में अनार, सेब, अंगूर, मीठे और पौष्टिक फल, दाल, भात, घी, शक्कर, रोटी, तुरई तथा लौकी का साग खायें। गर्म, बादी चीजों तथा नमक, लाल मिर्च और मैथुन से परहेज करें।

---

नि० भा० वैद्यसम्मेलन के २७ वें अधिवेशन, नागपुर की ओर से हमारी औषधियों की श्रेष्ठता के लिये स्वर्णपदक के साथ जो प्रथम श्रेणी का प्रमाण-पत्र मिला है उसकी नकल—

संख्या २६

निखिल भारतवर्षीय २७ वां
वैद्य सम्मेलन, नागपुर
स्वागत समिती कार्यालय.

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

निखिल भारतवर्षीयं सप्तविंशतितमं वैद्यसम्मेलनं नागपुरम् ।

प्रदर्शनविभागः ।

## प्रमाणपत्रम् ।

श्रीमतां कलिकातानगरनिवासीनां श्रीवैद्यनाथआयुर्वेदभवनाध्यक्षाणां वैद्यशास्त्रीराजवैद्येत्यादिपदमण्डित पण्डित रामनारायण शर्माणः इत्येतेषां प्रदर्शनसमागतानि रसोपरस धातूपधातु भस्म गुटी चूर्णावलेहादि भेषजानि नितान्तं श्रेष्ठानि इत्यवधार्य तेभ्यः स्वर्ण-पदकेनसह प्रथम श्रेण्याः प्रमाणपत्रमेतत्सम्मानपूर्वकं प्रदीयते आशास्यते च विषयेऽस्मिन्नभिवृद्धिं कुर्वन्तु नितरामिमे इति—

| | |
|---|---|
| प्रदर्शनाध्यक्षः | गंगाधर विष्णु पुराणिक |
| वैद्यराज गङ्गाधर विष्णु पुराणिक पनवेल | प्रदर्शनाध्यक्षस्य |
| परीक्षकसमितिः | |
| १ भिषक्केसरी श्रीगोवर्धनशर्मा छांगाणी | लक्ष्मीकांतदामोदर पुराणिक |
| २ प्राणाचार्यः सुन्दरलाल शुक्लः | प्रदर्शनमन्त्रिणः |
| ३ गणेशशास्त्री जोशी आयुर्वेदाचार्यः | ता० १६–७–१९३८ ई० |

# आयुर्वेद के विशेषज्ञों की सम्मतियां

चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि प्राचीन संहिताओं के संशोधक, अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महासम्मेलन और विद्यापीठ के भूतपूर्व सभापति, आयुर्वेदोद्धारक श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य (बंबई) की सम्मति :—

श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद-भवन के अध्यक्ष पं० रामनारायण वैद्य को मैं १७-१८ वर्षों से जानता हूं। इनके श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में प्रस्तुत होने वाली औषधियों के नुस्खों को मैं जानता हूं एवं औषधालय भी ४-५ बार देखा है। मेरा जहां तक अनुभव है इनके यहां विश्वासपात्र दवाएँ बनती हैं। आयुर्वेद की उन्नति के लिये भी ये बहुत सचेष्ट हैं। जनता यहां की बनी दवाइयां विश्वास के साथ खरीदकर सेवन कर सकती है। मैं इस कार्यालय की दिनोंदिन उन्नति चाहता हूं।

मुंबई<br>ता० १३-२-४० } हस्ताक्षर—वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य

भूतपूर्व सभापति अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महासम्मेलन, सुपरिण्टेण्डेण्ट आयुर्वेदीय रसायनशाला काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्राणाचार्य, वैद्यरत्न, कविराज प्रतापसिंहजी रसायनाचार्य की सम्मति :—

"……मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि यह औषध-निर्माणशाला बिना किसी बाह्य आडम्बर के लाखों रुपयों की औषधियों का व्यापार करती है। साथ ही साथ आयुर्वेदीय साहित्य और अन्वेषण का कार्य भी करके आयुर्वेद की भित्ती को सुदृढ़ और सुखद बनाने का भरसक प्रयत्न कर रही है। आशा है देश की नामधारी फार्मेसियां भी इनके इस कार्य का अनुकरण करेंगी तो आयुर्वेद जगत् का शीघ्र ही स्थायी उपकार होगा।"

ता० २७-८-३६ } हस्ताक्षर—कविराज प्रतापसिंह

## श्री शिव शर्म्मा आयुर्वेदाचार्य, लाहौर भूतपूर्व सभापति अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महासम्मेलन की सम्मति :—

मैंने आज श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का निरीक्षण किया। आयुर्वेदीय औषधियाँ भी बनती देखीं। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि सम्पूर्ण औषधि-निर्माण बहुत स्वच्छ और प्रमाणिक द्रव्यों से सर्वथा शास्त्रोक्त रीति से होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस योग्यता, श्रद्धा और परोपकार के भाव से औषधियां बनती हैं, उससे वे अवश्य शीघ्र फलदायक होंगी। जनता और वैद्यसमाज दोनों ही ऐसे कार्यालय से लाभ उठा सकते हैं और आयुर्वेद का नाम भी उज्ज्वल रह सकता है।

विशेष बात इस संस्था की यह है कि इसकी आय का एक बड़ा भाग आयुर्वेद के प्रचारार्थ और परोपकारार्थ उदारता से व्यय किया जाता है, जिसके कई उदाहरण मेरे सामने हैं। मेरी इच्छा है कि आयुर्वेद की यथार्थता जनता में सिद्ध करने के लिये और आय का सदुपयोग होने के लिये श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद-भवन की औषधियों का सर्वत्र अधिकाधिक प्रचार हो।

ता० १६-१०-४० }                हस्ताक्षर—शिव शर्मा

## अ० भा० आयुर्वेद महामंडल के भूतपूर्व सभापति, आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका के भूतपूर्व यशस्वी सम्पादक, आयुर्वेद परीक्षाओं के गवर्नमेन्ट मान्य परीक्षक, आयुर्वेद-केशरी, महामान्य स्वर्गीय पण्डित किशोरीदत्तजी शास्त्री, कानपुर की सम्मति :—

आज मैं श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का वैभव, औषधि-चातुर्य, समयोपयोगिता और दर्शनीयता देखकर प्रसन्नतापूर्वक यह स्वीकार करता हूँ कि आयुर्वेद जगत् में यह कारखाना अद्वितीय है। इसके संचालक महोदय का सौजन्य और कार्यपटुता प्रशंसनीय है। आपको जिस प्रकार अपने व्यवसाय का ध्यान है, वैसे

ही आयुर्वेद, देश और जनता का भी ध्यान है और यह बात देश के सौभाग्य की है। वैद्य-बन्धु और जनता यहाँ की विश्वासी दवा खरीदकर आयुर्वेदोन्नति में सहायता और अपनी गुणग्राहकता का परिचय प्रदान करें।

ता० २६-६-२३ } हस्ताक्षर—वि.शोरीदत्त शास्त्री

## आयुर्वेदीय परीक्षाओं के परीक्षक, भूतपूर्व सभापति, अ० भा० आयुर्वेद महामण्डल, प्रिन्सिपल श्रीधन्वन्तरि आयुर्वेद महाविद्यालय, प्राणाचार्य, भिषग्केशरी, विद्यावाचस्पति श्री गोवर्धन शर्म्मा छांगाणी की सम्मति :—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद-भवन के सत्वाधिकारी वैद्यराज पं० रामनारायणजी को मैं वर्षों से जानता हूं। आप विद्वान् वैद्य हैं और सच्चे कार्यकर्त्ता हैं। आपकी दक्षता का ही प्रभाव है कि आपकी सब औषधियाँ यथा नाम तथा गुण हैं। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की एजेन्सियां भारत के भिन्न-भिन्न सभी भागों में खुल रही हैं। आप केवल अपना ही पेट भरने वाले नहीं हैं, अपितु आयुर्वेद के सच्चे सेवक भी हैं। प्रति वर्ष आयुर्वेद के उद्धारार्थ हजारों रुपये प्रदान करते हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय काशी को आयुर्वेदिक अन्वेषणार्थ आप १२००) रु० प्रति वर्ष देते हैं। इसी प्रकार और भी कई संस्थाओं को आपकी ओर से वार्षिक सहायता मिलती है। आपकी बनाई हुई औषधियां बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई हैं। इसी उपलक्ष में आपको अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद प्रदर्शनी ने नागपुर और जोधपुर में आपकी दवाओं की परीक्षा करके प्रथम श्रेणी के सर्टीफिकेट और स्वर्ण-पदक दिये हैं। मैंने खुद अनुभव करके देखा है कि श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद-भवन की दवाइयाँ यथार्थ हैं। इससे अधिक आपकी योग्यता के विषय में हम और क्या कह सकते हैं? मैं आपकी उत्तरोत्तर उन्नति चाहता हूं।

ता० १४-५-४० } हस्ताक्षर—श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी

**श्रीयुत् एम० एल० सर्राफ, प्रोफेसर रसायनशास्त्र, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी की सम्मति :—**

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की रसायनशाला का निरीक्षण कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। सबसे अधिक खुशी मुझे अध्यक्ष महोदय का झुकाव विज्ञान की तरफ देखकर हुई। ऋषियों के प्राचीन विज्ञान का वर्तमान विज्ञान द्वारा प्रयोग होने पर ही आयुर्वेद का भविष्य निर्भर करता है। इस विषय में उपरोक्त संस्था अपनी शक्ति भर प्रयत्न कर रही है। मैं चाहता हूँ कि जैसे इस कार्यालय के अध्यक्ष महोदय आयुर्वेदिक अन्वेषण (रिसर्च) के लिये स्कलरशिप प्रदान करते हैं, वैसे ही दूसरे आयुर्वेद के प्रेमीगण भी प्रदान करें। मैं श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन और इसके अध्यक्षों की हर प्रकार की सफलता चाहता हूँ।

ता० १२-६-४० } हस्ताक्षर—एम० एल० सर्राफ

**प्रत्यक्ष शरीर, सिद्धान्त निदान, आयुर्वेद संहिता आदि के लेखक महामहोपाध्याय कविराज स्व० श्री गणनाथसेन विद्यासागर, प्राणाचार्य, सरस्वती, एम० ए०, एल० एम० एस० की सम्मति :—**

आयुर्वेद के पुनर्जीवन के लिये श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, कलकत्ता के उद्योग प्रशंसनीय हैं। हमारी इस संस्था के साथ पूरी सहानुभूति है।

ता० ६-३-४० } हस्ताक्षर—गणनाथ सेन

**बिहार के प्रलयकारी भूकम्प में सहायता कार्य के लिये श्री राजेन्द्रप्रसादजी के सभापतित्व में जो बिहार केन्द्रीय सहायकसमिति बनी थी, उसके प्रधान मन्त्री बाबू अनुग्रह-नारायणसिंहजी एम. ए., बी. एल., एम. एल. ए. ने हमारी**

दवाओं के सम्बन्ध में ता० ३१-३-४६ को जो लिखा था उसका हिन्दी अनुवाद :—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, कलकत्ता के मालिक पं० रामनारायण शर्मा वैद्यराज को यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है कि इन्होंने भूकम्प-पीड़ित जनता के लिये अपने औषधालय में प्रस्तुत पेटेण्ट दवाइयाँ बिहार सेन्ट्रल रिलीफ कमेटी की शाखाओं के प्रबन्ध में बिहार के अनेक जिलों में वितरण कीं। ये औषधियां पीड़ित जनता के लिये बहुत लाभदायक सिद्ध हुई हैं। मैं इनके इस कार्य की बहुत प्रशंसा करता हूं तथा हम लोगों के प्रति इन्होंने जो सहायता प्रदान की है, उसके लिये धन्यवाद देता हूं।

हस्ताक्षर—अनुग्रहनारायणसिंह

# आयुर्वेद प्रदर्शनी पर सम्मतियाँ

## देशरत्न डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी की सम्मति :—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन ने कॉंग्रेस प्रदर्शनी में भारतीय औषधियों और आयुर्वेदिक रीति से चिकित्सा का प्रबन्ध किया। मैंने उसे देखा और सब प्रबन्ध को देखकर बहुत खुश हुआ। आयुर्वेद का पुनरुद्धार अत्यन्त आवश्यक है और इस प्रकार के प्रयत्न से उसमें बहुत लाभ होगा। मैं इस संस्था की सफलता चाहता हूं।

ता० २१-३-४० } हस्ताक्षर—राजेन्द्रप्रसाद

## डा० ए० लक्ष्मीपति, भूतपूर्व सभापति अ० भा० आयुर्वेद महामण्डल तथा वर्तमान संयोजक अ० भा० आयुर्वेद महामंडल की परामर्श समिति की सम्मति :—

अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ के तत्वावधान में आयोजित आयुर्वेदीय प्रदर्शिनी को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। इसके आयोजक श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, कलकत्ता ने इसे सर्वप्रिय और साथ-साथ वैज्ञानिक बनाने में काफी परिश्रम किया है।

ता० २०-३-४० } हस्ताक्षर—ए० लक्ष्मीपति, मद्रास

**अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग प्रदर्शिनी, रामगढ़ कांग्रेस के मंत्री बाबू लक्ष्मीनारायणजी की सम्मति—**

इस बार की खादी और ग्रामोद्योग प्रदर्शिनी मे जड़ी-बूटी और आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली और स्वास्थ्यकर जीवन का बड़ा सुन्दर प्रदर्शन हुआ। इस प्रबन्ध में पं० रामनारायणजी शर्मा अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का मुख्य हाथ था। प्रदर्शन की सफलता के लिये शर्माजी को दिल से बधाई देता हू और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे निरन्तर निष्काम जनसेवा में संलग्न रहें।

ता० २२-३-४० } हस्ताक्षर—लक्ष्मीनारायण

इन्हीं सम्मतियों से आपको मालूम हो जायगा कि वास्तव में श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन एक विश्वासी और सुव्यवस्थित आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान है, जहां से विश्वास के साथ हर रोग की दवा खरीदी जा सकती है और जो असली और विश्वासी आयुर्वेदीय दवाओं के लिये आज भारतवर्ष भर में विख्यात हो रहा है।

**परिचय** श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन को लोग आज हिन्दुस्तान के कोने-कोने में जान गये हैं। आज हिन्दुस्तान का कौनसा सूबा, कौनसी रियासत, कौनसे शहर और कसबा अथवा कौनसा गाँव है जहाँ के लोगों ने हिन्दुस्तान के इस सबसे बड़े देशी दवाखाने की दवा के दिव्य गुण से लाभ नहीं उठाया हो? इस भवन की औषधियों के गुण की चर्चा आज भारत के घर-घर में हो रही है।

आज से २५ साल पहले हिन्दुओं के पवित्र तीर्थस्थान वैद्यनाथ धाम के छोटे से कसबे में बहुत थोड़ी पूंजी से पं० रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्री ने इस कारखाने को खोलकर भारत की रोग-पीड़ित जनता की सेवा करने का जो संकल्प किया था वह आज सफल हो रहा है। हम इस कारखाने के २५ वर्ष के इतिहास को संक्षेप में निम्नांकित चार बातों में स्पष्ट देख सकते हैं :—

१—इस लड़ाई की संकट घड़ी में गत वर्ष (सं० २००२) हमारी दवाओं की थोक बिक्री १५०००००) रु० से ऊपर की हुई तथा वर्तमान वर्ष में इससे और बहुत ज्यादे रु० की बिक्री होने की सम्भावना है।

२—ग्राहकों की सुविधा के लिये भारत के ५ मुख्य नगरों—कलकत्ता, पटना, झांसी, नागपुर और ब्यावर में निर्माण तथा वितरण क्षेत्र खोलने पड़े।

३—भारत के प्रसिद्ध से प्रसिद्ध वैद्यराज हमारे कारखाने और दवाओं की प्रशंसा ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसकी दवाओं का व्यवहार खुद तथा अपने रोगियों पर कर रहे हैं।

४—सरकार के स्वास्थ्य-विभाग के अधिकारी भी रोगग्रस्त क्षेत्रों के पीड़ित प्राणियों को सहायता में हमारे सहयोग की मांग करते हैं।

**विशुद्धता की गारंटी** दवाओं की विशुद्धता और प्रबन्ध की उत्तमता की रक्षा के लिये कारखाने का सारा काम मालिक लोग खुद अपनी निगरानी में कराते हैं। दवा के निर्माण-कार्य से लेकर प्रचार-कार्य तक सभी

काम मालिकों की निजी निगरानी में होने के कारण किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होने पाती—शुद्ध दवा बनती है और ग्राहकों के साथ उत्तम व्यवहार होता है।

औषधि-निर्माण के काम में यहां सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है। असली जड़ी-बूटियों की पहचान का काम भारतवर्ष में इस विषय के एकमात्र जानकार "संदिग्ध बनौषधिनिर्णयशास्त्र" के निर्माता, आयुर्वेद महामहोपाध्याय, रसायन-शास्त्री श्री भागीरथजी स्वामी स्वयं करते हैं। अन्य मूल द्रव्यों की समुचित जांच-पड़ताल के ख्याल से तथा शुद्ध दवा के निर्माण के ख्याल से ही प्रत्येक निर्माण केन्द्र में अनुभवशील योग्य वैद्य रक्खे गये हैं। पेटेण्ट दवाओं का निर्माण-कार्य भी भारत सरकार द्वारा सनद प्राप्त कुशल रसायन-शास्त्रियों (Chemists) की देख-भाल में होता है। लेकिन हमारी दवाओं की विशुद्धता की सबसे बड़ी गारंटी तो है हमारे कारखाने की दवा का घर-घर प्रचार और तज्जनित इसकी बेहद मांग। इस बढ़ती हुई मांग को देखकर ग्राहकों की सुविधा के लिये यद्यपि हमने पाँच-पांच निर्माण और वितरण केन्द्र खोल दिये हैं, फिर भी दिन-प्रतिदिन मांग इतनी बढ़ रही है कि इतने से हमें सन्तोष नहीं है कि हम अपने ग्राहकों-अनुग्राहकों की उचित सेवा करने में समर्थ हो रहे हैं। हालांकि हमने हर केन्द्र में कार्यों की सुगमता और उत्तम व्यवस्था के लिये हर काम का अलग-अलग विभाग कर दिया है। औषधि-निर्माण-विभाग के अलावा प्रधान प्रबन्ध-विभाग, एजेन्सी-विभाग, प्रेस और विज्ञापन-विभाग आदि विभाग बना दिये गये हैं और हर विभाग को एक योग्य मैनेजर के जिम्मे कर दिया गया है। इन विभागों पर प्रति मास प्रायः १३ हजार रु० कर्मचारियों के वेतन चुकाने में खर्च होते हैं। हर विभाग के लिये अलग-अलग मैनेजरों के रहने पर भी समस्त कारखाने का प्रबन्ध एक जनरल मैनेजर के हवाले है।

## धर्मार्थ औषधालय और स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के अध्यक्ष पं० रामनारायणजी शर्मा ने अपने गांव कांसली (खेतड़ी राज्यान्तर्गत) में बहुत दिनों से एक दातव्य औषधालय खोल रक्खा है, जहां पास-पड़ोस के गाँव के हजारों ग्रामीण वहां से मुफ्त दवाएँ लेकर लाभ उठा रहे हैं। १४-१५ कोस के इर्द-गिर्द में कोई ऐसा दातव्य आयुर्वेदीय

औषधालय न रहने के कारण पहले ग्रामीण जनता को बड़ा कष्ट था। इसके अतिरिक्त कानपुर, पटना और झाँसी में धर्मार्थ औषधालय स्थापित किये हैं। इन दातव्य औषधालयों में रोग का निदान और दवा मुफ्त दी जाती है। हमारा यह विभाग रोगी को नीरोग करके ही निश्चिन्त नहीं हो जाता, बल्कि वह स्वास्थ्य-रक्षा का प्रचार भी करता है, ताकि रोगमुक्त फिर से रोगी न बनें। इस विभाग के खोलने का उद्देश्य केवल इतना ही नहीं है। हमारा उद्देश्य बड़ा महान् है। हमारा प्रधान लक्ष्य तो यह है कि ऐसा उद्योग किया जाय जिससे स्वस्थ मनुष्य कभी रोगी न बनें। इसलिये हम रोगियों की परीक्षा और व्यवस्था करने वाले आयुर्वेदाचार्य को जितना वेतन देते हैं उतना ही वेतन स्वास्थ्य-रक्षा विशेषज्ञ वैद्यराज को भी देते हैं, बल्कि स्वास्थ्य-रक्षा को विशेष महत्व देते हैं। ऐसे तो हिन्दुस्तान में आयुर्वेदीय और डाक्टरी धर्मार्थ औषधालय और अस्पताल हजारों की संख्या में हैं लेकिन रोग निवारण के साथ-साथ इन्सान की तन्दुरुस्ती बराबर बनी रहे, लोग रोगी न बनें, इसका व्यापक और उत्तम प्रबन्ध हमारे भवन ने ही आरम्भ किया है।

आयुर्वेद के मूल सिद्धान्त "नात्मार्थं न च कामार्थमथभूतदयां प्रति" का असल उद्देश्य भी यही था कि आयुर्वेद का निर्माण निजी उन्नति या कामनापूर्ति के लिये नहीं, बल्कि प्राणीमात्र पर दया करने के लिये हुआ है। हमारे स्वास्थ्य-विभाग की तरह ही अगर सभी धर्मार्थ औषधालय स्वास्थ्य-रक्षा का प्रबन्ध करें तो रोगी की जड़ खोदकर लोगों की अधिक भलाई कर सकते हैं। हमारा प्रधान उद्देश्य यही होना चाहिये कि रोग पैदा ही न हों। सर्वसाधारण को तन्दुरुस्ती के नियम अच्छी तरह सिखलाये जाएँ, ताकि वे रोग के फंदे से बचे रहें। इस आयुर्वेदीय स्वास्थ्य-रक्षा-विधि का देशव्यापी प्रचार करने के ख्याल से एवं आयुर्वेदीय औषधियों को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करने के लिये हमारे यहां से "सचित्र आयुर्वेद" नाम का मासिक-पत्र भी शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। श्री श्री बाबा वैद्यनाथ की कृपा और आप लोगों के सहयोग से श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की उन्नति और वृद्धि के साथ साथ हमारा सेवा-क्षेत्र भी बढ़ता ही जा रहा है। इससे स्वार्थभावना कम होकर परोपकार की भावना बढ़े—यही परमात्मा से हमारी प्रार्थना है।

---

चिम्मनसिंह लोढ़ा के प्रबन्ध से श्री महावीर प्रेस, ब्यावर में मुद्रित।

चिम्मनसिंह लोढ़ा के प्रबन्ध से "श्री महावीर छापाखाना, ब्यावर" में मुद्रित।